

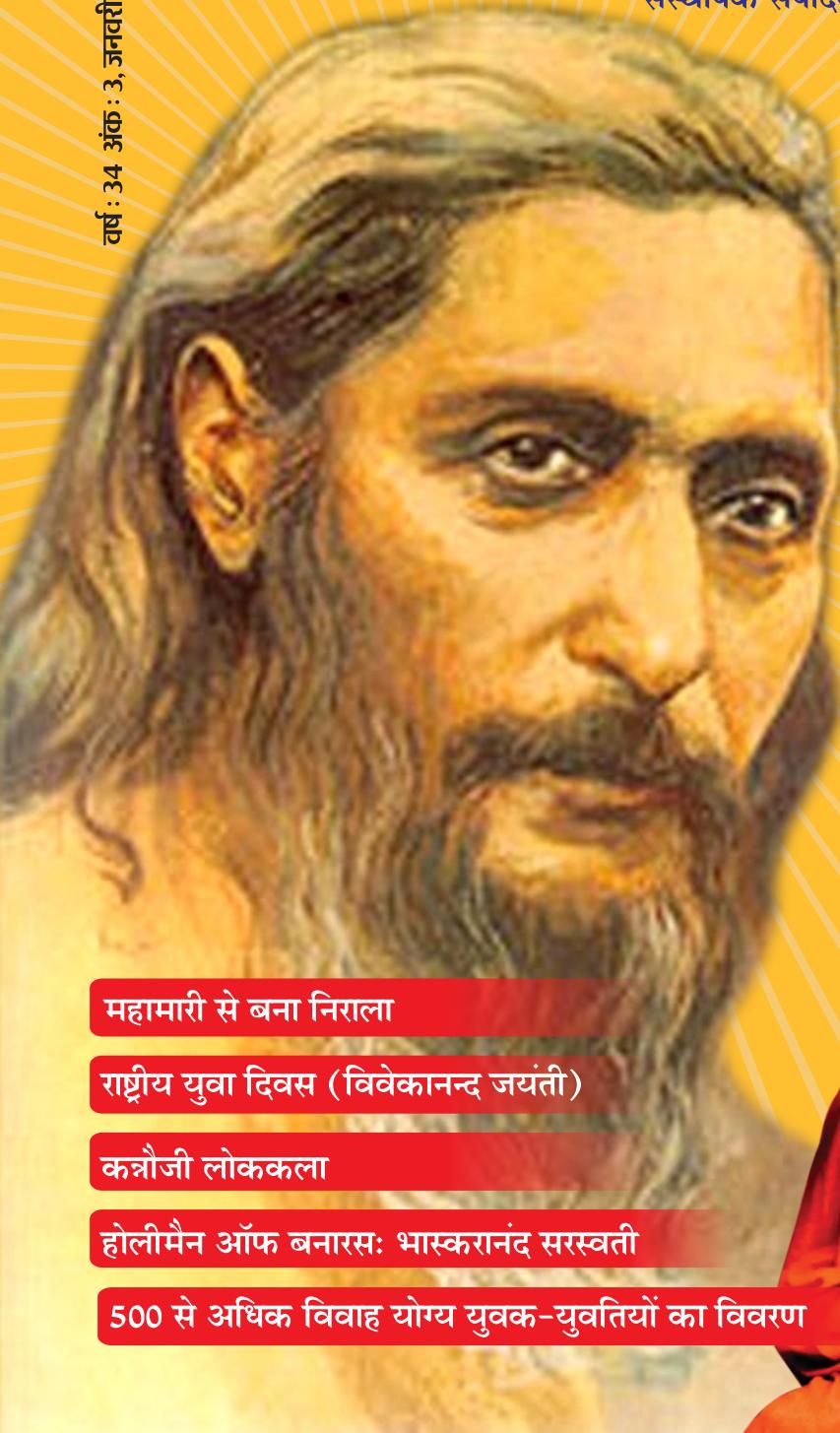
सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

₹40/-

कान्यकृष्ण मंच

संस्थापक संपादक: कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

वर्ष: 34 अंक: 3, जनपरी-मार्च 2021



महामारी से बना निराला

राष्ट्रीय युवा दिवस (विवेकानन्द जयंती)

कन्नौजी लोककला

होलीमैन आँफ बनारस: भास्करानंद सरस्वती

500 से अधिक विवाह योग्य युवक-युवतियों का विवरण

SKYLINE SCHOOL

A DAY BOARDING PLAY SCHOOL

A Home away from Home

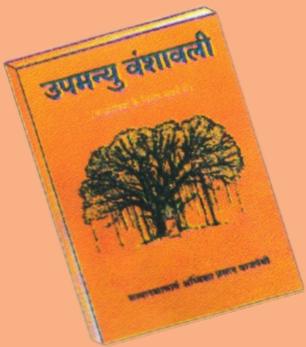


- Play Group to Nursery Grade
- English Medium
- Door to Door Pick and Drop
- Well Trained Teachers
- Swimming Pool, Play Area, Rides

NS-24, Block-G, Delta 1st Greater Noida
Phone: 0120-2321746, Mobile: 8130557885

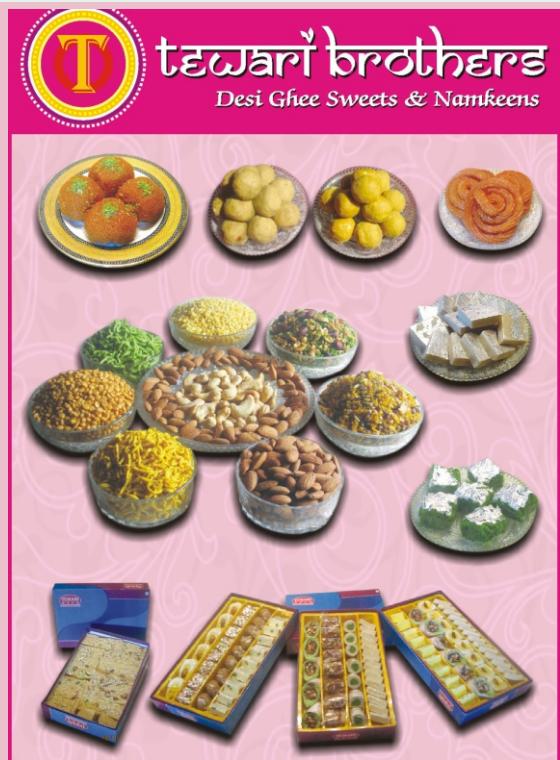
भारतमित्र BHARATMITRA

Premier Hindi Daily



L.S. Publication Pvt. Ltd.

32, Metcalfe Street, Kolkata-700013
Tel.: 22361572, 2119429, Mob.: 9830012330
Telefax: 033-22151533
Email: bharatmitra1@yahoo.com

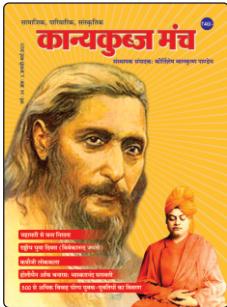


862, Chandni Chowk, Delhi-110006 73, M.M. Market, Connaught Circus,
Tel.: 23918326, 23927690, 23956846 New Delhi-110001
Fax : +91-11-23947743 Tel.: 23413313, 23411764, 23411765

Branches :

• KOLKATA • MUMBAI • DELHI • BANGALORE • HYDERABAD • KANPUR
E-mail : ravitewari6@gmail.com visit us at : www.tewaribrother.com

‘आ नो भद्रा क्रत्वो यन्तु विश्वतः’ ऋग्वेद 1-89-1



संस्थापक संपादक कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय

●
प्रबन्ध संपादक
विष्णु कुमार पाण्डेय
3/19 सेक्टर-जे, जानकीपुरम लखनऊ-21
9450362385

●
संपादक
आशुतोष पाण्डेय
264 सेक्टर 3, फरीदाबाद 121004 हरियाणा
9312020932

●
प्रतिनिधि
रविकांत तिवारी (97-176-76003)
तिवारी ब्रदर्स, चांदगी चौक दिल्ली-6
प्रताप शुक्ल (लखनऊ) 9335912667
अजय (कानपुर) 8953882491
संदीप (कानपुर) 7054098204
मनीषा (नोएडा) 9310111069

●
विधि सलाहकार
सांकृत अजीत शुक्ल, एडवोकेट
9415474584
सहयोग राशि:-

| | |
|---|----------------|
| संरक्षक..... | रूपये 11000.00 |
| विशिष्ट..... | रूपये 5100.00 |
| आजीवन..... | रूपये 2100.00 |
| पत्रिका प्रसार सहयोग (2 वर्ष हेतु)..... | रूपये 300.00 |
| (5 वर्ष हेतु)..... | रूपये 700.00 |

पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है स्पीड पोस्ट/ कोरियर से पत्रिका मंगाने हेतु तथा विदेशों के लिए वास्तविक डाक व्यय अतिरिक्त देना होगा।
पत्रिका में प्रकाशित विचारों से प्रकाशक व संपादक की सहमति आवश्यक नहीं। न्यायालयिक मामलों हेतु कानपुर न्यायालय क्षेत्र ही मान्य होगा।

सामाजिक, पारिवारिक, सांस्कृतिक

कान्यकुञ्ज मंच

वर्ष : 34 अंक : 3, जनवरी-मार्च 2021

इस अंक में विशेष

| | |
|--------------------------------------|-------|
| संपादकीय | 3 |
| अपनी बात | 5 |
| मेरी दृष्टि में | 7 |
| लोकगीत और स्त्रियां | 8 |
| महामारी से बना निराला | 9 |
| रामकाज लगि तब अवतारा | 11 |
| राष्ट्रीय युवा दिवस | 12 |
| सारे देश का ब्राह्मणीकरण हो | 13 |
| कन्नौजी लोक-कला | 14 |
| होलीमैन औफ बनारसः स्वामी भास्करानन्द | 19 |
| ऐसे थे वे लोग | 21 |
| भारतीय सेना में ब्राह्मण रेजिमेंट | 23 |
| वाजपेय यज्ञ | 25 |
| ब्राह्मणों के गोत्रादि नवतत्व | 26 |
| हमारा संगठन सुदृढ़ हो | 27 |
| परिवार और बच्चे | 28 |
| महादेव योगी भी हैं, गृहस्थ भी | 29 |
| परिचय | 31-33 |
| वैवाहिक विवरण - युवा वर्ग | 37 |
| युवती वर्ग | 43 |
| सामाजिक मंच | 48 |
| श्रद्धांजलि | 50 |

एवं अन्य स्थाई स्तम्भ
इस अंक के साथ वर्ष 33, अंक 4 भी समाहित है।

पत्रिका मंगाने हेतु तथा समस्त पत्र व्यवहार के लिए

प्रबन्ध संपादक

कान्यकुञ्ज मंच कार्यालय

20बी, किंदवई नगर, कानपुर-208011
मो. 9450362385 (समय: सायं 7-9 तक)

ईमेल: kkmanch@gmail.com
www.kanyakubjmanch.com

हमारे संक्षक

कानपुर : पं. प्रेम नारायण तिवारी, तिवारी ब्रदर्स, पं. लक्ष्मी नारायण शुक्ल, पं. प्रेम कुमार पाण्डेय, पं. शरद मिश्र, डॉ वाई एन शुक्ल, श्रीमती सरिता-अनूप द्विवेदी, पं. प्रेम नारायण मिश्र, पं. संजीव दीक्षित, पं. राम प्रकाश मिश्र, श्रीमती मधु-सौरभ अवस्थी।

लखनऊ : पं. अमरनाथ मिश्र, पं. सर्वेश वाजपेयी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, पं. त्रिवेणी प्रसाद दुबे। **प्रयागराज :** पं. विजय कुमार तिवारी। **कन्नौज :** पं. गोपालजी मिश्र। **वाराणसी :** पं. देव नारायण पाण्डेय। **गाजियाबाद :** पं. वी एन अग्निहोत्री। **नोएडा :** पं. रविन्द्र शेखर शुक्ल, कैटन संजीव वाजपेयी, पं. प्रशांत तिवारी। **दिल्ली :** पं. रामकृष्ण त्रिवेदी, पं. प्रकाश तिवारी, पं. सतीश चंद्र मिश्र, श्रीमती शोभा मिश्र। **मुम्बई :** पं. ब्रजेन्द्र कुमार मिश्र। **हैदराबाद :** डॉ. विजय दीक्षित, अपोलो हॉस्पिटल। **फरीदाबाद :** डॉ पारस नाथ दुबे, डॉ देव राज चौबे, पं. जगदीश चंद्र द्विवेदी। **कोलकाता :** पं. राजेन्द्र नारायण वाजपेयी, पं. लक्ष्मीकांत तिवारी, पं. ऋषि शंकर पाण्डेय, पं. अश्विनी कुमार अवस्थी, पं. रामकृष्ण त्रिवेदी (आईपीएस)। **पुरुलिया :** पं. महादेव मिश्र। **अहमदाबाद :** पं. ओमप्रकाश दीक्षित। **छत्तीसगढ़ :** पं. के एस शुक्ल। **तमिलनाडु :** श्रीमती लक्ष्मी प्रभा। **विदेश :** पं. वीरेंद्र कुमार तिवारी (यूके)।

हमारे विशिष्ट

कानपुर : पं. आर एस मिश्र, पं. उमेश कुमार पाण्डेय, पं. ओम प्रकाश मिश्र, पं. कृष्णस्वरूप मिश्र (राजा), पं. मंजुल मिश्र, वैद्य राजेश कुमार दीक्षित (एडवोकेट), प्रो सुरेंद्र कुमार त्रिपाठी, पं. आदित्य कुमार शुक्ल, पं. ब्रजेश अवस्थी, पं. प्रभात मिश्र, पं. कमलेश कुमार शुक्ल (मुचकुंद)। **लखनऊ :** पं. श्रीकृष्ण तिवारी, सांकृत प्रताप शुक्ल, पं. कृष्ण कुमार शुक्ल, डॉ विनोद बिहारी दीक्षित, पं. दिनेश चंद्र मिश्र, पं. प्रदीप शुक्ल, पं. पंकज तिवारी, पं. अजेय शंकर तिवारी, डॉ के के त्रिपाठी, कर्नल पं. धर्मदेव तिवारी, डॉ मृदुला मिश्रा, पं. योगेश चंद्र मिश्र, पं. सुनील कुमार शुक्ल, डॉ मंजू शुक्ला, पं. जी पी द्विवेदी, पं. कृष्ण कुमार मिश्र, पं. देवेंद्र नाथ मिश्र, पं. कमल वाजपेयी, पं. देवानन्द वाजपेयी, पं. विनीत वाजपेयी, पं. गिरीश चंद्र शुक्ल, डॉ गणेश चन्द्र मिश्र, पं. जय शंकर द्विवेदी, पं. राजेश कुमार मिश्र, पं. दीपक कुमार मिश्र। **प्रयागराज :** श्रीमती सुधा अवस्थी (एडवोकेट)। **गाजियाबाद :** पं. श्याम वाजपेयी, पं. निरंजन चन्द्र मिश्र। **बेरेली :** पं. एस पी पाण्डेय। **झांसी :** पं. विष्णु शुक्ल। **नोएडा :** पं. शरद त्रिवेदी। **दिल्ली :** वैद्य अशोक कुमार मिश्र, पं. रामेश्वर दयाल दीक्षित, पं. विक्रम तिवारी, डॉ रघुनंदन प्रसाद तिवारी, पं. विनोद त्रिपाठी, पं. सलिल दीक्षित, डॉ महादेव प्रसाद पाठक, पं. रामदास तिवारी, पं. रविशंकर तिवारी, पं. अनुराग मिश्र, पं. अमरेंद्र तिवारी, पं. विनोद कुमार अग्निहोत्री, श्रीमती मधु-पवन शुक्ला। **कोलकाता :** पं. हरीश मिश्र, पं. गणेश शंकर तिवारी, पं. कुलदीप दीक्षित, पं. सुशील कुमार शुक्ल, पं. शिव किशोर मिश्र, पं. मुकुतेश्वर तिवारी, डॉ हरि शंकर पाठक। **सतना :** पं. उमेश कुमार त्रिपाठी। **भोपाल :** पं. कैलाश नाथ मिश्र। **होशंगाबाद :** डॉ विभावसु दुबे।, **हैदराबाद :** डॉ. रामकुमार तिवारी। **फरीदाबाद :** पं. राजेश द्विवेदी, पं. कृष्णबिहारी दुबे, पं. अंजनी कुमार दुबे, डॉ सुरेश पचौरी। **विदेश :** पं. सिद्धार्थ मिश्र (कैलिफोर्निया)

**सुवर्ण पुष्पितां पृथ्वी, विचिन्वन्ति स्थयो नरः।
सुरश्च कृत विद्यश्च, यस्य जानाति सेवितुम्॥**

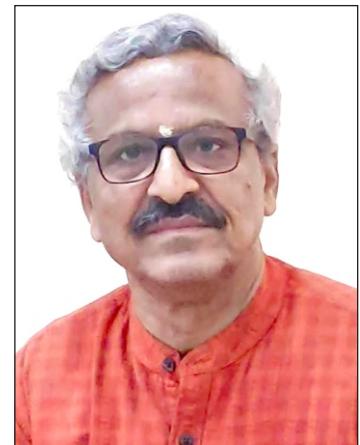
यह पथ्वी सुवर्ण के फूलों से लदी है, परन्तु इन फूलों
को के ही तोड़ पाते हैं, जो शूर-विद्वान-राजनीतिज्ञ हीते हैं।

-शुभ कामनाओं सहित -

त्रिवेदी एण्ड कम्पनी

पोस्ट बॉक्स नं. 1411, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006
फोन-23965712, 23973045

समाजोन्मुख हो युवाशक्ति की दिशा



युवा किसी भी समाज या राष्ट्र के उपादान होते हैं। लगभग एक दशक से जनरांग्या आधार पर भारत एक युवा देश है। यहां है कि यह बूढ़ा भी होगा। इस अंतराल में सजगता की जरूरत है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि युवा मन विद्रोही भी होता है। नयी उभरती युवा शक्ति, जो तरह-तरह के परम्परागत प्रभावों से अपने को मुक्त करते हुए आज की दुनिया-समाज को देखने-समझने की और उसमें अपनी भूमिका निभाने को उत्सुक है, एक निश्चिय सोच-दिशा-विचार के प्रति उसमें आग्रह नहीं है। एक ऐसा आग्रह जिसमें वह अपने कैरियर के प्रति तो सजग है, भविष्य के प्रति नहीं। कैरियर स्व-जीवन की सीमा में बद्ध रहता है, भविष्य में जीवन के बाद भी जीवन की परिकल्पना है। युवाओं की इस सोच-दिशा में, जो आज का अभिभावक वर्ग है उसकी भी भूमिका है। कहीं न कहीं वह अपनी इस भूमिका में स्वयं को ठगा हुआ अनुग्रह करने को अग्रिमता है।

नई पीढ़ी के अर्थों में कैरियर अर्थात् बाजारोन्मुख वैश्विक अर्थव्यवस्था का शक्तिमान बनना है। और शक्तिमान बनने की साथ में चाहिए, अनुशासन, नैतिक जीवन-मूल्य आदि बाधक बनने लगते हैं। उच्चल भविष्य की परिकल्पना कैरियर के जाल में बिला गयी है। पूँजीवादी सोच किन्हीं नैतिक या मानवीय मूल्यों द्वारा संचालित नहीं होती। वह इन मूल्यों को रौटी हुई अपने स्वार्थ सिद्ध करती है। परस्पर सहयोग की भावना से वह उसी हृद तक प्रेरित होगी, जिस हृद तक उसे अपनी स्वार्थसिद्धि में सहायता मिल सकती है। अर्थोन्मुख सोच प्रतिभा के साथ अनावार करती है। मात्र अर्थ को केंद्र में रखकर मानव-यत्र बनाने वाला कैरियर आर्द्ध नागरिक, आर्द्ध परिवार, आर्द्ध समाज की संरचना में योगदान दे सके, कहना मुश्किल है। बल्कि आक्रोश, कुंठ, तनाव, अवसाद जैसी बीमारियों से धिरी युवाओं की एक समानांतर फौज भी तैयार हो रही है। दुनिया को बर्बाद की ओर जाने से रोकने के लिए एक आदर्शोन्मुख यथार्थवाद चाहिए। जिसके बीज अंकुरित होते हैं घर के

आवनात्क माहौल में, परिवार के सुरक्षा-कवच में, विकासोन्मुख शिक्षापद्धति में और सामाजिकता-सहकारिता-समता में।

आज की सामाजिक संरचना में सम्पन्नता बेशक हो, आदर्शवादिता छींजती जा रही है। सुरक्षा, अभ्यास, शारि, समान अवसर, सम्वेदना, सहभागिता आदि आर्द्ध समाज के तत्व हैं। इनकी पुनर्स्थापना युवाशक्ति के बिना सम्भव नहीं है। इस दिशा में घर-परिवार, शिक्षण-संस्थानों के साथ सामाजिक संगठनों की भी खासी भूमिका हो सकती है। उन्हें भावनात्मक रूप से साथ लेकर चलना होगा। ‘बीमार की बात सुने बगैर रोग-निदान सम्भव नहीं’। हमें अपने विचार थोपने से पहले उनकी भावनाएं जाननी चाहिए। समस्या तब आती है जब लक्ष्य भी हम निर्धारित करते हैं और मार्ग भी हम ही बताते हैं। हमें तो सिर्फ लक्ष्य प्राप्ति में आने वाली सुगमताओं और विषमताओं का निर्देश देने तक सीमित होना चाहिए।

सामाजिक संगठन बड़े-बड़े आयोजनों-आडम्बरों से परहेज करते हुए युवाओं-महिलाओं की छोटी-छोटी बैठक-गोष्ठियां आयोजित करते। उन्हें पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की उपयोगिता बताते हुए संवाद करते। मूल को पकड़े हुए नए पुष्प पल्लवित करने की जिम्मेदारी सौंपे। चारित्रिक उत्थान के लिए प्रेरित करते। युवाओं को सदेनरील बनाने के प्रयास करते। संसार दिग्भागित करता है, साहित्य का अध्ययन व अनुशीलन विपरीत विचारधाराओं के बीच महत्वपूर्ण बिंदु खोजने का मार्ग प्रशस्त करता है। हमारे प्रयासों में शुद्धता, संकल्पशीलता और दृढ़ता होनी तो कुछ भी असम्भव नहीं...

उम्मीदोंका पाउडर

स्मरणीय तिथियां

- 12 जनवरी' 21 मंगलवार विवेकानंद
जयंती/राष्ट्रीय युवा दिवस
- 13 जनवरी' 21 बुधवार लोहिड़ी पर्व
(पंजाब)
- 14 जनवरी' 21 गुरुवार मकर संक्रान्ति
- 15 जनवरी' 21 शुक्रवार माघ बिहू
- 17 जनवरी' 21 रविवार द्वितीय पुण्यतिथि
आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय
- 20 जनवरी' 21 बुधवार गुरु गोविंदसिंह
जयंती
- 26 जनवरी' 21 मंगलवार गणतंत्र दिवस
- 28 जनवरी' 21 गुरुवार पौष पूर्णिमा
- 31 जनवरी' 21 रविवार संकष्टि चतुर्थी
- 11 फरवरी' 21 गुरुवार मौनी अमावस्या
- 16 फरवरी' 21 मंगलवार वसन्त
पंचमी/निराला जयंती
- 27 फरवरी' 21 शनिवार माघ पूर्णिमा/रविदास
जयंती
- 8 मार्च' 21 सोमवार गुरु रामदास
जयंती/दयानंद सरस्वती
जयंती
- 11 मार्च' 21 गुरुवार महाशिवरात्रि
- 15 मार्च' 21 सोमवार फुलेरा द्वीज
- 21 मार्च' 21 रविवार होलाष्टक प्रारम्भ
- 28 मार्च' 21 रविवार होलिका दहन/फाल्गुन
पूर्णिमा
- 29 मार्च' 21 सोमवार धुलहैंडी
- 30 मार्च' 21 मंगलवार भातृ द्वितीया

राष्ट्रीय युवा दिवस (12 जनवरी)

विवेकानंद और युवा

स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि भौतिक उत्त्रति तथा प्रगति अवश्य ही वांछनीय है, परंतु देश जिस अतीत से भविष्य की ओर अग्रसर हो रहा है, उस अतीत को अस्वीकार करना निश्चय ही निर्बुद्धिता का द्योतक है। अतीत की नींव पर ही राष्ट्र का निर्माण करना होगा। युवा वर्ग में यदि अपने विगत इतिहास के प्रति कोई चेतना न हो, तो उनकी दशा प्रवाह में पड़े एक लंगरहीन नाव के समान होगी। ऐसी नाव कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचती। इस महत्वपूर्ण बात को सदैव स्मरण रखना होगा।

स्वामीजी ने इसी बात पर सर्वाधिक बल दिया था। देश की शाश्वत परंपरा तथा आदर्शों के प्रति सचेत न होने पर विश्रृंखलापूर्ण समृद्धि आएगी और संभव है कि अंततः वह राष्ट्र को प्रगति के स्थान पर अधोगति की ओर ही ले जाए।

'उड़ा मेरे शेरो, इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, स्वच्छंदं जीव हो, धन्य हो, सनातन हो, तुम तत्व नहीं हो, न ही शरीर हो, तत्व तुम्हारा सेवक है तुम तत्व के सेवक नहीं हो।'

'हमारा कर्तव्य है कि हम हर किसी को उसका उच्चतम आदर्श जीवन जीने के संघर्ष में प्रोत्साहित करें, और साथ ही साथ उस आदर्श को सत्य के जितना निकट हो सके, लाने का प्रयास करें।'

अगर धन दूसरों की भलाई करने में मदद करे, तो इसका कुछ मूल्य है, अन्यथा, ये सिर्फ बुराई का एक ढेह है, और इससे जितना जल्दी छूटकारा मिल जाये उतना बेहतर है।'

'तुम्हे अन्दर से बाहर की तरफ विकसित होना है। कोई तुम्हे पढ़ा नहीं सकता, कोई तुम्हे आध्यात्मिक नहीं बना सकता। तुम्हारी आत्मा के अलावा कोई और गुरु नहीं है।'

'भला हम भगवान को खोजने कहां जा सकते हैं अगर उसे अपने हृदय और हर एक जीवित प्राणी में नहीं देख सकते।'

'एक विचार लो। उस विचार को अपना जीवन बना लो - उसके बारे में सोचो उसके सपने देखो, उस विचार को जियो। अपने मस्तिष्क, मांसपेशियों, नसों, शरीर के हर हिस्से को उस विचार में डूब जाने दो, और बाकी सभी विचार को किनारे रख दो। यही सफल होने का तरीका है।'

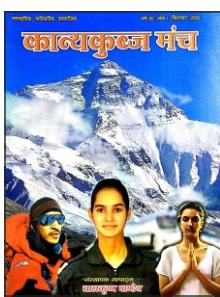
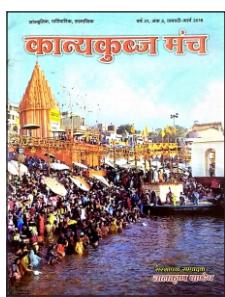
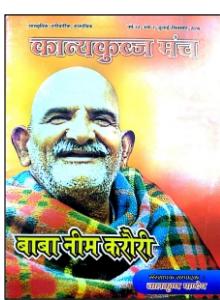
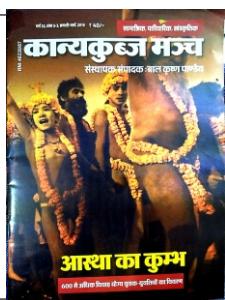
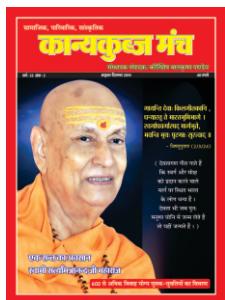
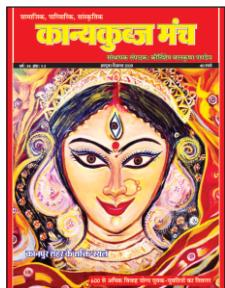
स्वामीजी का ध्यान एक ऐसे व्यक्ति के समग्र विकास पर था, जिसमें मनुष्य निर्माण राष्ट्र निर्माण के बराबर था और इसमें व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक भलाई शामिल थी। उसके लिए शारीरिक शक्ति प्रबल थी। उन्होंने सलाह दी कि 'मजबूत बनो, मेरे युवा दोस्तों... गीता के अध्ययन से, फुटबॉल के माध्यम से आप स्वर्ग के करीब होंगे। ये साहसिक शब्द हैं, लेकिन मुझे तुमसे कहना है, क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता हूं। इस प्रकार हमें अपनी आवश्यकताओं के लिए इन्हें लागू करना होगा। □

**उच्च कोटि के किराना, मेवा, खड़े व पिसे मसाले,
जड़ी-बूटी के थोक व फुटकर विक्रेता**

लाला राम चन्द गुप्ता एण्ड सन्स

दुकान नं. 141-144, कैनाल पटरी, एक्सप्रेस रोड (6 नंबर कार पार्किंग के सामने) कानपुर
पर्चा लिखवाने वास्ते: 7510000300/9621265697
पर्चे की जानकारी वास्ते फोन नंबर 0512-2364444

अपनी बात



कान्यकुञ्ज मंच

- ★ समाज व्यक्तियों के समुच्चय से नहीं, व्यक्तियों के सम्बन्ध से बनता है।
- ★ जॉन स्टुअर्ट मिल ने कहा था कि 'एक आस्थावान व्यक्ति की शक्ति उन हजारों लोगों से ज्यादा हो सकती है, जिनके केवल स्वार्थ हैं, निजी स्वार्थ, और जिनका सामूहिक हित से कोई लेना-देना नहीं है। आज ऐसे आस्थावान लोग भले ही अल्पमत में हों, लेकिन वे समाज में परिवर्तन लाने का दम रखते हैं।'
- ★ हम अतीतजीवी नहीं हैं। लेकिन ये जानते हैं कोई भी इमारत बगैर मजबूत नींव के खड़ी नहीं रह सकती।
- ★ यथार्थवाद का जितना सम्बन्ध वर्तमान से है, उतना ही अतीत और भविष्य से भी है। अतीत यदि वर्तमान के संदर्भ के रूप में मौजूद रहता है, तो भविष्य उस लक्ष्य के रूप में जहां वर्तमान को पहुँचना है। यदि यह लक्ष्य सामने नहीं है, तो वर्तमान को बदलने की प्रेरणा और शक्ति भी नहीं मिल सकती।
- ★ जिसे अतीत याद न रहे, वह भविष्य नहीं बना सकता।
- ★ अतीत में ऐसी बहुत सी चीजें हैं, जो इंसान ने बड़ी मेहनत और सदियों की कोशिशों से बनाई हैं। अगर आप उनको अपनी पूँजी नहीं बनायेंगे, तो भविष्य कैसे बनायेंगे? समय कोई स्लेट नहीं कि आपने उनको साफ किया और लिखना शुरू कर दिया। यह आप नहीं कर सकते, क्योंकि समय वह स्लेट है, जिस पर पहले से ही बहुत कुछ लिखा हुआ है और उसी पर आगे आपको लिखना है।
- ★ महामारी ने हमें चेताया है कि जिन तत्वों को हम बेगार समझ कर छोड़ते चले गए, उनका भी कोई आधार था।
- ★ अब तक हम जिस रास्ते पर चलते हुए यह समझते आये हैं कि यह प्रगति का रास्ता है, वह कोई रास्ता नहीं, एक भटकाव था। इसलिए हमें आगे बढ़ने के साथ पीछे मुड़कर भी देख लेना चाहिए।
- ★ पुरानी मान्यताएं, परम्पराएं यदि हमारे दिमाग में छाई हुई हैं तो किसी अंधविश्वास के कारण नहीं, उनमें निहित सृजनशीलता के कारण हैं।
- ★ 'कान्यकुञ्ज मंच' एक अभियान है। हम अपने विचार किसी पर थोपना नहीं चाहते। ऐसे आलेखों, विचारों, चर्चाओं का स्वागत है जो वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, नैतिक व मानवीय मूल्यों को बल प्रदान कर सकें।

- विष्णु पाण्डेय (प्रबन्ध संपादक)

जनवरी-मार्च 2021

“कान्यकुञ्ज मंच” का अगला प्रस्तावित अंक

इन्दौर (मालवा) विशेष

भौगोलिक, पौराणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व सामाजिक जानकारियों एवं सभा संगठन की गतिविधियों के साथ तमाम संग्रहणीय सामग्री। क्षेत्र विशेष के विशिष्ट व्यक्तियों का परिचय।

इन्दौर (मालवा) के लोक संस्कृति की झलक
विशेषांक प्राप्त करने व अन्य जानकारी के लिए संपर्क करें

-संपादक - 9312020932

‘भारत मातृभूमि है, पितृभूमि नहीं। मातृभूमि और पितृभूमि में अंतर यह है कि पितृभूमि की अवधारणा पुरुष बर्बरता को प्रेरित करती है। उसे आक्रांता बनाती है, लुटेरा-हिंसक बनाती है। जबकि मातृभूमि की अवधारणा पारस्परिकता, मैत्री, सहोदरभाव और उदारता प्रदान करती है, व्योकि मातृत्व में ही भ्रातृत्व का उत्स है।’

शुभकामनाओं सहित

हॉटल शिवाय

16/97, शिवाय टावर, दि माल, कानपुर
फोन: 0512-2332050-51

सनातन संस्कृति को पहचानें



सनातन समाज के स्टेरिंग पर बैठा व्यक्ति ब्राह्मण

कहलाया यानी संचालक शक्ति आप हैं। तो सोचिये, अगर आज हमारा समाज संस्कार हीन हो रहा है तो उत्तरदायी किसे माना जाय? हमने आगे बढ़ कर दूसरे की भाषा, संस्कृति को अपनाया, सत्ता के साथ रहने की वासना के वशीभूत भूत वस्त्रों के साथ खान पान तक उनका अपनाया। टाई बांधना, जूते और वस्त्र पहनकर डायनिंग टेबुल पर खाना खाना अपनाया। चौके में बैठ कर, वस्त्र मूक पद्धति को पिछड़ेपन की निशानी समझ उसका त्याग किया। काराना काल में जिस शुद्धता को सरकार ने और पूरी दुनिया ने प्रकारांत ढंग से अपनाया। वह वही शुद्ध जीवन प्रणाली थी जो हमारी सनातन संस्कृति का ढंगोसला दिखती थी। हाथ पैर धोकर चौके में जाना, दूसरे का जूठा न खाना, दूसरे के शरीर से दूरी बनाये रखना आदि।

चूंकि ब्राह्मण सनातन समाज की आचार संहिता की चलती फिरती पोथी थी था। लेकिन जब उसने स्वयं दूसरों का अनुसरण करना शुरू कर दिया तो वह अपनी श्रेष्ठता से नीचे उत्तर आया। अर्थात् वह कर्म से, चिंतन से और प्रभाव से ब्राह्मण नहीं रह गया। वैसे बनिया को छोड़कर सबने अपने रूप को समय के हिसाब से बदल डाला। इस तरह हम ने यानी हिन्दू समाज ने अन्य धर्मों की संस्कृतियों से करीबी नाता इस कदर जोड़ा कि वह उनमें से एक तो दिखने लगा, पर ब्राह्मण कहीं से नहीं। जनेऊ उसके लिए आचार संहिता का बोझ हो गया। शादी के पहले तिलक के समय एक लकीर पिटौल रह गया। कंधे पर बोझ लगने के कारण धीरे धीरे उत्तर आया। अगर किसी राजनीतिक कारण से कंधे पर है भी तो शकाओं के निवारण के अवसर पर उसका प्रयोग करना असम्भवता लगती है, यानी शर्म आती है। चंदन, तिलक तो गई गुजरी बात हो गयी। संध्या, पूजन से भी हम ब्राह्मण पुत्र की तरह नहीं जुड़े हैं। जब हम ही च्युत हो गये तो सनातन समाज को बिंगड़ने या बिखरने से क्या रोकेंगे?

राजनीति जातियों को अपने हित में इस्तेमाल जब करती है तो दलित, पिछड़ा वर्ग से उसे अपना हितचिंतन अधिक नज़र आता है। उस समय ब्राह्मण वर्ग अपने अस्तित्व को खतोरे में देख किसी न किसी दल का दामन पकड़ अपने को शीर्ष में रखने की असफल लड़ाई लड़ता दिखाई पड़ता है। अन्य जाति तो अपने हित के लिए संघर्ष करती है पर हमारी जाति सम्मान के लिए इधर उधर भागती है।

अगर ब्राह्मण हिन्दू धर्म की रीढ़ है तो वो दलित या पिछड़े वर्ग के या क्षत्रिय वर्ग के विरुद्ध कैसे जा सकता है? वो मुलायम सिंह या मायावती की तरह कोई ऐसा दल भी नहीं बना

सकता जिस का बोट आधार ब्राह्मण हो और अन्य जातियाँ भी उसके साथ हों। सत्य तो ये है ब्राह्मण का बोट अस्तित्व अन्य जातियों की तुलना में कमज़ोर पड़ता है। यही आज हमारे समाज की मानसिक पीड़ि का कारण भी है।

इस समय एक पुरानी कहावत याद आ रही है “‘आठ कनौजिया नौ चूल्हे’। एक और बेहूदी कहावत भी समाज में हमारे समाज के लिए प्रचलित है ‘‘बाह्न, कुत्ता, हाथी, ये ना चाहें साथी’। सुनने में दोनों बुरी लगती हैं। पर इस पर ध्यान देना इस लिए जरूरी है क्योंकि ये हिन्दू समाज के द्वारा, हमारी आदतों और जीवन शैली को दृष्टि में रख कर की गई वो टिप्पणियाँ हैं जिन पर आज हमें अपने वर्तमान के परिपेक्ष में सोचना आवश्यक है। हम न ब्रह्म को जानेवाली परिभाषा की इकाई हैं, न मनु की व्यवस्था के प्रमुख अंग। पर हमारे अस्तित्व के रहते हिन्दू समाज का नया ढांचा भी नहीं खड़ा हो सकता। हम हैं तो हिन्दू समाज है।

हमने राजनीतिक दलों की भाँति तमाम ब्राह्मण संगठन बना डाले फिर भी वो प्राप्त न कर सके जो हमारा प्राप्त था। आखिर ऐसा क्यूँ है? इस पर जब विचार करता हूँ तो लगता है हमें पहले तो अपने बिखरे अस्तित्व को समोना होगा और फिर मनुष्यमात्र का चिंतन कर राजनीतिक दलों के चंगुल में तड़पते समाज को मुक्त कराने का मार्ग, मनु के द्वारा कल्पित या रचित ब्राह्मण के अस्तित्व को जातियों की दराजों में फँसे चने के दाने की तरह बाहर निकालना होगा। हम बहुत पीछे चले गये हैं। वर्तमान के साथ, अपने अस्तित्व के और पहचान के साथ नये चाणक्य और उस परसुराम को अपने अंदर पैदा करना होगा जो नये राम को अपने अधूरे कामों को पूरा करने के लिए आग्रह करने को धनुष यज्ञ में प्रगट होना होगा, उनके आगे आत्म समर्पण के लिए था, शक्तिहीन होकर जीने के लिए नहीं।

आओ हम पहले जन्मना ब्राह्मण को तेजस्वी बनाएं। उसके लिए “‘संघर्ष बहुत हितेरतः’” का मंत्र ही काम देगा। राजनीतिक दल जातियों को लड़ा कर हिन्दू जाति को कमज़ोर कर रहे हैं। हमें भले दिख रहा हो हम बढ़ रहे हैं, पर सत्य कुछ और है। भारत को विश्व बंधु बनाने के लिये गीता का बताया, बुद्ध का समर्थित तथा राम का आचरित मध्यम मार्ग ही अपनाना होगा। कटरपन तोड़ता है, दृढ़ संकल्प अगे ले जाता है। आओ भीड़ को “‘संघम शरणम् गच्छमि’” के सन्देश से विभूषित करें। हम जन्मना ही सही ब्राह्मण तो हैं, जिसने संस्कार शुद्धि के बाद द्विजत्व प्राप्त किया है। हमें अपने दर्पण में अपने को देखना चाहिये किसी राजनीतिक दल के आईने में नहीं। दलित, वैश्य, क्षत्रिय और ब्राह्मण मिलकर जो जाति बनी थी वही सनातन चार पहिये वाली संतुलित गाड़ी थी, जिसे प्रमादवश हम जाति मान बैठे, बाहर से आयी संस्कृति के लोगों के प्रभाव से। हमें शिव के परिवार की संस्कृति अपनानी होगी तभी भारत जगत गुरु बनेगा। क्या ये तुम कर सकते? □

- 9415471813

- डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय, कानपुर

लोकगीत अधिकांशतः स्त्रियों की रचनायें हैं, जिनके माध्यम से नारीमन का दर्द उभरा है। घरों में कैद स्त्रियाँ विभिन्न पारिवारिक अवसरों पर एकत्रित हो पाती थीं और तब उनका दर्द गीत बन उभरता था। व्यक्ति-पीड़ा सामूहिक हो जाती। इसलिए लोकगीतों में निरोह पशुओं, वृक्षों और नारी की वेदना अंकित है। पशु-पक्षी माध्यम बनते। पार्वती, राधा और सीता उनका आदर्श थीं, उनकी शक्ति नहीं। वेदना से नारी मन का जुड़ाव था। मानक साहित्य के देवता नारीमन के लोकगीतों में उपालभ और निंदा के पात्र थे। लोकगीतों को केवल हिंदी से नहीं जोड़ना चाहिए। भारत की हर भाषा और बोली के लोकगीतों में एक ही स्वर मिलता है जो इस बात का प्रमाण है कि लोकगीतों का जन्म भारतीय परिवार व्यवस्था के आदि से हुआ था। भाषा बदलती गयी पर लोकगीत वही रहे। इसलिए प्रकृति के अधिकांश गीतों की रचना आदिम है। मानक साहित्य समय के साथ बदलते हैं किंतु लोकगीतों की केवल भाषा बदलती है। इसलिए भारतीय संस्कृति को समझने का सबसे पुष्ट प्रमाण हमारा लोक साहित्य है जो वैदिक ऋच्याओं का ही स्वर है। वास्तविक नारी-विमर्श लोकगीतों से प्रारंभ हुआ है। आज के विमर्शीयों को सीखना चाहिए। वेद में शची और इंद्र के संवाद इस विमर्श से अधिक महत्वपूर्ण हैं। जो महिला लेखन को आधुनिक मानते हैं उन्हें जानना चाहिए कि महिलाएं आदिम युग से रचना कर रही हैं।

पुस्तक अनुशीलन

एक शब्द है अनुशीलन। शास्त्रों का अध्ययन नहीं अनुशीलन होता है। अनुशीलन का अर्थ है अपने व्यक्तित्व में उतार लेना। तुलसी ने इसी अनुशीलन की प्रक्रिया को शास्त्र सुचितित 'पुनि पुनि देखिय' कहा है। पहले पढ़ना, फिर अध्ययन और तब अनुशीलन होता है। वेद जब कर्मकांड में आये तो पूजा में नियम बने। आवाहन, अर्च्य, तर्पण, आचमन, स्नापन और तब विसर्जन। यही क्रम अध्ययन का भी है। पुस्तक खरीदना आवाहन है, अल्मारी में सजा देना अर्च्य, उसके आत्मसात् करना आचमन है बारबार दुहराना तर्पण और उसमें ढूब जाना स्नापन या स्नान है। इसके बाद हम विसर्जन या अभिव्यक्ति के अधिकारी होते हैं। पर आजकल हम आवाहन भी नहीं करते। कहीं से मिल गयी रख लेते हैं। फिर अनुशीलन तो दूर, सीधे भाषण दे लेते हैं। बिना अनुशीलन हम किसी रचना की व्याख्या या आलोचना के अधिकारी नहीं। यह कृति का अपमान है। जरूरी नहीं हम पढ़ें, पर यह जरूरी है कि बोलना या लिखना बिना अनुशीलन के न करें।

रिश्ते और प्रेम

रिश्ते सोते हैं, पर मरते नहीं, वे पीछियों चलते हैं। गोत्र, शाखा, सूत्र, प्रवर, वर्ण जाति रिश्तों के ही अनंत विस्तार हैं। इनसे इतर कार्यकारण से संबंध बनते हैं। संबंध में बँधना अर्थात् गाँठ का

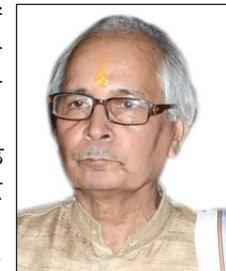
लोकगीत और स्त्रियां

होना है। इसलिए संबंध टृटे नहीं छूटते हैं, कार्यकारण के तिरोभाव से गाँठ खुल जाती है। प्रेम आंतरिक भाव है। कमलमृणाल की रज्जु से जुड़ा। जिसमें केवल दो छोर होते हैं, गाँठ नहीं। इसीलिए रहीम ने इसे न तोड़ने पर बल दिया है।

रिश्ते और संबंध में आवश्यक नहीं प्रेम भी हो, पर प्रेम में दोनों समाहित हो जाते हैं। मूल अंतर यह है कि रिश्तों और संबंधों की सत्ता लौकिक और सामाजिक है जबकि प्रेम की दिव्य और पारमार्थिक। इसीलिए लोक में रिश्ते और संबंध की मान्यता है और प्रेम निवार्य है। किंतु पारमार्थिक जीवन में रिश्तों और संबंधों से मुक्त केवल प्रेम की महत्ता है और संबंध और रिश्तों में त्याग का उपदेश दिया गया है।

लोकैषणा

लोकैषणा दोष नहीं पर दुर्गुण तो है ही। सरकारी सेवा के राजपथ के अभ्यासी सेवामुक्त होने के बाद मेड़-डॉँड पर चलकर लोकैषणा को पुरा करने का टेढ़ा रास्ता बनाते हैं। तिरस्कृत सम्मान के रुखे सूखे भौजन से तृप्त होकर खुश होने का अभिनय करते हैं। कोरोना संकट ने उस ऊबड़खाबड़ रास्ते को भी रोक दिया। शायद परमात्मा ने एकांत साधना का मार्ग ही रचा हो। यही हम लोगों के लिए विपदा में अवसर है। मजबूरी में ही सही लोकैषणा का दुर्गुण मिट जाये इससे अच्छा क्या? अस्तु---निहितार्थ आप समझें। □



मौन

मौन है

मन का मूक होना

और चुप

वाणी का विराम

सत्य का साक्षात्कार है

मौन

चुप भयग्रस्त विरोध

मौन आनंद देता है

चुप एक पीड़ा।

इसलिए चुप से डरना

चाहिए

उसमें होती है आग

मौन साधना है

उसमें निहित है शार्ति □

बुद्धापा

संतानें जब करने लगें फिक्र

शिष्य देने लगे हों नसीहतें

मित्र फेरने लगे मुख

परिचित चुराने लगे आँख

रिश्ते भी नहीं उठाते

पहली बार में फोन

सामर्थ्य को भी बताते

लोग असमर्थता

शायद इसी का नाम

बुद्धापा है। □

-9452694078

महामारी से बना निराला

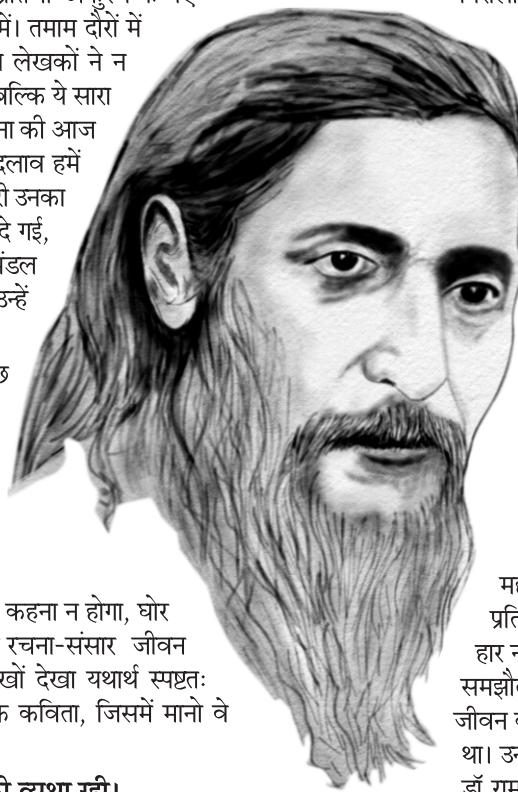
वैश्विक महामारियों का इतिहास नया नहीं है। भय, पीड़ा, नकारात्मकता के समानांतर प्रतिभा-अंकुरण के नए अध्याय भी खुलते हैं आपदाकाल में। तमाम दौरों में मानवता के हिस्से आई त्रासदी का लेखकों ने न सिर्फ संवेदनात्मक व्योरा लिखा है बल्कि ये सारा लेखन मानवीय इतिहास और संवेदना की आज अक्षर पूँजी भी है। ऐसा ही एक बदलाव हमें निराला में भी दिखाई देता है। महामारी उनका सर्वस्व ले गई। बदले में ऐसी दृष्टि दे गई, जिससे चीज़ों और लोगों का आभासमंडल नहीं, केवल उनका अंतर्मन ही उन्हें दिखाई देता है।

प्रथम विश्व युद्ध के कुछ समय बाद भारत ही नहीं पूरी दुनिया में फैली स्पैनिश फ्लू महामारी के चलते सूर्यकान्त त्रिपाठी जी की पत्नी मनोहर देवी, भाभी, भाई, और चाचा की मौत हो गई। जीवन में शेष बची उनकी पुत्री। कुछ समय बाद पुत्री की भी मौत हो गई। कहना न होगा, घोर आर्थिक संकटों में जूझते निराला के रचना-संसार जीवन की अनुभूतियां, उनका भोगा, आंखों देखा यथार्थ स्पष्टतः परिलक्षित होता है। निराला की एक कविता, जिसमें मानो वे अपनी व्यथा ही कह रहे हों-

‘दुख ही जीवन की व्यथा रही।

क्या कहूँ आज जो नहीं कही।’

इन विषम परिस्थितियों ने सूर्यकान्त त्रिपाठी के अंतर्मन



में धधक रही ज्वाला को प्रचंडता दी और हिन्दी साहित्य में ‘निराला’ का जन्म हुआ। इस ज्वाला में विद्रोह था, संघर्ष था, वेदना थी, पीड़ा थी, अभाव था जिसने व्यष्टि में समष्टि के दर्शन किये। और निराला ‘महाप्राण निराला’ हो गए।

महाप्राण की उपाधि से विभूषित हिंदी के महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने ‘कुल्ली भाट’ में लिखा था- मैं डलमऊ में गंगा के तट पर खड़ा था। जहाँ तक नज़र जाती थी गंगा कं पानी में इंसानी लाशें ही लाशें दिखाई देती थीं। मेरे ससुराल से खबर आई कि मेरी पत्नी मनोहरा देवी भी चल बसी हैं। निराला का पैतृक निवास उत्ताव जिले के गढ़कोला गांव में था और गंगा किनारे डलमऊ उनकी ससुराल।

महादेवी कर्मा के शब्दों में- ‘अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों से उन्होंने कभी ऐसी हार नहीं मानी, जिसे सह्य बनाने के लिए हम समझौता करते हैं।’ निराला का दुःख उनके जीवन के परिवेश से संघर्ष की प्रक्रिया में पनपा था। उनका काव्य इसी संघर्ष का प्रतिफल था। डॉ रामविलास शर्मा ने निराला पर लिखा था, ‘काव्य की श्रेष्ठता उसके ट्रैजिक होने में है, पैथेटिक होने में नहीं। जहाँ संघर्ष है, परिवेश का विरोध सशक्त है, उससे टक्कर लेने वाले व्यक्ति का मनोबल दृढ़ है, वहाँ उदात्त स्तर पर मानव-करुणा व्यक्त होती है। वहाँ ट्रैज़डी है। शेष सब पैथेटिक है।’

वह सतत संघर्ष-पथ के पथिक थे। यह रास्ता उन्हें विक्षिप्तता तक भी ले गया। उन्होंने जीवन अनेक संस्तरों पर जिया। इसका ही निष्कर्ष है कि उनका रचना-संसार इतनी विविधता और समृद्धता लिए हुए है। वह मनुष्यों की मुक्ति की तरह कविता की भी मुक्ति के पक्षधर थे। वर्ष 1930 में प्रकाशित अपने कविता-संग्रह ‘परिमल’ की भूमिका में उन्होंने लिखा: ‘‘मनुष्यों की मुक्ति कर्म के बंधन से छुटकारा पाना है और कविता की मुक्ति छोड़ों के शासन से अलग हो जाना है।’’

निराला का विद्रोह वास्तव में उस आंधी की तरह है जो मृत जीर्ण-शीर्ण तिनकों और नीरस सूखे वित्तीर्ण पतों को उड़ाकर धरती में नए-नए बीजों को बिखेर देती है, सड़ी-गली अकारण स्थान घेरने वाली वस्तुओं को हटाकर उपयोगी और नूतन के लिए जगह बना देती है।

निराला ने निम्न श्रेणी कहे जाने वाले और सवर्णों में कभी भेद नहीं माना। विधवा-विवाह, दहेजप्रथा मिटाने, धार्मिक या सामाजिक कुरीतियों को उखाड़ फेंकने के पक्षधर रहे। निरालाजी स्वयं कान्यकुञ्ज ब्राह्मण थे इसलिए उन्होंने बार-बार इसकी निंदा-सूचक प्रशंसा की है-

‘ये कान्यकुञ्ज कुल कुलांगार,
खाकर पतल में करें छेद,
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इम विषय बेलि में विष ही फल
है दाध मरुस्थल नहीं सुजल।’

गुरु रविंद्रनाथ टैगोर के साहित्य का उन पर प्रभाव था। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, ‘निराला के काव्य में इतना विद्रोह और ललकार होने पर भी उच्छ्वस्त्र और निर्मर्याद वाचालता नहीं आने पाई है। कारण, उन्हें अपना लक्ष्य ठीक मालूम था।..निराला जी के कठोर से कठोर आक्रमण भी मर्यादित है।’ नलिनीविलोचन शर्मा ने कहा था, ‘निरालाजी जॉनसन की तरह कर्मठ और अध्यवसायी, लार्ड बाईरन से उद्भट प्रत्यालोचक, किट्स और टैगोर की तरह सुकवि, टॉलस्टॉय, ह्यूगो और शॉ की तरह उक्तान्तिकारी और औपन्यासिक हैं।’

‘जियत न दीन्हेन कौरा, मरे उठाये न चौरा’, निराला के साहित्य का मूल्यांकन उनके जीवनकाल में वैसा नहीं हुआ, जो

निराला की हस्तलिपि

श्रेष्ठी

गुरुत्व है देव मन पृथिवी के सत्र के जब
कलश के भैल ज्यों,
शान्ति के छेष्व लौंहैं
हृष कन रही दु धैर, श्लो नी उद्धारी हैं;
मिट्टी की, गर्भ की, हृषि की, विजा की,
जिम्मी हैं उम्मी हैं हृषि की,
वृष है दृष्टि देवा — देवा गर्भाद्वर्ष
दूसरा फूलत छब दूलेगा विश्वमें
कृष न सह जानगा जुलें दृष्टि देने की;
किम्भु अजीवत दुष्ट दृष्टि लक्ष भन्नान्तर—
कृषु द्या दृष्टि से अपीक्षत देवान हैं,
अपीक्ष प्राणों के पास अपीक्षक ग्रन्थम्
अपीक्ष कहुत के लिये, प्रगति की राधकता,

लखनऊ
२४. ३. ३२.

१८८८

एक बार निराला इलाहाबाद देन से आये। कार्यक्रम के आयोजक उन्हें लेने के लिए स्टेशन पर आ गये। निराला जी साहित्य जगत में उस समय सूर्य की तरह ही चमक रहे थे। आयोजकों को लग रहा था कि निराला जी के बड़े ठाठ होंगे। लेकिन जब केवल एक गमछा डालकर निराला जी स्टेशन पर उतरे तो आयोजक उनकी सादगी पर चकित थे। उनमें से एक ने पूछा, ‘निराला जी ने जवाब दिया, ‘एक रजाई लेकर आया था, रास्ते में ठण्ड ज्यादा लगी तो रजाई फाड़कर उसी में घुस गया अंदर पड़ी है, उसे ही समेट लो,, यही सामान है।’

अपेक्षित था। जीवन भर आर्थिक विषमताओं से जुझनेवाले निराला ने जीवन की किसी भी गम्भीर समस्या को गम्भीर नहीं समझा। लिखने-पढ़ने से जो कछ मिल जाता, सन्तोष कर लेते। निराला जी अपनी नवीनता के कारण हिन्दी के पाठकों के लिए और भी अपरिचित थे। पुस्तकों की रॉयल्टी भी नहीं मिलती। प्रकाशक उनकी पुस्तकों का स्वत्व सस्ते में खरीद लेते। तत्कालीन प्रधानमंत्री पं जवाहरलाल नेहरू द्वारा साहित्य अकादमी की स्थापना में निराला के रचना साहित्य को शोषित होने से बचाना एक कारण था। □

मीत

जय तमारी देख, ली
रूप को गुण की, रसीली।
कुद्दुं मैं, अद्धि की क्या,
क्षाधना की, सिल्ली की क्या,
खिल चुका है फूल मेरा,
प्रख उद्याँ से यलीं छीली।
चढ़ी थी जो आंख मेरी,
बजं रही थी जहाँ भेरी,
वहाँ दिकुड़न पड़ चुकी है,
जीर्ण है वह आज तीली।
आग सारी फुक चुकी है,
रागिनी वह रुक चुकी है,
स्मरण में है आज जीवन,
मृत्यु की है रेख तीली।

१८८८

२११२, ५५१२
२. ३. ५२



राम काज लगि तव अवतारा



वह एक युग था, जब हनुमान ने सागर पार किया था और जाकर सोने की लंका जला आए थे।.. और फिर 19वीं शताब्दी में स्वामीजी सागर पार करके गए और संसार के सबसे धनाद्यु देश को हिला आये। आखिर तो वह भी सोने की ही लंका थी। अपार धन था, भोगवादी वृत्ति थी, शक्ति और बल का अहंकार था।.. हाँ ! आग लगाकर उनके भवन तो नहीं जलाए, किंतु उनके हृदयों में ज्वाला तो धधका ही आए- कहीं ज्ञान की, कहीं भक्ति की, कहीं जिज्ञासा की, कहीं ईर्ष्या की। हमारे कवियों ने लंका को भौतिक रूप में जलते हुए चित्रित किया है; किंतु उसे भूल भी जाएं, तो मानना पड़ेगा कि हनुमान ने लंका के राक्षसत्व को तो जला ही दिया था। लंका वासियों को भक्ति भी दी थी, ज्ञान भी दिया था, चेतना की तो कमी ही नहीं थी। हनुमान ने भी विजय का राख फूंका था। स्वामी जी भी वही कर आये। आश्र्वति तो यह है कि जिस युग में सागर पार जाने की बात तक से प्रायश्चित्त का विधान होने लगता था, उस युग में स्वामी जी सागर पार करके गए, विदेशियों के मध्य रहे, न खान-पान में भेद बरता, न स्नेह-सौहार्द में कमी की।.. किंतु किसी कर्मकांडी पैंडित ने उनसे प्रायश्चित्त करने के लिए नहीं कहा। जिसे किंकिंधा का मधुबन उजाड़ने पर सुग्रीव ने अंगद से कुछ नहीं कहा था।

भगवान राम को जब कोई कठिन कार्य दिखाई देता था उनकी दूष्टि हनुमान पर आ ठहरती थी, 'पवनपुत्र ! जाओ और यह कार्य करो।' चाहे संजीवी लानी हो, चाहे देवीदह से नीलकमल। चाहे युद्ध में मोर्चा लेना हो, या अयोध्या में अग्रिम सूचना भेजनी हो, हनुमान प्रत्येक कार्य के लिए सत्रद्ध थे।.. और श्री रामकृष्ण परमहंस ने तो एक बार ही सब कुछ स्वामी जी के कंधों पर डाल दिया, 'यह मां का कार्य है। यह तू करेगा।' स्वामीजी परमहंस की सक्रियता थे। जो संबंध श्री राम से हनुमान का था, कुछ वैसा ही स्वामी जी का परमहंस से था। हनुमान जी और स्वामी जी दोनों ने ही सेवा धर्म को अपना लिया था। उन्हें न अपना यश चाहिए था, न अपना सुख। बस, जिसे अपना स्वामी मान लिया, उसके आदेशों का पालन ही जीवन का परम लक्ष्य था।

दोनों का ब्रह्मचारी मुझे एक सा ही लगता है। भारतीय हिंदू परंपरा में हनुमान के आसपास कोई नारी चरित्र नहीं है। किंतु कुछ गौण कथाओं में प्रकारान्तर से कुछ श्रृंगारिक प्रसंग लाने का लोगों ने प्रयत्न किया है। यह कुछ वैसा ही है जैसा अमेरिका में स्वामी जी के भारतीय तथा विदेशी, स्वधर्मी तथा विधर्मी विरोधियों ने उनके आसपास अमेरिकी युवतियों का जमघट देखकर, उन्हें लाठित करने का प्रयत्न किया। युवतियाँ तो उनके चारों ओर थीं।

उनका लौकिक और आध्यात्मिक आकर्षण ही ऐसा था। शिकागो की धर्म संसद में स्वामी जी के पहले सर्वेक्षण संसाधन के विषय में साक्ष्य है, 'मैंने बीसियों युवतियों को, उनका नैकट्य पाने के लिए, बैंचों के ऊपर से चलते हुए देखा और स्वयं से कहा, 'यदि तुम कामदेव के इस अभियान का निराकरण कर सकते हो, तो मेरे बच्चे ! तुम वस्तुतः देवता हो।'

मेरे मन में यह बात बार-बार आती है कि कहीं हनुमान जी ही तो स्वामी विवेकानंद के रूप में अवतरित नहीं हुए थे। परमहंस देव ने अनेक बार अपने शिष्यों से कहा था कि जो राम था, जो कृष्ण था, वही इस शरीर के भीतर है। वेदांत के अर्थ में नहीं, वास्तविक अर्थ में।.. और उन्होंने यह संकेत भी किया था कि शरीर धारण करने से पूर्व, वह एक ऋषि को अपने पीछे पीछे मृत्युलोक में आने के लिए कह आए थे। वे ऋषि ही स्वामी विवेकानंद के रूप में पृथ्वी पर आए थे।.. तो राम के साथ तो सेवा के लिए हनुमान ही आ सकते हैं।..'

पवन पुत्र हनुमान तथा स्वामी विवेकानंद के जीवन में महादेव शिव के महत्व को देखते हुए भी, मेरे मन में सायं संबंधी अनेक संभावनाएं जागती हैं। हनुमान को रुद्र का अवतार भी माना जाता है। गोस्वामी तुलसीदास ने उन्हें 'वानराकार विग्रह पुरारी' भी कहा है। हनुमान चालीसा में उन्हें 'संकर सुवन केसरी नंदन' कहा गया है। स्वामी विवेकानंद के जीवन में भी महादेव शिव का इतना महत्व है कि वह उन्हीं के अंश से उत्पन्न हुए लगते हैं। उनकी माता ने वीरेश्वर शिव की उपासना करके ही उन्हें पाया था और इसीलिए अपने आराध्य देव के नाम पर ही शैशव में उनका नाम 'वीरेश्वर' रखा गया था, जो क्रमशः परिवर्तित होता हुआ वीरेश्वर से बिलेश्वर हुआ और अंततः बीले मात्र रह गया। घर में पुकारे जाने का उनका यही नाम था। शैशवावस्था में जब उनकी असाधारण ऊर्जा प्रकट हो रही थी और वह किसी के संभाले नहीं संभल रहे थे तो मां ने उन्हें शांत करने के लिए सिर पर जल डालते हुए 'शिव-शिव' का उच्चारण ही किया था और वह शांत हो भी गए थे। उनके उत्पातों से परेशान होकर माता भुनेश्वरी ने महादेव शिव से शिकायत भी कुछ ऐसी ही की थी, 'भगवन ! आपसे एक पुत्र मांगा था, आपने यह अपना कौन सा भूत भेज दिया।' स्वामी जी ने अपने शैशव में पहले सीता-राम की ही उपासना की थी और फिर वह क्रमशः सन्यास तथा वैराग्य के आकर्षण में महादेव के निकट होते गए थे। उन्हें अपने वार्तालाप के मध्य 'शिव-शिव' कहने का अभ्यास था और अमरनाथ में उन्होंने जो दिव्य अनुभूति प्राप्त की थी वह भी महादेव का ही प्रसाद था।□ (डॉनरेन्ड्र कोहली की पुस्तक से साभार)

युवा राष्ट्र के उपादान होते हैं

- अनूप वाजपेयी, इन्डोर

- काम करने का हुनर आ जाये तो राह हमें सलाम करती है। तब जिंदगी बोझा नहीं, बल्कि रुई का फाहा लगने लगती है।
- किसी दार्शनिक ने सही कहा है, 'यदि आप दौड़ते वक्त पिछली बार गिरे थे, तो इस बार सन्तुलन को बेहतर करें, लेकिन गिरने का डर न पालें, न ही उसकी शर्मिदारी पर खुद को कमतर महसूस करें। वहीं यदि आप दौड़ते वक्त नहीं गिरे

थे तो उसका गुमान न पालें कि एहतियात ही गायब हो जाय और आप ओंधे मुँह गिरें। सफलता के लिए सम्पर्क रहना बहुत जरूरी है।'

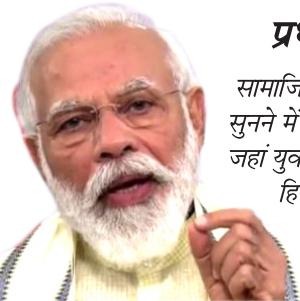
- 'मैं असफलता को स्वीकार कर सकता हूँ। हर कोई कभी न कभी



अ स फ ल

जरूर होता है, लेकिन मैं कोशिश करना नहीं छोड़ सकता। क्योंकि एक हार की वजह से कोशिश छोड़ देना भविष्य के रास्ते बंद कर देना है।' -माइकेल जॉर्डन

- कोई काम शुरू करने से पहले स्वयं से तीन प्रश्न करने चाहिए- मैं ये काम क्यों कर रहा हूँ? इसके परिणाम क्या हो सकते हैं? और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जाएं, तभी आगे बढ़ें।
- पहले तो हमें यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि कौन सा कार्य हमारी सामर्थ्य में है और कौन सा नहीं। हमारे कमज़ोर और मजबूत पहलू क्या हैं? जबतक इन चीजों का निर्धारण नहीं कर लेते, भटकाव बना रहेगा। जिस काम में आपका मन लगे और संतुष्टि मिले, वही करें।
- सार्थक प्रयास कभी निष्फल नहीं होते।
- विफल होना मंजूर किया जा सकता है लेकिन सफल होने के लिए प्रयास न करना मंजूर नहीं किया जा सकता।
- 'जब आवै संतोष धन, सब धन धरि समान' यह भाव केवल ईर्ष्या और अतिवाद से बचने के लिए है। इसका संकेत प्रगति को रोकना कदापि नहीं। कर्मशील और प्रगतिशील होना हमारा धर्म है।
- हमें अपने अंदर विद्यमान भयानक शत्रुओं को रोकना है। वह भयानक शत्रु काम, क्रोध, लोभ और मोह हैं। □



प्रधानमंत्री मोदी और युवा

सामाजिक व राजनीतिक मंचों से अक्सर यह बात सुनने में आती है कि दुनिया में भारत ही ऐसा देश है, जहां युवाओं की संख्या सबसे अधिक है। अंकड़ों के हिसाब से देखें तो दुनिया के 121 करोड़ युवाओं में 21 प्रतिशत युवा भारतीय हैं जबकि 14 प्रतिशत के साथ पड़ोसी देश चीन दूसरे नम्बर पर है। युवाओं की यह गणना 18 से 35 आयुर्वर्ग की है। आवश्यकता है इस

युवा शक्ति को मानव संसाधन में समायोजित करने की। वरना शक्ति कोई भी हो उसका समुचित समायोजन न होने से विघटन का कारण भी बन सकती है।

हमारे देश के ऊर्जावान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अक्सर पाते ही युवाओं, छात्रों के बीच अपना सन्देश देने से नहीं चूकते। पिछले महीने गुजरात के पेट्रोलियम विश्वविद्यालय में प्रधानमंत्री ने आत्मनिर्भर भारत के लिए छात्रों को 3 P (Purpose, Preferences, Perfection) का मंत्र दिया। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में देश के युवाओं के बलिदान को स्मरण करते हुए उन्होंने कहा कि विश्व एक बड़े परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। आप सोच सकते हैं कि कोरोनकाल है, हम कर ही क्या सकते हैं? परीक्षा में सफलता को ही लक्ष्य मान लेते हैं। ये सोच हीनता का परिचायक है। सफल व्यक्ति वह होता है, जिसमें जिम्मेदारी का अहसास हो, देश, समाज, मानवता व परिवार के लिए कुछ कर गुजरने का एक निश्चित लक्ष्य हो। जिम्मेदारी का अहसास स्वमेव अक्सर के मार्ग खोल देता है। संकल्पशीलता हो, ललक हो, स्वयं पर विश्वास हो। आपकी क्षमताएं और शक्ति चुनोतियों से बड़ी नहीं हैं।

अगली कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी ने प्रीफरेंसेज और परफेक्शन की बात कही। जो चुनोतियों को स्वीकार करता है, समस्याओं के समाधान खोजता है, वही जीवन में सफल होता है।

आत्मनिर्भर भारत का सपना सँजोये प्रधानमंत्री अक्सर युवाओं के बीच गरिमामय सन्देश देते देखे जाते हैं। उन्होंने युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में स्किल इंडिया, स्टार्टअप, मेक इन इंडिया, मुद्रा लोन जैसी अनेकों योजनाएं भी दी हैं। प्रश्न ये भी उठता है प्रधानमंत्री के घोषणाओं और योजनाओं के क्रियान्वयन में शासकीय-प्रासासकीय तंत्र कितना योगदान करता है।

सामाजिक व स्वयंसेवी संस्थाओं को इन अवसरों का लाभ उठाते हुए गवर्नेंटर-समाज के युवाओं को दिशानिर्देश कर प्रेरित करना चाहिए। किसी भी समाज, राष्ट्र के उपादान युवा ही होते हैं। □ - अनूप वाजपेयी

सारे देश का ब्राह्मणीकरण हो: विवेकानंद

- आचार्य निशांतकेतु, गुरुग्राम

चातुर्वर्ण्य-व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आते हैं। उनका वर्गीकरण गुण-कर्म के द्वारा हुआ था। बाद में इन्हें जाति और जन्म से रूढ़ कर दिया गया। मनुस्मृति में भी कहा गया है- 'जन्मना जायते शुद्धः, कर्मणा द्विज समुच्चयते'।

गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है कि मैंने स्वयं इन वर्णों का विभाजन किया है। इनमें छोटे-बड़े अथवा ऊँच-नीच का कोई भेद नहीं था।

प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर इन चारों वर्णों को विभागाः जीता है। मस्तक और मस्तिष्क को ब्राह्मण कहा गया है क्योंकि वहां से चिंतन-मनन का काम लिया जाता है। स्कंध और भुजाओं को क्षत्री की संज्ञा दी गई है क्योंकि यह संपूर्ण शरीर की रक्षा करते हैं। कटि-प्रदेश तक के शारीरांग को वैश्य कहा गया है क्योंकि यहां से पोषण के लिए भोजन आदि की व्यवस्था के साथ जन्म-प्रजनन का लोक-व्यापार प्रारंभ होता है। चरणों को शूद्र की संज्ञा दी गई है क्योंकि इनसे गतिचक्रीय सेवा का काम लिया जाता है।

इसी प्रकार दिन के प्रातः काल को ब्राह्मण की संज्ञा दी गई है क्योंकि उस समय स्नानादि-शुद्धीकरण के पश्चात पूजा पाठ एवं मंत्र उच्चारण का विधान है। दिन का मुख्य भाग क्षत्रिय कहलाता है क्योंकि इस कार्य में व्यक्ति आत्मरक्षा और परिवार रक्षा के लिए संघर्ष करते हुए आजीविकोपार्जन करता है। संध्या से रात्रि काल तक यह परिवार के सभी सदस्यों की सेवा करता है, इसलिए शूद्र है।

यह सत्य है कि वर्णाश्रम की व्यवस्था के साथ ब्राह्मणों की संख्या इस देश में सबसे अधिक (12%) है। भिन्न-भिन्न कुल गोत्र के आधार पर इनके 127 प्रभेद हैं। ब्राह्मणों को शोधित जल (फिल्टर वॉटर) भी कहा जाता है। स्नानादि, पूजा-पाठ, धर्म-कर्म, दान-प्रतिग्रह, यजन-याजन इत्यादि के माध्यम से ब्राह्मणों का जातीय परिशोधन (Racial fileration) जितना अधिक हुआ है, उसकी तुलना में विभाजित कर्म-व्यवस्था के आधार पर अन्यत्र नहीं हो सका।

एक बार विवेकानंद ने कहा था कि संपूर्ण देश को चाहिए कि वह किसी एक जाति में सम्मिलित होने की घोषणा कर एकदेशीय हो जाए। जैसे- चीन में चीनी, यूरोप में अंग्रेज, और अफ्रीका में अफ्रीकी रहते हैं, उसी प्रकार भारत में जो भी रहेंगे, वह भारतीय कहे जाएंगे। यदि सभी सहमत हैं कि ब्राह्मण श्रेष्ठ है तो संपूर्ण देश का एक घोषणा के साथ ब्राह्मणीकरण हो जाना चाहिए।

यह ठीक है कि आज ब्राह्मणों की आर्थिक स्थिति और

सामाजिक दशा उत्तम नहीं है। इसके कारण हैं। समाज ने यह निर्णय किया कि ब्राह्मणों का कर्म है, वेदादि विविध ग्रंथों का स्वाध्याय करना और गुरुकुल आदि के माध्यम से समाज को शिक्षित और सुसंस्कृत करना। उनके लिए भोजन, वस्त्र, गृह आदि की व्यवस्था समाज करेगा। परवर्ती काल में समाज वित्तान्वित हो गया और परंपरागत व्यवस्था टूटने लगी। फ्रायड और मार्क्स ने संपूर्ण विश्व के समाज को विपथ पर ला दिया। अपरिग्रह के संपोषक और प्रचारक ब्राह्मण निर्धन ही रह गए। अब धीरे-धीरे यथार्थ से परिचित होकर ब्राह्मणों ने भी अर्थान्वित भावनाओं को अपनाना शुरू कर दिया। बुद्धि और विवेक तो उसके साथ था ही, केवल दिशा बदल गई।

ब्राह्मणीकरण के माध्यम से यदि भारत को ब्राह्मण का देश कहा जाए तो इसमें क्या हर्ज ! भारत अपनी अंतःप्रज्ञा और तर्कप्रज्ञा, योग और साधना, लालित्य और कला, लोकबद्धता और कमनीयता तथा सौंदर्य और ऐश्वर्य के लिए प्रसिद्ध रहा है, किसी जाति विशेष से प्रतिबद्धता के लिए नहीं। मंत्रों का अवतरण केवल ब्राह्मणों पर ही नहीं हुआ, अन्य वर्णों पर भी हुआ है। विश्वामित्र क्षत्रिय थे, जिनके ऊपर मंत्र-समाजी गायत्री वक अवतरण हुआ था। 'दुर्गा-सप्तशती' में समाधि वैश्य का उल्लेख है, जिनकी साधना से प्रसन्न होकर दुर्गा ने उन्हें दर्शन दिए थे और उनकी इच्छा पर मोक्ष का वरदान दिया था। □

- 9811096352

पुरानी परम्पराएं, परम्परागत व्यवसाय लगभग लुप्तप्राय हैं। रोजगार एवं अर्थोपार्जन के लिए लोग अपने मूल-स्थानों को छोड़कर देश-दुनिया के भिन्न भागों में बस गए हैं। समाज-समुदाय का एक नया स्वरूप बन चुका है। इस सत्य को स्वीकार करके ही संगठन की बात को आगे बढ़ाना उचित होगा।

व्यवसाय का मनुष्य के मन पर व सामाजिक जीवन पर प्रभाव पड़ता है, किन्तु मनुष्य के बुनियादी गुण इससे बदल नहीं जाते। हममें भिन्नतायें हो सकती हैं, पर समानताएं भी अनेक हैं। यदि हम सार्थक ढांग से परस्पर जुड़ते हैं तो अपने वैयक्तिक, सामाजिक, सामुदायिक व राष्ट्रीय जीवन में गुणात्मक परिवर्तन ही लाते हैं, जो हम सबके उत्कर्ष को बल देगा। □



कन्नौजी लोक-कला

- डॉ. प्रेम कुमारी मिश्रा 'रश्मि'

निशा की गहन कुहेलिका को वेध धरा पर अवतरित प्रथम रश्मि-आलोक की भाति ही लोक-कला भी सुदूर अंतीत के आदि मानव की भावनाओं की कलात्मक किन्तु सहज अभिव्यक्ति का नाम है। यह उतनी ही आदिम है जितना कि आदिम मानव। प्रगैतिहासिक काल के मानव ने ऊपर आकाश और नीचे पृथ्वी के बीच निवारण रहकर जो कुछ अपनी आँखों से देखा और जाना उसे उसने गुफाओं की प्रस्तर भित्तियों पर उस समय उपलब्ध कोयला, पितॄरुद्या, गेरू आदि माध्यमों से अनायास ही उतारना प्रारम्भ कर दिया था। मानव-सभ्यता के विकास के साथ ही यही लोक-कला भले ही शास्त्रीयता के हाथों कृत्रिमता के गुलदस्तां में चित्रकला के नाम से अभिजात वर्ग के कला-कक्षों को सुशोभित करने लगी हो, फिर भी अकृत्रिमता के कानन में लोक-कला का स्वतः प्रस्फुटित यह वनफूल अपनी नैसर्गिक सहज सुगन्ध बिखेरने में लगा हुआ है। इसे सँवारने के लिए न किसी शास्त्रीय कला में दक्ष माली के हाथों की ज़रूरते हैं और न ही अभिजात वर्गीय हवा और पानी की।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार “‘लोक शब्द का अर्थ जनपद अथवा ग्राम समुदाय नहीं है, बल्कि वह समूची जनता है, जिसके व्यावहारिक ज्ञान आधार पोथियाँ नहीं हैं और जो सरल एवं अकृत्रिम जीवन की अस्थस्त है।’”

‘कन्नौज’ की लोक-कला से हमारा तात्पर्य इस लोक-कला से है जो कन्नौज जनपद ही नहीं अपितु इसकी परिसीमा में वे सभी जनपद आ जाते हैं जहाँ ‘कन्नौजी बोली’, बोली जाती है - जैस कानपुर, कानपुर देहात, उत्त्राव, हरदोई, मैनपुरी, इटावा, फर्स्टखाबाद जनपद आदि। इसलिए इन जनपदों को कान्यकुञ्ज क्षेत्र के अन्तर्गत माना जाता है। इस क्षेत्र की लोक-कला में जन्म-मरण, नामकरण, विवाह, तीज-त्योहार आदि पर मनोवाचित देवात्माओं को विभिन्न आकारों, रूपों में प्रस्तुत करने की परम्परा प्राचीन समय से लेकर आज तक विद्यमान है। समतल भूमि पर अथवा गृह-भित्तियों तथा कागजों पर चावल के लेप, गेरू, कोयला, खड़िया के रंगों से यह चित्रण विभिन्न अवसरों पर किया जाता है। इसके अतिरिक्त लोक-कला के अन्य माध्यमों - यथा प्रस्तर, मिट्टी, काष्ठ, गोबर, बेसन, आटा आदि से भी यह अनेकानेक रूपों में आज भी प्रचलित है।

कन्नौज की लोक-कला की परम्परा अति पुरातन है, जिसकी सम्यक् विवेचना के लिए इसे हम चार भागों में वर्गीकृत कर सकते हैं:-

1. धार्मिक भावनाओं पर आधारित लोक-कला
2. मनोरंजक भावनाओं पर आधारित लोक-कला

कान्यकुञ्ज मंच

3. व्यक्तिवादी सांस्कृति भावनाओं पर आधारित लोक-कला

4. व्यापारिक भावनाओं पर आधारित लोक-कला

धार्मिक भावनाओं पर आधारित लोक-कला

क लाचार्य रामचन्द्र

शुक्ल के अनुसार - “‘लोक-कला धर्म की एक इकाई है जिसे व्यक्ति

अपनी धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करने में प्रयोग में लाते हैं।’’ सत्य तो यह है कि हर त्योहार, पर्व, जन्म विवाह, होली, दीपावली, करवा चौथ, नागपंचमी, अहोई आठे, देवोत्थान एकादशी, भाईदूज आदि के अवसर पर समतल भूमि, दीवार या कागज पर प्रतीकों, बिम्बों, ज्यामितीय आकारों में इन्हीं धार्मिक भावनाओं को चित्रित करने की प्रथा आज भी कन्नौज क्षेत्र में प्रचलित है। इन भावनाओं के पीछे अपने इष्ट देवी एवं देवता से मंगलकामना निहित रहती है।

कन्नौज क्षेत्र में आज भी प्रचलित इन धार्मिक भावनाओं पर आधारित लोक-कला के विविध रूपों की प्राचीनता बाणभट्ट द्वारा लिखित ‘कादम्बरी’ और ‘हर्षचरित्र’ नामक ग्रन्थों के कुछ उदाहरणों द्वारा समझी जा सकती है। ‘कादम्बरी’ में ‘सूतिका गृह’ का वर्णन करते हुए बाणभट्ट ने लिखा है -

“‘लोकाचार्य में निपुण दो बूढ़ी स्त्रियां द्वारा के पक्खों पर गोबर से सतियों (स्वास्तिक) की पाँत बना रही थीं जिन पर चित्र-दाब पद्धति से कौड़िया लगायी ज रही थीं। कुसुम और केशर की लाल बुँदिकियाँ,..... हल्दी से रंगे हुए पीले वस्त्र पहने भगवती घष्टी देवी की मूर्ति एक ओर और दूसरी ओर नाचते हुए मोर पर बैठे... कातिंकेय की मूर्ति बनायी गयी थी। दोनों पाशों पर सूर्य और चन्द्र की आकृति बनायी गयी थी।’’

विवाहोत्सव पर होने वाले अनुष्ठानों का वर्णन करते हुए बाणभट्ट ने राज्यश्री के विवाह के सन्दर्भ में लिखा है:-

“‘चतुर चित्रकार मांगलिक चित्र लिख रहे थे। खिलौने बनाने वाले मछली, नारियल, केला, सुपाड़ी के वृक्ष आदि के भाँति-भाँति के खिलौने बना रहे थे।... कुछ, जो विचित्र फूल-पत्तियों के चित्र बनाने के काम में निपुण थीं, सफेदी लिये हुए कलशों और कच्ची सरइयों पर माँड़ रही थीं अर्थात् चित्रकला बना रही थीं।’’

‘करवा चौथ’ के चित्र में सूर्य, चन्द्र, तुलसी, का घरौंदा, गंगा-यमुना, दीप-स्तस्थ, हाथी, मोर, कलम, करव, दर्पण, कंधी, बिछिया, स्वास्तिक के साथ ही बीच में पुतरिया (नारी



आकृति) को बनाया जाता है। शिव-पार्वती तथा गणेश के चित्रण के साथ ही सीढ़ियों पर चढ़े एक बालक को हाथ में दीपक और चलनी लिये दर्शाया जाता है। ‘पुतुरिया’ सुहागन नारी का प्रतीक है, पार्वती अखण्ड सौभाग्यवती, महादेव देवाधिदेव के रूप में चित्रित किये जाते हैं।

इसी प्रकार ‘दीपावली’ पर दीवार पर चित्र बनाये जाते हैं। इसमें मध्य की प्रतिमा श्रीलक्ष्मी की ही होती है। सूर्य, चन्द्र, हाथी, कमल, तुलसी, गंगा-यमुना, स्वास्तिक आदि के अतिरिक्त चार व्यक्तियों को घृत-क्रीड़ा करते चित्रित किया जाता है। इस चित्र में एक ओर दो पुरुषों को डाली उठाए हुए दिखाया जाता है जिसमें रो दो हुए पिंजड़े में ‘क्षेमकारी’ पक्षी को बनाया जाता है। महिलायें पक्षी को शगुन पक्षी के रूप में शुभ मानती हैं।

‘दीपावली’ के अगले दिन ‘गोधना’ का पर्व मनाया जाता है जो ‘गोवर्धन’ का देशज शब्द है। इस दिन आँगन में गोबर से दो स्थूल पुतले बनाये जाते हैं। इनकी आँखें कौड़ियों से बनायी जाती हैं व पेट में नाभि का बड़ा वृत्ताकार गड्ढा बनाया जाता है जिसमें पूजन के समय मट्ठा, कढ़ी, चावल आदि भरा जाता है। इसके सिरों में बालों के लिए गॉडर की सींके गाड़कर एक दूसरे से बाँध दी जाती है। इन पुतलों के अतिरिक्त गोबर से ही गप-शप करती, चक्री चलाती महिलाओं का समूह भी बनाया जाता है। सांयं इस निर्मिति को उस घर में, एक बड़े स्थूलकाय पुतले के रूप में बनाकर घर के बाहरी द्वार पर बैठा दिखा जाता है। इसमें सिर के बालों के लिए सींकें व शरीर के बालों के लिए बीच-बीच में रुई के छोटे-छोटे गोले गाड़ दिये जाते हैं। नाभि इनती बड़ी बनायी जाती है जिसमें प्रज्जलित दीप आसानी से आ सके। इसे कर्तिकी पूर्णिमा को विसर्जित किया जाता है।

यम द्वितीया अर्थात् दीपावली के तीसरे दिन ‘भैया दूज’ लिखने का प्रचलन है। यह चित्र आँगन में गोबर से लीपकर चावल के ऐपन द्वारा चित्रित किया जाता है। इसके मध्य में यम और उसकी बहन यमुना को प्रमुखता से लिखा जाता है, जो भाई-बहन के स्नेह का प्रतीक है। चित्र में अकित गणेश और हनुमान, मांगलिक चित्रों की ध्वनित भावनाओं में बहन संजीवनी व भाई त्रिशूल, फरसा व गदा का प्रतीक हैं। चित्र में दर्शित शिव-पार्वती अखण्ड सौभाग्य और शक्ति के प्रतीक हैं। इस चित्र में यमराज को अन्ना भैंसा पर आरूढ़ दिखाया जाता है, जो मानों अपनी यमुना की रक्षा हेतु अग्रसर है। तुलसी का पौधा प्रेम व पवित्रता, धनुष-बाण शक्ति व खड़ाऊँ ज्ञान के प्रतीक रूप में चिन्हित किये जाते हैं।

आँगन के मध्य में विस्तृत आकार की देवोथान एकादशी की अल्पना डालने का प्रचलन आज भी विद्यमान है। धार्मिक मान्यता के अनुसार कार्तिक शुक्ल एकादशी को ही चार माह तक क्षीर-सागर में शयन कर रहे भगवान् विष्णु का जागरण होता है। मान्यता है कि भगवान् विष्णु के साथ ही समस्त देवता भी चार माह तक शयन करते हैं। और इसी तिथि को पुनः जनकल्याण हेतु जगकर सक्रिय हो जाते हैं। इस अल्पना के मध्य में भगवान् के

चरण हैं और उसकी परिधि में सूर्य व चन्द्र, ओज और शक्ति के प्रतीक; तुलसी भक्ति; सरस्वती ज्ञान व विद्या की प्रतीक हैं। अल्पना के नीचे की ओर एक ‘नार’ - बनाया जाता है जो सम्भवतः उदरस्थ शिशु के आहार ग्रहण की नलिका है। यह चित्र भी गोबर से लीपकर फिर चावल के लेप से चित्रित किया जाता है। चैत से लेकर फाल्गुन तक होने वाले छोटे-बड़े त्योहारों के अतिरिक्त पुत्र अथवा स्त्री के मांगलिक संस्कारों के अवसर पर अनेक प्रकार के चित्रणों का विधान है। वैवाहिक अवसरों पर ‘जुईत’ लिखने की परम्परा इनमें से एक है। ‘जुईत’ को पहले भित्तियों पर, फिर कपड़े पर और अब कागज पर लिखने का चलन है। इस आलेखन में समस्त देवी-देवताओं के साथ वर-वधू बारात, घर-द्वार, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे आदि का भी अंकन किया जाता है। चित्र में सबसे नीचे मध्य में वधू को हाथ में पृष्ठ अथवा जौ की बाली लिये हुए चित्रित किया जाता है। कहीं-कहीं हाथों में तोते भी दे दिये जाते हैं। वधू के दोनों ओर कलश तथा विभिन्न आकार की सौन्दर्य सम्बर्द्धक सामग्रियों का अंकन किया जाता है। इन चित्रों को स्त्रियाँ ही बनाती हैं। बनाने वाली स्त्री अति पूजनीय मानी जाती है। उसे चित्र पूरा होने पर मेवा-मिठान वस्त्र-आधूषण आदि देकर ससम्मान विदा किया जाता है। विवाहोपरान्त वधू आगमन पर वर-वधू सर्वप्रथम इस चित्र की पूजा करते हैं।

2. मनोरंजक भावनाओं पर आधारित लोक-कला

मानव जन्मजात सौन्दर्य प्राणी है। वह अपने आस-पास के रहन-सहन को और निजी जीवन को मनोरंजन से भरने के लिए सदा से सचेष्ट रहा है। बड़ों के लिए जहाँ दीवारों की सजावट, द्वार के पक्खों की सजावट, बिस्तर, मेजपोश तकिये की सजावट





महत्वपूर्ण है वहाँ बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के मनोरंजन जुटाने की प्रक्रिया सदा से चलती चली आ रही है।

कन्नौज की मनोरंजन भावनाओं पर आधरित लोककला में ‘टेसू’ और ‘साँझी’ का खेल अति प्रचलन में है। दशहरा के पूर्व कन्नौज क्षेत्र में बालकों द्वारा टेसू खेला जाता है। सम्भवतः यह किसी वीर पुरुष की स्मृति में मनाया जाता है। इसके तीन पैर, दो हाथ और एक सिर होता है। तीन साधारण लकड़ियों को जोड़ कर उन पर मिट्टी थोपकर मुख और हाथ के आकार बनाये जाते हैं। चावल के घोल से इसे रंगा जाता है और फिर तरह-तरह की चित्रकारी की जाती है। मध्य में जहाँ तीनों लकड़ियाँ जुड़ती हैं वहाँ पर एक दीपक जलाया जाता है। इसके विपरीत बालिकाओं द्वारा खेली जाने वाली ‘साँझी’ कुम्भकार द्वारा निर्मित, जाली कटी हुई एक हाँड़ी होती है, जिसके भीतर एक प्रज्वलित दीप रख दिया जाता है। टेसू और साँझी का खेल आठ दिनों तक चलता है। तत्पश्चात् दोनों बड़े धूमधाम से बैवाहिक बधन में बाँध दिये जाते हैं।

इसी प्रकार नागपंचमी को ‘गुड़िया’ पीटने का प्रचलन भी है। सुबह से ही बालक नीम अथवा शीशम के पेड़ों से लम्बे-लम्बे ‘गोजे’ काटकर उनकी त्वचा को छील देते हैं फिर उन पर काले और गेरू के रंग से जेबा की तरह पटिट्याँ बना देते हैं। गोजों की पुछिया पर की पत्तियाँ छोड़ दी जाती है उधर बालिकाएँ नये व पुराने कपड़ों से गुड़ियों का निर्माण करती हैं। उनके सिर पर बाल और चेहने पर आँख, नाक और मुँह बनाती हैं और फिर कोई छोटे कपड़े की औढ़नी से ओढ़ा देती है। दिन चढ़ने के बाद सभी बालक गोजे लेकर गाँव के किसी पवित्र स्थान पर पहुँच जाते हैं और बालिकायें गुड़ियाँ लेकर। इसी के साथ बालिकाएँ अपने साथ ‘कोहरी’ (उबले चने और गेहूँ) भी ले जाती है। इधर बालिकाएँ गुड़िया फेंकती हैं और उधर बालक अपने गोजों से इन गुड़ियों को पीटना शुरू कर देते हैं। पूरे गाँव के कई स्थलों पर इसी प्रकार क्रम चलने के बाद अन्त में गाँव के बाहर एक स्थल पर बालिकाएँ बालकों को ‘कोहरी’ भेट करती हैं।

3. व्यक्तिवादी सांस्कृतिक भावनाओं पर आधारित लोक-कला

लोक-कला में व्यक्तिवादी सांस्कृतिक कला भी समाहित है। यह सामूहिक और सामुदायिक भावनाओं पर आधारित होती है। एक जाति में प्रचलित परम्पराओं के विविध रूप लोकनृत्य, लोकगीत, लोक परिधान के माध्यम से प्रकट होते हैं। कन्नौज क्षेत्र में यत्र-तत्र बसी जन-जातियों में यह समाज के अन्य वर्गों से भिन्न रूप में प्रचलित हैं। जैसे ‘बंजारे’ जाति के गीत, नृत्य और परिधान अपने ढंग से अनूठे होते हैं।

व्यवसाय आधारित लोककला

मिट्टी के खिलौने यहाँ की पुरातात्त्विक निधि हैं। इनको सुविधानुसार तीन वर्गों पशु पक्षियों की आकृतियां, मनुष्यों की आकृतियां और देवी-देवताओं की आकृतियों में विभाजित किया जा सकता है। पशुओं में अधिकांशतः बैल, घोड़ा, ऊंट, भेड़, कुत्ता, सूअर, बकरा, तथा पक्षियों में नाना प्रकार की चिड़ियाँ पुरातात्त्विक खोज के परिणाम हैं। चिड़ियों में पहिए भी लगे होते हैं और उनके सिर धड़ से अलग होते थे जो संभवत धागे आदि से जुड़ने पर हिलते रहते होंगे।

मनुष्यों की आकृतियों में काल क्रमानुसार भिन्नता दिखाई देती है। कुषाणकालीन मानवाकृतियां आकर्षण हीन हैं। गुस्कालीन मानवाकृतियां अधिक कलात्मक हैं। नारियों का केशविन्यास, अर्द्ध-पिंडाकर उरोजों पर पड़ी लॉकेट, कानों में कुंडल, कमर में करधनी इसका प्रमाण है कि इस क्षेत्र में सभ्यता के प्रथम आलोक के साथ ही मानव समाज में सौंदर्य बोध का उच्च मापदण्ड रहा है।

‘नैगमेस’ नाम की देवी का मुख बकरी के समान बनाया जाता है। संभवत देवी की पूजा सन्तानोत्पत्ति के अवसर पर की जाती थी। इसी प्रकार क्षेत्र में मातृदेवियों के बनाने का प्रचलन भी रहा है। पूजा हेतु अनेक प्रकार के दीपक, मिट्टी द्वारा निर्मित वस्तुओं में गौलियां, गेंद, चक्की, झुनझुने आदि का निर्माण भी किया गया।

कन्नौज की लोक कला की एक समृद्ध परंपरा आदि काल से आज तक कुछ परिवर्तन के साथ न्यूनाधिक रूप में विद्यमान है। आजादी के बाद औद्योगिक और शहरीकरण की चकाचौथ में गांवों का मौलिक रूप जाता रहा। गांव में बड़ी तेजी से बाजार पहुँच रहे हैं। शहरों के डिल्बाबांद पदार्थों और कैलेंडर की पहुँच गांवों में उनकी संस्कृतियों को नष्ट कर रहे हैं। करवा चौथ, अहोई और दीपावली के कैलेंडर बाजार में उपलब्ध हैं। अब गांव-गांव नहीं रह गए। उनकी संस्कृति का इस तेजी के साथ लुप्तिकरण होता जा रहा है कि आश्र्वय नहीं है कि जनता की यह कला एक दिन जनता की आवाज न रहकर मौन में विलीन हो जाए। □

-9235335321

निर्वाण - दिवस (10 जनवरी)

संस्थापक सम्पादक कीर्तिशेष आचार्य बालकृष्णा पाण्डेय
(अधिन कृष्ण 14, सम्वत् 1980 - पौष शुक्ल 4, सम्वत् 2075)



पूर्ण है वह, पूर्ण है यह, पूर्ण से निष्पत्र होता पूर्ण है,
पूर्ण में से पूर्ण को यदि दे निकाल, शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

कान्यकुञ्ज मंच (पत्रिका) परिवार
वासन्ती-बालकृष्णा सेवा संस्थान, कानपुर-11

Dr. Alok Dikshit

MBBS, MD, FRHS
Pathologist



Dr. Archana Dikshit

MBBS, MD, DMRE
Radiologist Ultrasonologist



Panel Companies

| | | |
|---------------------------|-----------------------|-----------------------|
| AEGON LIFE | CIMAP | PUNJAB NATIONAL BANK |
| ALLAHABAD BANK | COLGATE | RAILWAY HOSPITAL |
| APPC | DR REDDY'S LABORATORY | RAYMOND |
| ASIAN PAINTS | EASY DAY | RELIANCE |
| BAJAJ ALLIANZ LIFE | FUTURE GROUP | RESERVE BANK OF INDIA |
| BASF | GRAMIN BANK | ROYAL SUNDERAM LIFE |
| BIG CITY | GREAVES COTTON | RPG-KEC INTERNATIONAL |
| BIRLA SUNLIFE | HDFC LIFE | SASHASTRA SEEMA BAL |
| BSNL | HPCL | SBI LIFE |
| CDRI | ICICI LOMBARD | SLEEK INTERNATIONAL |
| CEAT | LIBERTY | SMBC |
| CENTRAL WAREHOUSING CORP. | LIC OF INDIA | VIDEOCON |
| CGHS | NFL | |



8/5, Vikas Nagar, Lucknow - 226022
<http://www.visitddc.com>

26.888038N.80.965751E Phone : (0522) 2320036, 4043111, 2335673 Home Collection : 94535 12755, 99354 81325, 9919959779, 77839 57120

Timings: Mon-Sat : 8.30 am to 8.30 pm Sun : 8.30 am to 2.30 pm Ambulance Available

होलीमैन ऑफ बनारसः स्वामी भास्करानन्द सरस्वती

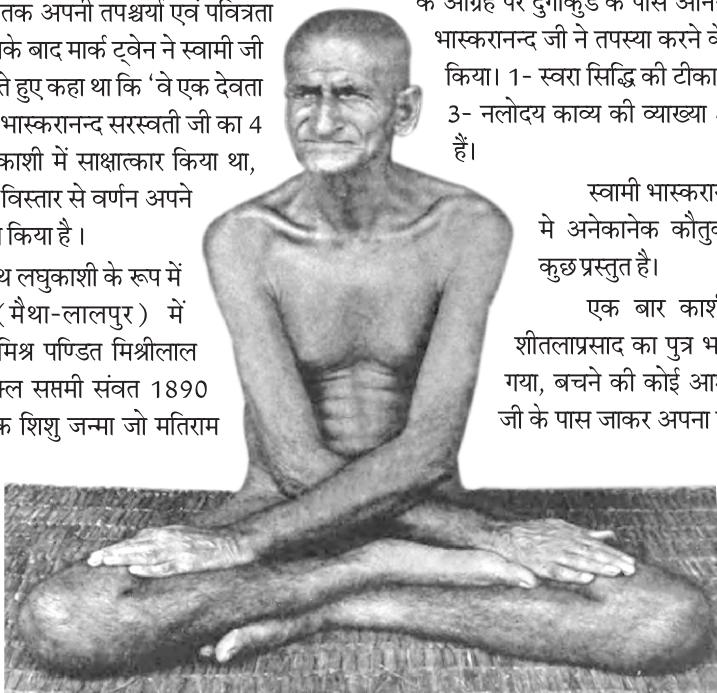


- अनूप कुमार शुक्ल, सचिव, कानपुर इतिहास समिति
कृश्ण सुन्दरम् ह्यस्थिशेषं विवस्त्रं निरीहं जगदपूज्य मान्यवदाम्य ।
परब्रह्म रूपं दयातीर्थं भूतं भजे भास्करानन्द आनन्दकन्दम् ॥

कोलकाता के टाउनहाल मे पत्रकारों के प्रश्नों के उत्तर देते हुए अमेरिका के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार मार्क ट्वेन ने कहा था ‘स्वामी जी (भास्करानन्द सरस्वती) ऐसे व्यक्ति हैं जो भारतवर्ष के एक छोर से दूसरे छोर तक अपनी तपश्चर्या एवं पवित्रता के लिए पूजे जाते हैं’। इसके बाद मार्क ट्वेन ने स्वामी जी का दिग्म्बर चित्र दिखलाते हुए कहा था कि ‘वे एक देवता हैं’। मार्क ट्वेन ने स्वामी भास्करानन्द सरस्वती जी का 4 फरवरी 1896 ई0 को काशी में साक्षात्कार किया था, स्वामी जी से की भेंट का विस्तार से वर्णन अपने ग्रन्थ ‘मोर ट्रैम्पस एड्राड’ मे किया है।

कानपुर जनपदस्थ लघुकाशी के रूप में ख्यात मैथा, मारग (मैथा-लालपुर) मे कान्यकुञ्ज हिमकर के मिश्र पण्डित मिश्रीलाल मिश्र के घर आश्चिन शुक्ल सप्तमी संवत 1890 विं (1833ई0) मे एक शिशु जन्मा जो मतिराम और कालान्तर मे

स्वामी भास्करानन्द सरस्वती के रूप में ख्यात हुआ। जन्म के समय तीन तेजस्वी सन्त प्रकट हुए और पांडित मिश्रीलाल जी से कहा कि आज



ब्रह्मबेला में आपको पुत्रलाभ होगा जो करोड़ों आसजनों को आनन्द देगा, आप शिशु का प्रथम दर्शन मुझे करायेगे। जन्म होने पर सन्तों ने शिशु का मुखदर्शन कर हवन किया और विलुप्त हो गये। शिशुजन्म और सन्तों के पूजन की कौतुकपूर्ण घटना पूरे गांव मे फैल गई। लोग शिशु को देखने आने लगे। बालक का नाम मतिराम रखा गया। मतिराम जी का शिक्षा-दीक्षा के बाद शीघ्र विवाह कर दिया गया लेकिन उनके मन में वैराग्य जन्म ले चुका था। पुत्र जन्म के बाद तरुण मतिराम ने गृहत्याग कर दिया। विविध तीर्थों का ध्रमण करते हुए महाकाल की नगरी उज्जैन पहुंचे और कठोर तपश्चर्या की। इसके बाद स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से दीक्षा प्राप्त कर गुरुप्रदत्त स्वामी भास्करानन्द सरस्वती सुनाम को ग्रहण

किया। स्वामी भास्करानन्द जी तीर्थ ध्रमण करते हुए जन्मभूमि मैथा का परिदर्शन कर असनी मे प्रवास करते हुए काशी आ गये। काशी मे दिग्म्बर स्वामी जी की तपश्चर्या की चर्चा होने लगी। उन्हे ‘ज्येष्ठ मास की तस बालू हो या माघ-पूस की कड़के की ठंड दोनो एक समान थी। इसके बाद अमेठी नरेश के आग्रह पर दुग्धकुण्ड के पास आनन्दबाग मे रहने लगे। स्वामी भास्करानन्द जी ने तपस्या करने के साथ ग्रंथों का भी प्रयाण किया। 1- स्वरा सिद्धि की टीका, 2- दशोपानिषद की टीका, 3- नलोदय काव्य की व्याख्या 4- अनुभूतिविवरण प्रमुख हैं।

स्वामी भास्करानन्द सरस्वती जी के जीवन मे अनेकानेक कौतुकपूर्ण घटनाये है उनमे से कुछ प्रस्तुत है।

एक बार काशी के ब्रह्मनाल मुहल्ले के शीतलाप्रसाद का पुत्र भवन की ऊपरी छत से गिर गया, बचने की कोई आशा नहीं थी। उन्होंने स्वामी जी के पास जाकर अपना दुख बताया। स्वामी जी के चरणों पर से शीतलाप्रसाद के इकलौते पुत्र को जीवनदान मिला।

एक बार प्रयाग की पुस्तक वे शया जानकीबाई जो छपनछुरी नाम से ख्यात

थी। वह स्वामी जी के पास आई। कण्ठ की रुधिता की बात कही। स्वामी जी ने उससे भक्ति संगीत सुनाने को कहा और कहा कि जाओ तुम्हारा गला ठीक हो जायेगा। वापस आने पर उसके घर मे घुसे चोर ने चाकू से प्रहर कर दिया। इस प्रहर से उसका कण्ठवरोध समाप्त हो गया और मधुर गीत गाने लगी।

काशी के तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर की पत्नी लन्दन में बीमार थी, लेकिन कलेक्टर साहब को कोई समाचार नहीं मिल रहा था, उसने परेशान होकर अपनी व्यथा स्वामी जी से कह सुनाई। स्वामी जी ने कहा कि तुम्हारी पत्नी सकुशल है शीघ्र कुशलता का समाचार मिलेगा। उसी समाह कलेक्टर साहब को पत्नी की कुशलता का पत्र मिला।

काशी के प्रसिद्ध होम्योपैथ डा. ईश्वरचन्द्र चौधरी का पुत्र रोग से आक्रान्त था। स्वामी जी के दिए फल के सेवन से वह भलाचंगा हो गया। इसी प्रकार डा. चौधरी की भगिनी को जब कालरा हुआ तो वह क्षीण हो गई, जीवन का आश नहीं रही। स्वामी जी ने फूल दिया, उसके सूँघने मात्र से वह निरोगी हो गई।

अयोध्यानरेश सर प्रतापनारायण सिंह ने काशी में कई दिनों तक स्वामी जी का सत्संग किया फिर आवश्यक कार्य की सूचना आने पर अयोध्या वापस जाने की अनुमति लेने स्वामी जी के पास गये तो स्वामी जी ने उन्हें रोक दिया। वह अनमने मन से रुके लेकिन बाद में पता चला कि जिस ट्रेन से अयोध्या नरेश को जाना था, वह ज्ञानपुर में दुर्घटनाग्रस्त हो गयी।

20 दिसम्बर 1898 को भारत सरकार की सेना के जंगी लाट (कमान्डर इन चीफ) सर विलियम लाकहर्ट ने स्वामी जी का दर्शन किया। जंगीलाट ने अपनी बहादुरी के किस्से भी सुनाये। स्वामी जी ने मुस्कराते हुए पास में रखी पेन्सिल को जंगीलाट से उठाने को कहा। महद्दा आश्र्य जंगीलाट से वह पेन्सिल नहीं उठी, न टस से मस हुई। स्वामी जी ने कहा कि तुम्हे युद्ध में जो जयलाभ मिला है। वह जय-पराजय कर्ता केवल एक ईश्वर है।

डरो मत सामना करो

स्वामी विवेकानंद जी ने वाराणसी प्रवास में अपने गुरु द्वारा जो नाम सुने थे, उनसे थेंट करने को वह निकल पड़े। कई दिनों के श्रम के बाद भी तैलंग स्वामी के योग निद्रा में होने के कारण वार्ता ना हो सकी। अतः स्वामी विवेकानंद जी दुर्गकुंड स्थित आनंदबाग में विश्वविद्यालय संत स्वामी भास्करानंद सरस्वती जी के दर्शन को गये। स्वामी भास्करानंद जी भक्तों को उपदेश दे रहे थे उन्होंने तरुण संत की परीक्षा के लिए काम व कांचन का प्रसंग लाकर बोले- काम व कांचन को अब संत भी नहीं छोड़ पा रहे हैं। स्वामी विवेकानंद जी उठ कर बोले, 'नहीं, संत द्वारा काम-कांचन परित्याग ही उसका आभूषण है। उस कड़ी में मेरे गुरुदेव हैं'। स्वामी जी की निर्मीकृत से प्रभावित हो स्वामी भास्करानंद जी ने कहा कि इनके कंठ में सरस्वती है। यह शीघ्र ही विश्व प्रसिद्ध होगें। यही हुआ। स्वामी विवेकानंद जी ने आभाव व्यक्त करते हुए संस्कृत में दो पत्र भी लिखे। स्वामी विवेकानंद ज्यों ही आनन्दबाग आश्रम से बाहर निकले तो उन्हें बंदरों ने दौड़ा लिया। स्वामी जी आगे-आगे और बन्दर सेना उनके पीछे। अचानक आनंद बाग आश्रम के द्वार की तरफ से आवाज आई, 'डरो मत - सामना करो'। विवेकानन्द वहीं रुक गए और बंदरों की ओर मुड़े तो बन्दर पीछे भागने लगे। इस कौतुकपूर्ण शिक्षाप्रद घटना के पीछे भी भास्करानंद सरस्वती थे।



जिस प्रकार मैंने तुम्हारी शक्ति का हरण कर लिया और तुम पेन्सिल नहीं उठा सके। इसलिए जय पराजय कर्ता ईश्वर है, हम उस पर निर्भर है। उस समय जंगी लाट के साथ उसकी पत्ती व सैन्य सचिव कर्नल वी डफ एवं काशी के कलेक्टर व कमिशनर भी थे।

भारतवर्ष के राजाओं में दरभंगानरेश लक्ष्मीश्वर सिंह, काशीनरेश ईश्वरीप्रताप सिंह, अयोध्यानरेश प्रतापनारायण सिंह अमेठीनरेश लालमाधव सिंह, बड़हर की रानी वेदशरणि कुँवरी, नगोद नरेश यादवेंद्र सिंह, भिनगा नरेश उदयप्रताप सिंह चौधरी महादेव प्रसाद व भूदेव मुखोपाध्याय प्रमुख भक्त थे।

सन्तों में तैलंग स्वामी, लाहिड़ी महाशय, विशुद्धानन्द सरस्वती, विजयकृष्ण गोस्वामी, स्वामी विवेकानंद प्रमुख थे।

स्वामी जी के विदेशी भक्तों में बवीन विक्टोरिया के बेटे एडवर्ड ससम, जर्मन सम्प्राट विलहेल्म द्वितीय व प्रिन्स विस्मार्क, रूस के जार निकोलस, वेल्जियम सम्प्राट डॉ. पाल डायसन व ईसाई धर्माचार्य डॉ. फेवर बर्न व जेम्स लाटूश प्रमुख थे।

देश व विदेश सभी स्थानों पर आपके स्मारक बने हैं। कानपुर में मैथा, रुरा, नर्वल, अमौर में मन्दिर हैं।

अपने जीवन के उत्तरार्थ में स्वामी भास्करानंद जी मैथा पथरे और गयाप्रसाद खत्री द्वारा बनवाये गये तीन घाटों से युक्त सरोवर, उद्यान और मन्दिर का अवलोकन किया और उचे मंच से भक्तों को भी सम्बोधित किया था और उसी भीड़ से धीकर भक्त लक्ष्मण मल्हाह को खोजा और काशी ले आए। देह त्याग से पूर्व स्वामी जी ने अपने अन्तिम विचारों को बैरिया बलिया के पद्मदेवनारायण से प्रकाशित कराया था। सन् 1899 के जुलाई मास के प्रथम सप्ताह में स्वामी जी उदर रोग से ग्रस्त हुए और पूर्व घोषित तिथि 9 जुलाई 1899 (अषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा संवत् 1956 विं) को लक्ष्मण मल्हाह से कहा -

लारे मल्हाह किनारे ले आ,

सरयू तीर भीड़ है भारी, ठहरे है राम लक्ष्मण दो भैया।

भजन सुनते हुए पदमासनस्थ चिरसमाधि में लीन हो गये।

भारतजीवन पत्र के 17 जुलाई 1899 अंक में लिखा गया कि 'यह स्वामी महाराज जी का ही योगप्रसाद था कि केवल भारतीय राजा महराजाओं के रत्नजटित मुकुट ही स्वामीजी की चरणद्युति से भास्वर नहीं होते थे, वरन् यूरोप और अमेरिका के बड़े बड़े विद्वान और धनवान जन बड़ी नम्रता और श्रद्धा भक्ति से परमपद प्राप्त स्वामी जी के चरण दर्शन से अपने को कृतकृत्य मानते थे। यह स्वामी जी महाराज के योगबल ही का प्रभाव था कि विदेशी, विजातीय, विधर्मी जन द्वेषरहित हो कर न तगीव होते थे।'

श्री भास्करानन्द सरस्वतीत, प्रभाकरं नाम सदा मुखाग्रे।

संवर्तते यश्य सदैव रूपं, पराभवं भूमितले न तस्य। □

- 9140237486

ऐसे थे वे लोग

राजर्षि टण्डन उत्तर प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष थे। उनके विरुद्ध एक सदस्य ने अविश्वास की नोटिस दी और उन्होंने त्यागपत्र दे दिया। भारी बहुमत उनके साथ था पर उनका तर्क था कि यदि एक भी असहमति है तो उसके साथ अन्याय होगा। उन सदस्य सहित सबने माना कि हमारा पूरा विश्वास है, तो वे अध्यक्ष बने रहे। प्रश्न यह नहीं है कि विरोध कौन कर रहा है? प्रश्न यह भी है कि हम सतुर्थि क्यों नहीं दे रहे हैं? अखिर हैं तो हमारे उसी देश के जिनकी सुरक्षा का दायित्व हमारे ऊपर है। अगर नेतृत्व स्वयं को राजा मानता है तो हर आंदोलन गलत है। और यदि नेतृत्व लोक को राजा मानता है, तो हर विरोध का हल उनके बीच में बैठ कर निकालना उसका दायित्व है। लोकहृदय इतना विशाल होता है कि वह अपने जननायकों को अपने बीच पाकर ही संतुष्ट हो जाता है। व्योकि आम आदमी विरोध के लिए विरोध नहीं करता। उसे केवल आश्रित चाहिए और वह भी बिचौलियों से नहीं, सीधे मुखिया से। शायद अब या तो राजनेताओं में वह आत्मबल नहीं रहा जो जनता के बीच बैठें या वे लोक को इतना तुच्छ मानते हैं कि उनके बीच बैठने से उनका अपमान होता है। □ (डॉ. लक्ष्मीकांत पाण्डेय)

कानपुर के नर्वल कस्बे के प. रामचरण शुक्ल जी (1847-1917) प्रयाग से प्रकाशित 'पायनियर' प्रेस में सेवारत थे, उन्हीं दिनों हरिवंशराय बच्चन के पिता श्री प्रतापनारायण श्रीवास्तव प्रेस में सुकुल जी के अधीनस्थ नौकरी करते थे। प्रतापनारायण जी संतान न होने के कारण दुबी रहते थे, सुकुल जी ने संतान के लिए प्रतापनारायण को हरिवंशपुराण का पाठ करने को कहा, हरिवंशपुराण का पाठ करने से प्रतापनारायण जी को संतान लाभ हुआ। सुकुल जी से पैसा लेकर संतान के संस्कार कराये और सुकुल जी के निर्देश पर संतान का नाम रखा हरिवंश राय। बच्चन नाम से उन्हें घर में पुकारा जाता था।

हरिवंशराय बच्चन ने 'क्या भूलूँ क्या याद करुँ' किताब में लिखा है कि मैं अपने नाम के रहस्य के लिए बहुत सारे हरिवंशपुराण के पाठ देखे। उन्होंने लिखा है कि प. रामचरण शुक्ल, विश्वप्रसिद्ध स्वामी भास्करानंद सरस्वती के शिष्य थे बाद में स्वामी रामतीर्थ का शिष्यत्व ग्रहण किया। सुकुल जी के ग्रंथ 1- ग्यान पदावली ,2- वेदान्त चन्द्रिका, 3- चरण विनोद (दो भाग), 4-

जननी विरह उच्छ्वास प्रमुख है। जननी विरह उच्छ्वास को बच्चन जी ने हिन्दी साहित्य का पहला शोक गीत भी बताया। सुकुल जी हिन्दी व ऊर्दू में कविताएं करते थे। आपकी मैत्री प. मोतीलाल नेहरू से थी। सुकुल जी की कोठी प्रयाग में कर्नेलंगंज चौराहे पर और नर्वल कानपुर में थी। नर्वल का भास्करानंद इन्टर कालेज सुकुल वंश की कीर्ति ग रहा है।

प. रामचरण शुक्ल जी के अनुज रायसाहब प. मातादीन जी सुकुल इन्जीनियर ने बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी का डिजाइन बनाया था वह मदनमोहन मालवीय के सहपाठी थे। मातादीन जी ने सुकुल बोरिंग सिस्टम शुरू किया था आपने आसाम व बंग प्रदेश में कार्य किया, आपने कान्यकुब्ज पत्र का प्रकाशन वाराणसी से किया और श्रीलाल शुक्ल जी के चाचा चन्द्रमोलि शुक्ल को संपादक बनाया था। रोहनिया का भास्कर सरोवर व मातादीन सुकुल इन्टर कालेज कीर्ति फैला रहा है। □

काशी में ब्रौन्स कालिजियेट स्कूल के हेडमास्टर थे पण्डित मथुरा प्रसाद मिश्र और उन्हीं दिनों सर सैयद अहमद खाँ काशी में सदर आला थे। सर सैयद का बेटा महमूद मिश्र जी का चहेता छात्र था। आगे चलकर महमूद प्रयाग हाईकोर्ट के प्रथम भारतीय जज हुए। महमूद अपने गुरु मिश्र जी का सेवानिष्ठ छात्र था। काशी प्रवास में उनके दर्शन को घर जाता और विनम्रता से प्रयाग आने का न्योता दे आता। एक बार मथुराप्रसाद मिश्र त्रिवेणी स्नान कर वापस होने को थे तो शिष्य महमूद की बिनीत प्रार्थना ध्यान में आ गई। मिश्र जी डा. महमूद के शानदार आलीशान बंगले पर पहुँचे। पण्डित जी बंगले में दाखिल हुए तो महमूद ने हर्षित हो स्वागत किया। बातचीत का प्रवाह जब थमा तब उसने देखा कि गुरु जी नंगे पांव हैं। पूछने पर पण्डित जी ने देशी चमरौद्धा जूते को इशारा किया। डा. महमूद ने मिट्टी से सना चमरौद्धा जूता उठाया और कमरे की सबसे ऊँची व शानदार मखमली कुर्सी पर रख दिया। पण्डित जी ने बहुत हो हङ्ग मचाया। महमूद को डांटा कि ये क्या कर रहा है मैले कुचलै जूते ऊँची कुर्सी पर क्यों रख रहा है। डा. महमूद ने तुरन्त जबाब दिया - गुरु जी महराज, इन्हीं जूतियों की बदौलत तो ये आराम कुर्सी नसीब हुई है। यदि आपसे शिक्षा नहीं पाता, तो यह आन-शान कहाँ मिलती। पण्डित जी चुप हो गये। श्रद्धालु शिष्य के कार्य को स्वीकृति देनी पड़ी। ऐसा था औदार्य पण्डित मथुराप्रसाद मिश्र जी का अपने शिष्यों के प्रति! □
- (अनूप शुक्ल)

परंपरा हमारा विरोध नहीं पोषण करती है धरती की तरह।

हम परंपरा की जनीन पर ही खड़े हैं।

यह हमारे ऊपर है कि हम उत्थनन करते हैं या उसकी उर्वरता का रक्षण।

शुभकामनाओं सहित-

डॉ सुरेश चन्द्र पचौरी

अध्यक्ष : ब्रह्म-चेतना, फरीदाबाद

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष : विश्व ब्राह्मण संघ

उपाध्यक्ष : कान्यकुब्ज समाज, फरीदाबाद



सम्पर्क : 9810445762

जाग ब्राह्मण ! एक बार फिर राष्ट्र जगा दे

- डॉ राम प्रसाद मिश्र

ब्राह्मण जिसने सदा सत्य का पंथ दिखाया,
ब्राह्मण जिसने सदा ज्ञान का ध्वज फहराया,
ब्राह्मण जिसने सदा मुक्ति का मंत्र बताया,
ब्राह्मण जिसने पाखंडों से मनुज बचाया।

याज्ञवल्क्य, उद्यालक, श्वेताश्वतर सरीखे,
जीव जगत औ ब्रह्म एक थे शत थे जिनको दीखे,
योग पतंजलि से शत द्रष्टाओं ने सीखे,
अतुल शंकराचार्य तर्क थे जिनके तीखे।
व्यास शब्द-आकश संस्कृति-विश्वकोश हैं,
शाश्वत कलिदास तो रस के अमित कोष हैं,
कमबन, तुलसी, सूर विश्व-वाइमय-तोष हैं,
और रवीन्द्र अधुनातन मानव-ऐक्य-घोष हैं।
कपिलवस्तु के कपिल जिन्होंने बुद्ध बनाया,
था कणाद् ने दर्शन में विज्ञान सजाया,
सर्वप्रथम नास्तिक-दर्शन उद्घोष कराया,
एक अलग औ नया रास्ता था दिखलाया।

हुए अंगिरा, आर्य भट्ठ जैसे वैज्ञानिक
चरक और धन्वन्तरि अजर-अमर गुणखानिक
शुन्य, दशमलव, अंकगणित प्रस्थानक-माणिक-
शब्द ‘हिंदसा’ कहता, “मैं हूँ भारत-स्थानिक !

पाणिक वैश्याकरण-च्याति अब भी आभामय,
राजनीति चाणक्य-सूर्य पाकर ज्योतिर्मय,
रामानुज, चैतन्य भक्ति तारक हैं अक्षय
तिलक कर्म के मर्म राष्ट्र को करते निर्भय।
रामानन्द-सरीखे-पुनरुत्थान-प्रवाहक,
दयानन्द से समतावादी जड़ता-दाहक
नारायण गुरु से अधुनातनता ग्राहक-
मूढ़ लगाते प्रतिक्रिया का लॉछन नाहक।
हुए सुधारक अमर राममोहन-सब जागे,
राम-कृष्ण के भाव समन्वय-रस में पागे,
दलित-चेतना, नारी-जागृति में भी आगे-
फिर भी निंदा करते पापी और अभागे !

मंगल पांडे, नाना साहब, लक्ष्मी बाई,
चाफेकर-बंधुत्रय, ‘बिस्मिल’ की अगुवाई,

अजर-अमर, ‘आजाद’ वीर की कीर्ति सुहाई-
सदा ब्राह्मणों ने स्वतन्त्रता ज्योति जलाई।

त्यागराज संगीत-चत्रकवर्ती औ गायक,
हुए पलुस्कर-संगीतोद्धारक-पायक,
नृत्यकला के भी ब्राह्मण ही अतुलित नायक-
सदा ब्राह्मण रहा कला का भाग्यविधायक।

मालवीय औ आशुतोष शिक्षा-विस्तारक,
कर्वे, राधाकृष्णन से अज्ञान-निवारक
साम्यवाद का भी ब्राह्मण सर्वोपरि धारक,
स्थूल पदों तक पर सर्वोपरि सेवाकारक।

धर्म, संस्कृति, दर्शन का आख्याता ब्राह्मण,
ज्ञान, योग औ भक्ति कर्म व्याख्यता ब्राह्मण,
काव्य, कलाओं का अतुलित निर्माता ब्राह्मण-
सदा रहा है भारत-भाग्यविधाता ब्राह्मण।

नहीं धनिक, अपराधी, हिंसक, शोषक ब्राह्मण,
सदा रहा है मानवता का पोषक ब्राह्मण,
अत्याचार ग्रस्त होकर भी तोषक ब्राह्मण,
भिक्षुक होकर भी सर्वोपरि कोषक ब्राह्मण।

ब्राह्मण निंदा कृतञ्जतामय, निराधार है,
यह विदेश-प्रेरित, संघातक-दुष्प्रचार है,
छुआछूत तो सारे बर्गों का विकार है,
ब्राह्मण करता सर्वाधिक समता-प्रचार है।

भारत की अस्मिता लूट रही षड्यंत्रों में,
अपसंस्कृति छा रही निम्न शासन-तंत्रों में
पलते सत्ताधारी बिजातीय यंत्रों में-
हम परतंत्र हुए पश्चिम के धन-मंत्रों।

जाग ब्राह्मण ! एक बार फिर राष्ट्र जगा दे,
संस्कृतिगती दुरभि सन्धि को दूर भगा दे,
ऐसा ना हो, पंचमार्गों पुनः दगा दे,
ऐसा ना हो, द्रव्यलोभ फिर राष्ट्र उगा दे।

दयानन्द बन छुआ छूत का कोढ़ हटा दे,
रामदास बन सबको बल का मंत्र रखा दे,
हो चाणक्य अनाचारों के शीश कटा दे-
‘एक अमर मानव’ से जग को नई छटा दे। □

भारतीय सेना में ब्राह्मण रेजिमेंट क्यों नहीं?

- मेजर सरस त्रिपाठी, बंगलुरु

इसका उत्तर समझने के लिए हमें कम से कम डेढ़ सौ वर्ष पीछे जाना पड़ेगा। जब अंग्रेज भारत आए और ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल में अपना आधार और किला बनाया, अपनी सेना का गठन प्रारंभ किया तो सैनिकों के रूप में उसने अपने प्रभाव के पृष्ठ प्रदेश (Hinterland) यानि बंगाल, उत्तर प्रदेश और बिहार से भर्तियां शुरू की। क्योंकि उस समय छोटे-बड़े कई राजपूतों के राज्य थे तो राजपूत सैनिक अधिकतर इन्हीं राजाओं के यहां सैनिक/सेनाधिकारी थे। इसलिए ईस्ट इंडिया कंपनी की नौकरी करने के लिए राजपूत/क्षत्रिय वर्ग के लोग बहुत कम गए। अंग्रेजों ने उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल के लोगों की रेजिमेंट का नाम “बंगाल नेटिव इन्फेंट्री” रखा। नाम तो बंगाल नेटिव इन्फेंट्री था लेकिन इसमें सबसे अधिक संख्या उत्तर प्रदेश और बिहार के ब्राह्मणों की थी। ये अंग्रेजों के बहुत वफादार सैनिक थे और बहुत समर्पण से इन्होंने ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा की। लेकिन अद्वारक सौ सत्तावन (1857) की क्रांति के बाद सारा का सारा परिदृश्य बदल गया।

1857 की क्रांति में जिन सैनिकों ने विद्रोह किया था उनमें सबसे अधिक संख्या ब्राह्मण सैनिकों की थी। आपको यह याद रखना जरूरी है कि बलिया के मंगल पांडे ने ही सबसे पहली गोली अंग्रेज सार्जेंट मेजर के ऊपर चलाकर मेरठ छावनी से विद्रोह का बिगुल बजाया था। इसके अलावा 1857 की क्रांति के जो बड़े नेता थे वह (राष्ट्रीय स्तर पर) मुख्यतः ब्राह्मण थे। 1857 के विद्रोह के तीन सबसे प्रमुख नेता धूधू पंत (कानपुर में “देश निष्कासन” की सजा भोग रहे मराठा साम्राज्य के भूतपूर्व पेशवा), तात्या टोपे और झांसी की रानी लक्ष्मी बाई (मराठी ब्राह्मण मोरो पंत की बेटी) थी। यह तीनों ब्राह्मण नेता थे। यों तो इस विद्रोह में कुंवर सिंह और लखनऊ के नवाब भी शामिल थे, पर उनका प्रभाव अपनी अपनी रियासतों तक सीमित था।

बहुत संघर्ष करके और स्थानीय राजाओं की सहायता से अंग्रेजों ने किसी तरह 1857 की क्रांति को कुचल दिया। लेकिन 1857 की क्रांति के बाद दो प्रमुख घटनाएं हुईं: एक, भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के कब्जे वाले सारे क्षेत्र “ईस्ट इंडिया कंपनी” के परमाधिकार से निकाल कर crown (इंग्लैंड के राजा/रानी यानि ब्रिटिश सरकार) के अधीन कर दिये गये। दूसरा, पूरी की पूरी भारतीय ब्रिटिश सेना (अंग्रेजों की कमान में भारतीयों की सेना) का पुनर्गठन किया गया। उस क्रांति को कुचलने में जिन राज्यों/क्षेत्र/वर्ग के सैनिकों ने उनका साथ दिया उनके नाम से उन्होंने रेजीमेंट बनाई और सेना का पूरी तरह से पुनर्गठन किया। 1857 की क्रांति को दबाने में सबसे बड़ा सहयोग उन्हें सिखों और राजपूतों से मिला। अधिकतर देशी रियासतें क्षत्रिय शासकों की थीं और अंग्रेजों के अधीन थीं। इसलिए इन सभी जातियों के नाम की रेजीमेंट है और उनकी भर्ती इस रेजीमेंट में एक सकलूसिवली यानी

अनन्य रूप से होती है। राजपूत रेजीमेंट, डोगरा रेजीमेंट, राजपूताना राइफल्स, सिख रेजीमेंट, सिख लाइट इन्फैंट्री, जम्मू-कश्मीर राइफल्स, पंजाब रेजीमेंट, मराठा लाइट इन्फैंट्री, महार रेजीमेंट इत्यादि सब अब्राह्मण रेजीमेंट हैं।

1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों ने काफी अध्ययन किया और अध्ययन के बाद उन्होंने निर्णय लिया कि जो विद्रोही जातियां हैं उनको किसी भी तरह से अंग्रेजों की सेना में शामिल न किया जाए। इसलिए उन्होंने ना सिर्फ ब्राह्मणों की कोई रेजीमेंट नहीं बनाई बल्कि उनकी भर्ती लगभग शून्य या नाश्य कर दिया। इतना ही नहीं इनको अंग्रेजों ने असैनिक जाति यानि नान मार्शल रेसेज भी घोषित कर दिया। उन्होंने प्रचारित कर दिया की ब्राह्मण अविश्वासपात्र और अनुशासनहीन होते हैं, और सैन्यकर्म के लिए अनुपयुक्त हैं। इनके व्यक्तिगत हृथियां भी छीन लिए गये और अशक्त बना दिया गया।

काफी बाद में यानि 1935 में जब ब्रिटिश इंडियन आर्मी में भारतीयों के लिए अधिकारी बनने के प्रवेश द्वारा खुले, तो अपनी योग्यता और शिक्षा के कारण ब्राह्मण काफी संख्या में अधिकारी तो बने मगर सिपाही के स्तर पर अलिखित प्रतिबंध काफी कठोर बना रहा। आजादी के बाद मार्शल (लड़ाकू) और नान-मार्शल रेसेज (गैर लड़ाकू जातियों) का धब्बा तो हट गया लेकिन अंग्रेजों द्वारा बनाई गई रेजीमेंट में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। जबकि ध्यान देने वाली बात यह है कि ब्राह्मण सेना में बहुत प्रमुखता से अपनी सेवा और बलिदान करते रहे हैं। ब्राह्मण ऊचे और नीचे दोनों पदों पर रहे। इसी का परिणाम था कि स्वतंत्र भारत में अंग्रेजों के जाने के बाद भारत का पहला भारतीय मूल का वायुसेना अध्यक्ष सुब्रतो मुखर्जी बंगाली ब्राह्मण हुए थे। अभी तक जितने भी सेना (नेवी और एयरफोर्स भी) प्रमुख हुए हैं उसमें से 20 से 25 प्रतिशत अकेले ब्राह्मण जाति के लोग हैं लेकिन उसके बाद भी उन्हें मार्शल रेस यानी लड़ाकू जाति का स्थान प्रदान नहीं किया गया।

वीरता के पुरस्कार भी ब्राह्मणों को सर्वाधिक मिले। इसका अनुमान इसी से कर सकते हैं कि स्वतंत्र भारत में पहला परम वीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा को अक्टूबर 1947 में कश्मीर को पाकिस्तानी कबायली आक्रमण से बचाने के लिए मिला। और हमारे अभी तक के आखरी युद्ध, कारगिल युद्ध के परम वीर चक्र विजेता कैप्टन मनोज कुमार पाण्डेय को कौन भूल सकता है। वीर भोग्या वसुधरा। □



सुनील वाजपेयी की चतुष्पदियाँ

खा पीकर सब चले गए हैं अपने-अपने कमरे में,
हा-हा, ही-ही मचा हुआ है, सबके अपने कमरे में,
पापा-मम्मी बेटा-बेटी सब अपने-अपने में हैं,
दादी गुमसुम पड़ी हुई है, भूखी अपने कमरे में।

अनुभव वाली गठी बांधे, उमरों वाले घर-घर लोग,
पंख कटे पंछी के जैसे, डालों-डालों बेपर लोग,
उनकी हस्ती से हम कायम, बुनियादों के पत्थर लोग,
उनकी ताकत से ही हम हैं, जो घर में हैं जर-जर लोग।

बात बात पर जहां बड़ों का होता है अपमान,
उस घर को हम बड़ा मानकर कैसे दें सम्मान,
जहां क्रोध महराज धूमते रहते हों बेफिक्र,
ऐसा घर होता है हरदम क्लेश कलह की खान।

ये जगत हमको मिला शुभ कर्म करने के लिए,
दूसरों के कष्ट मन का ताप हरने के लिए,
देह बंधन से निकलकर याद ही बचनी यहाँ,
कुछ करें हम जन्मिणी का कर्ज़ भरने के लिए। □

परिवार के प्रति

वर्ष इक्कीस में अगर चाहते बदलाव हो,
जिंदगी में प्रेम उपजे परस्पर सद्ब्राव हो,
शिशु हमारे सद्गुणी हों, दुराचारी न बनें,
कुछ न ऐसा कीजिये जिससे प्रकट अलगाव हो।
आपसी ईर्ष्या-जलन को हो सके तो छोड़ दें,
नर्क जो घर को बनाती उस हवा को मोड़ दें,
ये हवा ही बनाती अवगुणी सन्तान को,
वर्ष इक्कीस में नया कुछ जिंदगी में जोड़ दें।
हूँ नहीं कुछ आपका पर दे रहा मैं सीख हूँ
दूसरे शब्दों में सबसे मांगता मैं भीख हूँ,
प्रेम ही सारे जगत की सृष्टि का आधार है,
प्रेम बिन जीवन हमारा व्यर्थ है बेकार है।

और अन्त में -

मात-पिता जेहि गृह माँ रोवैं,
उनके गृह दारिद्र, दुख सोवैं,
जिन गृह मात-पिता सुख पावैं,
धन वैभव जस स भागत आवैं। □



दिन में फेरे, दिन में भोजन में चढ़े बारात

बुरी तरह रातों में होती, धन की बरबादी है।
इन बढ़ती कुरीतियों को जड़ रातों की शादी है॥
ये ही रातों में बारात को, खाना सिखलाती है।
सुरा-पान कर सङ्कों पर युवकों को नचवाती है॥

बिगड़ रही है रातों में ऊँचे कुल की औकात।

दिन में फेरे, दिन में भोजन, दिन में चढ़े बारात॥

रातों की बारात में, बाजे वाले आफत ढाते।

नाच नाच कर युवकों को अपने साथ नचाते॥

नई गड्ढियां खोल बाराती इन पर नोट लुटाते।

नई पीढ़ियों के जीवन में, हम ही आग लगाते॥

रातों की बारात में होती, दौलत और बरसात।

दिन में फेरे, दिन में भोजन, दिन में चढ़े बारात॥

दुखी दरिंदे की पीड़ा पर, जिनको दया न आई।

लुटा रहे हैं नौटंकी पर खुलकर खूब कराई।

कहीं कहीं युवतियां नाचती देने लगी दिखाई।

सोंचे! कहां दुबोयेगी, यह बढ़ती बेशरमाई॥

रातों की बारातें देंगी यही नई सौगात।

दिन में फेरे दिन में भोजन, दिन में चढ़े बारात॥

शुभ विवाह की पत्रिका पर दृष्टि न दौड़ाते हैं।

नाच कूद की हुड्डियों में मौज उड़ाते जाते हैं।

फिर उल्टा सीधा खाकर पिंकर में उड़ जाते हैं।

केवल मामा जी, बहनोइ फेरे डलवाते हैं।

बिगड़ रही सारे समाज की बनाई बात।

दिन में फेरे, दिन में भोजन, दिन में बढ़े बारात॥ □

(स्व० आशुकवि श्री कल्याण कुमार शशि, रामपुर)

वाजपेय यज्ञ

प्रस्तुत-आर.एन.वाजपेयी कोलकाता

उपमन्यु गोत्र के प्रसिद्ध पुरखा जाना दीक्षित-पाठक के छठी पीढ़ी (जाना नमऊ, भट्टू, दिवाकर-जगन्नाथ) में जगन्नाथ ने चन्दनपुर में वाजपेय यज्ञ किया था। परमकृष्णा जी कृत वंशावली में लिखा है कि उनके यज्ञ में गंगाजी स्वयं उपस्थित हुई थी। बाजपेयी संज्ञा तो वाजपेय यज्ञकर्ता को ही होती है। उसके चाचा भाईयों या भतीजों को नहीं। अतः जगन्नाथ जी और उनके पुत्रों हरिनारायण जी आदि की संज्ञा ही बाजपेयी हुई और शेष ज्यों के त्यों रह गए। भट्टू के भाई कवि गोशल बड़े यशस्वी और वेदान्त हुए। शास्त्रार्थ में जगत को जीता। इनके तीन बड़े प्रतापी और वेदान्त पुत्र ब्रह्मदत्त, देवदत्त और यज्ञदत्त हुए। ये ब्रह्मदत्त ही थे जिनके नाम से घाटम के आठों पुत्र अठभैया अवस्थी ब्रह्मदत्त के प्रसिद्ध हुए। गोशल के तीसरे पुत्र यज्ञदत्त ने साम याग किया था, इससे ये दीक्षित प्रसिद्ध हुए। इन्होंने संन्यास ले लिया था। सन्यासाश्रम में अनुभूति स्वरूपाचार्य नाम रखकर भी इन्होंने शास्त्रार्थ करना नहीं छोड़ा। प्रसिद्ध है कि शास्त्रार्थ में कहीं 'पु सु' पद इनके मुह से 'पुंक्षु' निकल गया क्योंकि दांत गिर गये थे। पण्डितों ने कहा तुम अशुद्ध बाल गये हो इसे शुद्ध निष्ठ करो। इस प्रकार इन्होंने एक दिन का समय मांगा और रात को बैठकर 'सारस्वती' प्रक्रिया लिखी जिसमें 'पुंक्षु' रख दिया और विपक्षियों का मुह बंद कर दिया यह ग्रन्थआज कल 'सारस्वत व्याकरण' नाम से प्रसिद्ध है।

इन्हीं यज्ञदत्त के दो पुत्र महाशर्म और विष्णुशर्म हुए। दोनों ने वाजपेय यज्ञ किया इसीलिए दोनों के वंशधर बाजपेयी प्रसिद्ध हुए। कहते हैं बटेश्वर में यह यज्ञ सम्पन्न हुआ था। महाशर्म के प्रपौत्र कुलमणि ने सोम याग किया था। इनके 4 पुत्र काशीराम मणीराम गोपीनाथ और मथुरापति वंशकर्ता प्रसिद्ध हैं। इनमें भी मणीराम जी की ख्याति इतनी अधिक है कि इहे बाजपेयी यज्ञकर्ता समझ जाता है (परन्तु हमारी वंशावलियों में ये सोमयाजी तक नहीं लिखे हैं) मणीराम की पहली पत्नी से मनोरथ बलभद्र और लालमणि तथा दूसरी से मित्रानन्द और महामुनि हुए मित्रानन्द के

वंशज नित्यानन्द नाम से तथा महामुनि के दायाद इनके नाम से बटेश्वर के बाजपेयी कहाते हैं।

बाजपेयी इस उपमन्यु वंश में तीन हुए परन्तु सबसे अधिक प्रसिद्ध विष्णु शर्मा जी की हुई। वंशावली में लिखा है कि ये मीमांसा और आगमों के पारदर्शी और अति निपुण तथा पतंजलि योग दर्शन में बहुत अधिक गति रखने वाले, तर्क शास्त्र व न्याय दर्शन में शेष के समान गम्भीर, विचारों में चतुर और सॉख्य में कपिल मुनि के समान श्रोत स्मार्त, काम में साक्षात् ब्रह्मा के प्रतिनिधि और वेदान्त के वेत्ता पृथ्वी पर बहुत से यज्ञ करने के लिए विष्णुशर्म नाम से उत्पन्न हुए थे वे ब्रह्मण्य, विनय, शील, सुवक्ता और निरहंकार साक्षात् धर्म के अंग थे तथा ब्राह्मणों को भोजन परोसने के समय उपरना खसकने लगा तो वे चर्तुभुज हो गये।

स्व० यशोदानन्दन जी (बब्बू जी)बाजपेयी ने अपने स्मरणार्थ लिख रखा था कि जुजहुत ग्राम में सं० 1456 में विष्णु शर्मा जी का जन्म हुआ और सं० 1508 तक ब्रह्मचारी रहकर विद्याध्यन किया। सं० 1526 तक वे अग्निहोत्री रहे और इसी वर्ष माघ में कोटवा ग्राम में जाकर गोविन्द शाह के धन से सोम याग किया। अनन्तर वहां से नाहिल के राज्य खनौत नदी पर गोरा ग्राम में वाजपेय यज्ञ किया जिसके लिए धन जाल पराय ने दिया। यहां नाहिल के राव राजा कीर्तिसाह ने यज्ञ और उसके रक्षार्थ 14 ग्राम दिए और ऋत्वियों को भी कुछ ग्राम दिए। वहां वे 23 वर्ष रहे फिर यहां से गोकर्ण क्षेत्र चले गये सं० 1561 वैशाख शुक्ल 15 को गोकर्ण क्षेत्र में शरीरांत हुआ और उनकी स्त्री सती हो गयी। अन्तिम संस्कार तीर्थ से पश्चिम हुआ। सती चौतरा बना हुआ है विष्णु शर्मा जी के रचे नौ ग्रन्थ प्रसिद्ध हैं (1) कर्ति प्रकाश (2) दीक्षा तत्व सुधानिधि (3) गृहयान्त दीपिका (4) प्रेत मार्ग प्रयोग भास्कर (5) श्रदान्त भास्कर (6) निर्णय चिन्तामणि (7) याग प्रकाशिका (8) चन्द्रोदयाहिन्क और (9) आहिक प्रयोग। □
(पं० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी की उपमन्यु वंशावली से साभार)

SHANKAR LAL RISHI KUMAR

85, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6

Phone : 011-23287415

Shawl Merchants

RAJ EMPORIUM

81/7, Moti Bazar, Chandni Chowk, Delhi-6

All kinds of Shawl, Kashmiri Dushala & Dhussas
are available here at reasonable price



R.D. Tiwari
Mob. : 9871413500

ब्राह्मणों के गोत्रादि नवतत्व

ब्राह्मण को गोत्र, वेद, उपवेद, शाखा, सूत्र, शिखा, प्रवर, पाद, देवता इन नौ तत्वों का ज्ञान होना चाहिए।

गोत्र: अपने वंश के आदि ऋषि का नाम ही गोत्र है। संध्या, संकल्प आदि शुभ कार्यों में कहा जाता है - 'अमुक गोत्रोत्पत्रोऽहम्'।

वेद: भगवान वेदव्यास ने ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद से चार भाग किये हैं। इन चारों के मानने वाले ऋषियों का जो वेद था, वही वेद उनके गोत्र (वंश) में वर्तमान द्विजातियों का है।

उपवेद: सामवेद का गांधर्व उपवेद है, ऋग्वेद का आयुर्वेद उपवेद है, यजुर्वेद का धनुर्वेद उपवेद है और अथर्ववेद का वास्तुशिल्प उपवेद है।

शाखा: जिस वेद की जो शाखा है उसके अनुसार नित्यकर्म, कुलधर्म, पद्धति प्रतिपादन, कुलाचार के नाम से प्रसिद्ध हो, वही शाखा है।

सूत्र: जिस ऋषि ने अपने नाम से सूत्र विधान करके श्रौत कर्मादिकों का वैदिक विधि-विधान निर्णय किया हो, जैसे

कात्यायन, गोभिल, आपस्तंब, पारस्कर, गृहा, बोधायन, शाडिल्ल।

प्रवर: यज्ञोपवीत में ब्रह्म पास के प्रथम तीन लपेटा दिए जाते हैं। वे 3 अथवा 5 होते हैं। कुलाचार प्रवर्तक विषयों के नामों को ही प्रवर कहते हैं।

शिखा: संध्यावंदन, यज्ञादि कार्यों में शिखा में गांठ लगाई जाती है। जिनकी दक्षिण शिखा हो, वे यजुर्वेदीय विप्र दक्षिण हस्त से दक्षिणाकर्ता घुमाकर ग्रंथि लगावें एवं वाम शिखा वाले ऋग सामवेदीय विप्र बाएं हाथ से बाएं ओर घुमाकर शिखा में ग्रंथि लगावें।

पाद: यजुर्वेदीय तथा अथर्ववेदियों का दक्षिण पाद है, सामवेदीय तथा ऋग्वेदियों का वाम पाद है। यज्ञादि कार्यारम्भ में विप्र यजमान से तदनुसार ही दाहिना या वाम पाद प्रक्षालन करते हैं।

देवता: सामवेद के विष्णु, यजुर्वेद के शिव, ऋग्वेद के ब्रह्मा और अथर्ववेद के इन्द्र देवता हैं। वेदाध्ययन, यज्ञादि शुभ कार्यारम्भ में, जिसके जो देवता हैं, वे उनकी मूल ऋचाओं (मन्त्रों) से स्वस्तिवाचन करते हैं। □

दान-वृत्ति

स्व. आचार्य किशोरीदास वाजपेयी

दान-वृत्ति के लिए ब्राह्मणों का विगर्हण होता है। जिन्होंने सबको सब कुछ देकर अपना हाड़ मांस तक समाज सेवा में गला दिया। जिन्हें परम्परागत गरीबी मिली। उनकी निंदा होती है, दान लेने के कारण ! इस प्रवाद की जितनी कृत्स्ना की जाय, थोड़ी है। ब्राह्मण ने कभी किसी से 'दान' लिया नहीं, सदा सबको दिया है। इसी का फल परम्परागत गरीबी है। इसीलिए मनु ने बड़ी कृतज्ञता के साथ स्पष्ट लिखा है।

सर्व स्वं ब्राह्मणत्येदं यात्किञ्चिज्जगती गतम्।

श्रेष्ठयं नाभिं जनेनेदं सर्वं वे ब्राह्मणोऽर्हति॥।

अर्थात् राष्ट्र में जो कुछ भी संपदा ऐश्वर्य या प्रभुत्व है, वह सब वस्तुतः ब्राह्मण का है। क्षत्रिय को राज्य और वैश्य को लक्ष्मीपतित्व उसी का दिया हुआ है। वस्तुतः वह (ब्राह्मण) अपनी बुद्धि तपस्या तथा उदारता आदि की श्रेष्ठता के कारण तथा शानदार तेजस्वी परम्परा के कारण यह सब कुछ प्राप्त करने का अधिकारी है।

इसके अगले ही श्लोक में फिर स्पष्ट किया है:-

स्वमेव ब्राह्मणों भुक्ते, स्वं वस्ते, स्वं ददाति च।

आनृशस्याद ब्राह्मणस्य भुज्जते ही तरे जना :।।

ब्राह्मण अपना खाता है, अपना पहनता है, अपना ही (दूसरों को) दान करता है। दूसरे लोग उसी की कृपा से सब उपभोग करते हैं।

वस्तुतः: यह उस समय की वस्तु स्थिति का वर्णन है। जिन्हें हमारे पुरखों ने वह सब देकर इस लायक बनाया था। वे ही अब इस पैसे के युग में हमारी गरीबी पर हँसते हैं। कृतज्ञता तो दूर, उलटे यह मनोवृत्ति। हमारी बिल्कुल हमसे ही म्याऊँ, खैर, समय का फेर है। ब्राह्मणों को 'दान' लेने वाला कहकर चिढ़ाना एक अक्षम्य सामाजिक अपराध है और बड़ी भारी कृतन्द्रता है। □

सिरदर्द व दिमागी कमज़ोरी में लाभकारी

भूत मार्क चार तेल

भूत निवास, गांधी नगर, कानपुर

हमारा संगठन सुदृढ़ हो

- रामचन्द्र दुबे, इन्डौर



जाने पर भी जाति का महत्व किसी प्रकार घटा नहीं है अपितु ‘‘संघे शक्ति: कलौयुगे’’ को देखते हुए सामाजिक संगठन एवं जातीय आत्मीयता आवश्यक हो गई है। महर्षि अरविंद ने कहा है कि “हम जातियों के पृथक अस्तित्व को मिटाना नहीं चाहते, बल्कि उनके बीच से घृणा-द्वेष और गलत फहमियों की बाधाओं को हटाना चाहते हैं।” हमारी किसी भी चेष्टा, प्रयत्न और दौड़ धूप से किसी को भय नहीं होना चाहिए। अपनी क्रिया शक्ति को बढ़ाकर दुनिया को तकलीफ देना तो हमारे खुन से ही नहीं है। जहां आध्यात्मिक स्तर पर अथवा राष्ट्रीय हित में जाति-पाति के भेद को निरर्थक कहा जाता है, वही लोक व्यवस्था की दृष्टि से अनुशासित समाज वांछनीय है।

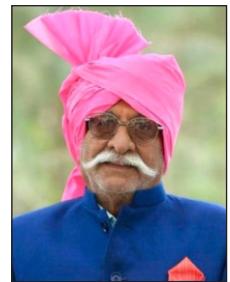
इन्हीं बड़ी भीड़ में हम अकेले हैं, टूटे हुए, खोए हुए, हारे हुए हैं, क्या अब भी आपको अपनी संस्कृति और परपरा के खो जाने का भय झकझोर नहीं देता। संवेदनाओं और मानवीय भावनाओं को हमने बड़े कठोर ढंग से, प्रगतिशीलता की बलिवेदी पर चढ़ा दिया है, सच पूछो तो अपने समाज के पतन की जिम्मेदारी हमारी है।

समाज में कार्यकर्ताओं की संख्या, प्रभाव, क्षमता और हिम्मत घट रही है, संगठनों से अपेक्षा है कि वे अपनी नई शाखायें खोलें, कार्यकर्ताओं को उत्साहित करें और गत वैभव, गुणों का स्मरण कराकर समाज में कर्तव्य, साहस आदि सुस गुणों का जागरण कराने में योग दें, तथा जातीय भावों की रक्षा करना न भूलें। समाज में व्याप रहे पश्चिम के अंधाधुंध अनुकरण को वहाँ रोक दीजिए। नई पीढ़ी तो परिणाम परक कार्य देखने हेतु आपकी और टक्कटकी लगायें। □

- 9098902326

- दुर्गा नारायण तिवारी, इन्डौर

सभा, सम्मेलनों, जलसें में समूह की उमंग व उत्साह को देखते हुए हम बड़ा संकल्प तो कर लेते हैं पर अलग-अलग होने के बाद हम उनको पूरा करने या अमल में लाने के लिए न तो कोई ठोस कार्यक्रम बनाते हैं, और न ही अपेक्षित शक्ति का प्रयोग करते हैं। संकल्प पूरा न हो सकने की स्थिति में हमारे आत्म विश्वास व इच्छाशक्ति का हास होता है।



बैठकों, समारोहों, गांधियों आदि में महज प्रस्ताव पास कर लेना या संकल्पित हो जाना ही काफी नहीं, जरूरी है उनको अमली जामा पहनाने की। करने को बहुत कुछ है, जरूरी नहीं हम एक साथ ही सारी बुराईयों को जड़ से उखाड़ फेंकने और सारी अच्छाईयों को एकाएक अंगीकर कर लेने का बीड़ा उठा ले। क्योंकि बीड़ा उठा लेने के बाद काम पूरा न होने की स्थिति से हमें पाश्चाताप होता है। उन सभाओं से लोग कटने लगते हैं। सभा के पदाधिकारियों पर से लोगों का विश्वास हटने लगता है। समाजिक उथान के प्रति लोग हताश होने लगते हैं, जिनमें बैठकों की सहज औपचारिकतायें पूरी होती हैं, काम घेले भर का नहीं होता अंततः संगठन बिखरने लगता है।

यह भी जानिए कि संगठन तभी फल-फूल सकता है जब उसमें सेवा और त्याग की उच्च सभावना भी विद्यमान हो, आज तो आत्मसम्मान एवं आत्म रक्षा के नाम पर अवलम्ब संगठित हो अपने उचित स्वत्वों एवं अधिकारों की रक्षा करने में जुट जाने की आवश्यकता है तथा अपने स्तर से समाज के लिए कुछ अच्छा करने की पहल स्वयं करनी होगी।

इतना जरूर कहूँगा कि हमारी सभाओं की गति धीरा, मंथन या द्रुत जैसी भी रही हो। उसकी एक देश व्यापी स्वस्थ प्रतिक्रिया अवश्य हुई है। □

- 9827791616



श्रीमद्भगवत् के अनुसार जिसकी वाणी मंगलमय है, जिसकी दृष्टि सुदर्शन है, जिसका संकल्प पृष्ठ है और जिसमें कमल की कमलता (मधुरता) है, वही भक्त है।

- सौजन्य से -

पं. ओम शंकर मिश्र

आश्रय मेन्शन, 30-21-22, आवास विकास कॉलोनी-3 पनकी, कानपुर

परिवार और बच्चे

- श्रीमती किरण बाजपेयी, लखनऊ

‘जेसुइट्स’ का यह कथन नितान सत्य है कि बाल्यकाल के प्रथम पांच वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ‘फोबेल’ ने कुटुम्ब को बच्चे की प्रथम पाठशाला बताया है। बाल-वृद्ध छोटे से नवनीत पिण्ड के सान अत्यन्त संवेदनशील होता है।

‘प्रेमचन्द’ ने ‘कर्मभूमि’ में लिखा है ‘‘जिन्दगी की यह उम्र जब इन्सान को मोहब्बत की सबसे ज्यादा जरूरत होती है - बचपन है। उस वक्त पौधे को तरी मिल जाय तो जिन्दगी भर के लिए उसकी जड़ें मजबूत हो जाती हैं। उस वक्त खुराक न पाकर उसकी जिन्दगी खुँख हो जाती है।’’ तभी जो बालक बचपन में पित स्वेह, मातृ-स्वेह से वर्चित रहते हैं, वे प्रायः मूर्ख और अपराधी निकलते हैं। उनमें निराशावादिता, आत्महीनता की भावना ग्रंथि का रूप धारण कर लेती है।

परिवार का निन्दामय वातावरण बच्चों के मस्तिष्क में विष के समान प्रभाव करता है ऐसे परिवारों के बच्चे अधिकांश में समाज विरोधी, क्रोधी, और उद्दृष्टपूर्ण मिलते हैं। हम अपने बालक को अपने हाथों ही खराब कर देते हैं। हम मन से उसका भला चाहते हुए भी व्यवहार में उसका बुरा करते चलते हैं। ‘मेरिया माण्टेसरॉ’ कहती है कि ‘बुराई और गलतियां’ जिनका परिणाम मनुष्य को भोगना पड़ता है उसका मूल उसके बचपन में छिपा है। बच्चे के चरित्र को बड़े ही गढ़ते हैं। मानों उनकी भूलों और बुराइयों को लेकर वह बड़ा होता है। असामान्य तथा भग्न परिवार बालक के निर्माण में एक बड़ी बाधा है।

माता-पिता का दायित्व:

जब माता-पिता सावधानी नहीं बरतते तो बालक का जीवन तो नष्ट होता ही है, समाज की बहुत बड़ी हानि होती है। मनुष्य जाति को नया जीवन, सभ्यता को नया रूप, समाज को नया सुख और शांति देने का भार माता-पिता को अनायास ही सुलभ है, बशर्ते वह राष्ट्र की धरोहर बालक के संतुलित विकास में अपनी सही भूमिका अदा करें। माता-पिता का विरोधी बताव बालक को बिगड़ता व शैतान बनाता है।

दूषित अनुशासन, निरीक्षण का अभाव, घरेलू जीवन

से असन्तोष और माता-पिता का अपने कर्तव्यों का ठीक से पालन न करना घर के वातावरण को विषाक्त कर देता है। जहां पति अथवा पत्नी नैतिक पतन के आचरण करते हैं, दरिद्रता-अभाव के कारण दम्पत्ति में निरन्तर झगड़ा होता है, बच्चों को अनादर और उनकी अवहेलना होती है, उन्हें मन का भोजन अर्थात् स्नेह नहीं मिलता, वहां अपराध को घुटने टेकते देर नहीं लगती।



माता का नौकरी पर जाना, अधिक बच्चों का होना, निर्धनता, घर का तनाव अथवा किसी भी प्रकार का दुःखी घरेलू जीवन, बच्चे के उद्देश्यों के संतुलन को नष्ट कर देता है। मातृ-हीन बालक के समान दुखी-दीन प्राणी संसार में दूसरा नहीं होता। मातृ-स्वेह की शीतल छाया में ही शैशव का पुष्प विकसित होकर पारिवारिक वातावरण को सौरभमय बनाता और राष्ट्रोपकरन को सुवासित करता है।

ऐसे भी अलमस्त, बेफिकरे, मद्यसेवी बाप मिलते हैं, जिन्हें पता ही नहीं रहता कि उनका लाडला कहां जाता है, क्या करता है, कहां से पैसे लाता है और कहां खर्च करता है। उन्होंने बच्चे को पैदा कर दिया, यही अहसास क्या कम है?

‘सदरलैप्ड’ ने अपनी खोज के आधार पर बताया है कि बाल-न्यायालयों में चालीस प्रतिशत बालक भग्न परिवारों से ही आते हैं। भग्न परिवार से आशय है जहां पति-पत्नी में मतभेद हो, तलाक हो या दोनों में से किसी की मत्यु हो। पिता सेना में हो या घर से दूर रहता हो, माता-पिता दोनों की नौकरी करना पड़ती हो, नौकरों के सहरे बच्चों का पालन होता है। ऐसे परिवार अर्धभग्न की कोटि में आते हैं।

सिर्फ आवश्यक सुख-सुविधायें जुटा देना, सुरक्षा व शिक्षा की व्यवस्था कर देना ही माता-पिता का दायित्व नहीं। बच्चों को चाहिये मां-बाप की आंखों का साथा, हाथों की थपकी, पुचकार, दुलार और मौज मस्ती। □

विना प्याज़ व लैसून, गुजराती घी द्वारा निर्मित मोजन

208, Katra Baryan, Fatehpuri, Delhi-110006

Ph. : 41757333, 8588809956, 23957599

यह अद्भुत सामंजस्य ही उनकी खासियत है।

- नीरजा माधव, वाराणसी

आदिदेव महादेव योगी भी है और सर्वश्रेष्ठ गृहस्थ भी। दोनों दो छोर हैं। लेकिन अद्भुत सामंजस्य बैठा रखा है महादेव ने इन दोनों छोरों में। योगी ऐसे कि स्वयं अपनी बल्लभा गौरी से भी 12 वर्षों तक तपस्या करवाई, तब कहीं हामी भरी। दूसरी तरफ, इतने आदर्श गृहस्थ कि गौरी को अपने आगे स्थान दिया। बैल की सवारी पर भी स्वयं पीछे और पर्वत-नंदिनी उनके आगे। अधर्गिनी बनाया भी, तो पूर्ण रूप से उसे चरितार्थ करते हुए स्वयं को अर्द्धनारीश्वर रूप में प्रकट भी किया। मां उनकी गोद में विराजती हैं। उनका आधा अस्तित्व बनती हैं, यानी शिव को पूर्णता देती है। भवानी के बिना शिव अधूरे हैं। और इस पूर्णता का प्रथम लक्षण ही है परमानंद। वही परमानंद शिव का स्थाई भाव है।

यह एक ऐसा दर्शन है, जिसे समझना चाहे, तो एक बच्चा भी समझ ले, अन्यथा जन्म-जन्म तपस्या करने के बाद बड़े-बड़े कथित ज्ञानी भी न समझ सकें। ध्रुव ने समझ लिया, प्रह्लाद ने समझ लिया, नचिकेता ने भी समझ लिया कि एक असीम सत्ता हमारे आस-पास हर क्षण अपने अस्तित्व के साथ है। उसे देखने की अंतदृष्टि उत्पन्न करनी चाहिए। व्यक्ति की अपनी-अपनी रुचि के अनुसार वह सत्ता शिव, विष्णु, शिवा, दुर्गा, धात्री, अन्नपूर्ण, क्षमा, स्वाहा, लक्ष्मी, सरस्वती, काली आदि रूपों में मानस लोक में द्विलमिलाती है। लेकिन न समझने वाले भी अनगिनत हर काल में हुए, जिन्हें इन ज्ञानवृद्ध बालकों के सम्मुख अपना वयोवृद्ध होना अधिक महत्वपूर्ण लगा।

उसी शिव ने आनंद के देवता कामदेव को भस्म कर दिया। वही कामदेव, वसंत जिसका तुणीर है, आप पंजरियों सहित अन्य कई पुष्टों वाला पंचशर है, पुष्प-धन्वा है जो, सुंदर है और श्रृंगार-रस का अधिष्ठान है जो, ऐसे कोमल, सरस और आनंद के साक्षात् विग्रह को भस्म कर डालते हैं हमारे भोले बाबा कामेश्वर से ऐसी उम्मीद नहीं हो सकती। स्वामी अपने सेवक के साथ भला ऐसा क्यों करने लगा? कामदेव की त्रुटि इतनी ही तो थी कि वह परमानंद के शांत सागर में भी आनंद की लहर उठाने गया था, लेकिन उस महायोगी ने उसे भस्म कर दिया। क्षमा भी तो कर सकते थे करुणावतार?

वास्तव में आनंद पर किसी एक या कुछ लोगों का अधिकार नहीं होना चाहिए। जगत के सभी प्राणियों में इसका कान्यकुञ्ज मंच

स्फुरण होना चाहिए, लहर उठनी चाहिए, और जब लहर होगी, तो अपने आदि स्रोत को खोज ही लेगी। अपना स्वरूप पहचान ही लेगी कि वह है, तो नदी या सागर भी है, जिसके बिना उसका अस्तित्व नहीं। इसलिए शिव ने कामदेव को भस्म किया। अपने स्थूल रूप में कामदेव सबका नहीं हो सकता। इसलिए उसे जलाकर भस्म करते हैं, उसके स्व को विसर्जित कर देते हैं। अहम को राख बना देते हैं और तब वह पूरे ब्रह्मांड का हो जाता है, चर-अचर सृष्टि का हो जाता है। भस्म बना सबमें बाट देते हैं शिव। अहम विगलित और स्वविसर्जित भस्म को अपने पूरे तन पर लेप लेते हैं। यह आनंद को पूर्ण रूपेण स्वीकार करने की स्थिति है, परमानंद की अवस्था है। इसलिए वह कामेश्वर है, और जगदंबा कामेश्वरी।

एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि जब सब कुछ जलकर भस्म हो गया, तो उसमें बचा क्या क्या, जिसे धारण किया जाए? तत्व क्या रहा? एक छोटे से लौकिक उदाहरण से समझा जा सकता है। भैषज्य शास्त्रों में भस्म की महती उपयोगिता बतलाई गई है। कुशल वैद्य विभिन्न रोगों के निदान और बल, ओज वृद्धि के लिए औषधि के रूप में भस्म देते हैं। स्वर्ण-भस्म, मुक्ता आदि के औषधीय गुण सर्वविदित हैं। शिव इसीलिए काम को भस्म करते हैं। उसके आत्म को सर्वास्म बनाते हैं। उसके स्व के अर्थ (स्वार्थ) को निःस्वार्थ और नित्य बनाते हैं। परमानंद की ओर निष्काम यात्रा बनाते हैं। इसी यात्रा में जीव बार-बार लहरें बनाता है। किनारों से टकराता है, पछाड़ें खाता है, आगे आता है, पीछे छूटता है, कभी उसी के नीचे दम तोड़ देता है, बुद्बुद बनता है, बनाता है और मिटाता-मिटाता रहता है। अंत में अनगिनत रूप धरती लहरें थक-हारकर नित्य विश्रांति का अपना उद्गम पा ही जाती है, सागर में अपना अस्तित्व विगलित कर स्वयं भी शांत हो जाती है। मुक्ति की इस अवस्था को देखने के लिए दृष्टि खोलने की आवश्यकता है, लहर बनकर फेनिल किनारों पर सिर पटकने से कुछ नहीं मिलता। □



कहानी

गेंदा फूल

- प्रगति शुक्ला, नई दिल्ली



देती हुई। मैं और मेरी मित्र दीवार के सहरे सहरे इस छज्जे से होते हुए आखिरकार पहुंच ही गये, मन हर पल काँपता ही रहा जब तक द्वार ना आ गया।

भीतर का दृश्य और भी सुन्दर। ऐसा लगता था जैसे कि बारहवीं शताब्दी के किसी प्राचीन शिवमन्दिर में आ गये हैं।

पुजारी जी ने हाथ के इशारे से पास आने का संकेत किया। और बिन बोले ही प्रसाद के कुछ दाने हाथ में पकड़ा दिये। मन्दिर की भव्यता और दिव्य वातावरण में हम दोनों कुछ पल के लिए खो से गए और पास ही फर्श पर बैठ गये।

एकाएक कुछ याद आया, भगवान को चढ़ाने के लिए कुछ दक्षिणा तो लाये ही नहीं। हम अपना झोला तो मुख्य द्वार पर ही छोड़ आये थे। वैसे भी अन्दर जाने का मार्ग इतना अधिक दुर्गम था कि हाथ में कुछ भी पकड़ा असंभव था।

पुजारीजी हमारी दुविधा समझ गये थे बोले - क्या हुआ! जो छोड़ आये हो, त्याग दो उसे।। अर्पित कर दो शंकर के चरनों में अपनी तृष्णा- वितृष्णा, वासना-विकार, अपने मोह अहंकार और ले जाओ प्रसाद स्वरूप आध्यात्मिक आनंद और मन की शांति। मन नदी में बहते हुए गेंदे के फूलों की तरह हल्का हो चला था।। तुलसीदास जी कुछ पौक्तियाँ गूंजने लगीं

जपहु जाय शंकर सत नामा, होइहें तुरत हृदय विश्रामा।□
Prettyneelu@hotmail.com

वैचारिकी

- लक्ष्मीकांत शुक्ल, फरीदाबाद

हमे अपने कर्मों पर विश्वास होना चाहिए और वो तभी संभव है, जब हम स्वयं पर विश्वास करना जानते हों। अन्यथा बिना विश्वास के जीवन कट तो जायेगा लेकिन आधा अधूरा और न्याय संगत नहीं होगा। हमें अपनी करनी और कथनी को विचारों की अग्नि पर ढाक कर धीरे-धीरे पकाना होगा। बड़े बड़े राष्ट्रीय राज मार्ग बिना सोचे



समझे तैयार किये जायेंगे तो या तो वो अधूरे या अव्यवस्थित अवस्था में रह जायेंगे या अपने अन्तिम पड़ाव तक नहीं पहुंच पायेंगे। इस तरह हमारा पर्यटन का अर्थ ही अर्थहीन हो जायेगा। हम उम्र भर बिना सोचे समझे न जाने कितने स्वार्थ के बीज बो कर अपने मन में सपनों का संसार बना लेते हैं और तरह तरह के फलों की कामनाएं पैदा कर लेते हैं। अच्छी फसल काटने के लिये हमेशा स्वस्थ बीज ही बोने पड़ते हैं फिर अस्वस्थ बीज बो कर भरपूर फसल का सपना कैसे पूरा कर सकते हैं। काली चमकीली और बिना अवरोध वाली सड़क बनने के लिये पथर की गिर्वाई को तारकोल के साथ मिलकर एक घंटे राष्ट्र मार्ग का निर्माण होता है तब कहीं जाकर एक अच्छे राष्ट्र मार्ग का निर्माण होता है, जो हमारी सुखद और लम्बी यात्रा में आनंद का कारण बनता है। अब आप स्वयं सोचिये कि अगर जीवन के मार्ग को चमकदार स्वार्थ रहित और आनंदित मार्ग बनाना है तो कितने तपने की जरूरत है। आइये तपने के लिये हम कर्म की रूई पर विश्वास की आँच रख कर अपने मार्ग का शिलान्यास तो करें। रास्ता तो स्वयं ही लक्ष्य तक पहुंचाने का साधन बन जायेगा। जितनी जल्दी हम अपने मस्तिष्क को समझा पायेंगे, उतनी जल्दी हम जीवन का सही अर्थ समझने में कामयाब होंगे।□

- 7011717438

With best compliments from
TEDCO Exports Private Limited
A global trade development company engaged in exports and imports of commodities, equipments and technology

M-72, Connaught Circus, New Delhi 110001, Phone 23-416001/ 41517367 (EPABX)
Telefax: 011-23416002, E-mail: tedcogroup_del@airtelbroadband.in

कीर्तिशेष पं बालकृष्ण पाण्डेय स्मृति सम्मान उद्योगृद्ध उद्यमपुरुष पं बालमुकुन्द दीक्षित



ऊगू, जिला उत्त्राव के कश्यप गोत्रीय स्मृतिशेष पं गार्गीदीन दीक्षित सिविल सर्विसेज में रहते हुए ब्रिटिश अर्मी रावलपिंडी (वर्तमान में पाकिस्तान) में नियुक्त थे। उनकी तीन सन्तानों पुत्री स्व सावित्री (पत्नी श्री हरीशचन्द्र शुक्ल, बीमा कंपनी, लखनऊ) तथा पुत्र पं बालमुकुन्द दीक्षित लखनऊ में व द्वितीय पुत्र पं बालकृष्ण दीक्षित रेसकोर्स नई दिल्ली में निवसित हैं।

रावलपिंडी में वर्ष 1923 को जन्मे पं बालमुकुन्द दीक्षित (सुपौत्र स्व पं शम्पू रत्न दीक्षित) 97 वर्ष की अवस्था में भी शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हुए पारिवारिक मुखिया का सफल दायित्व निभा रहे हैं। जॉन रस्किन के शब्दों में 'उद्यम रहित जीवन पाप है और कला से रहित उद्यम बर्बरता है' को जीवन का मूलमंत्र मानने वाले श्रद्धेय बालमुकुन्द जी का जीवन जिस संघर्ष, श्रम, प्रयोग और विलक्षणता से भरा मिला है, वह युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणा का अक्षय-वट सिद्ध हो सकता है। पिता पं गार्गीदीन के रेसकोर्स अर्मी चीफ रहते हुए बुड़मवारी में कुशलता हासिल की। अपनी अपेक्षित शिक्षा पूरी कर वर्ष 1944 में बर्मा सेल (अब भारत पेट्रोलियम) के विपणन विभाग से कैरियर की शुरुआत की। वायुसेना के एयरक्राफ्ट के फ्यूल रिफिलिंग में फील्ड ऑफिसर का दायित्व सम्पाला। बालजूद इसके अंतरात्मा में कुछ और ही पत रहा था, 'आज का पुरुषार्थ ही कल का भाग्य बनता है' प्रतिष्ठित नॉकरी छोड़कर व्यवसाय क्षेत्र में पैर रखा। वर्ष 1973 में आई टी कॉलेज, लखनऊ की मेस-कैंटीन का ठेका ले लिया। 20 वर्षों तक सफलतापूर्वक कॉलेज मेस का संचालन करने के बीच पिता जी के मित्र और लिज्जत पापड़ के संस्थापक दत्तानी साहब के सम्पर्क में आकर श्री महिला ग्रामोद्योग संस्थान चलाया। लाखों महिलाओं को घर बैठे रोजगार उपलब्ध कराने की यह अप्रतिम पहल थी। देश की विभिन्न भागों में उसकी शाखाएं स्थापित हो गईं।

अप्रतिम प्रतिभा के इस पुरुषार्थी व परिश्रमशील व्यक्ति को विश्राम कहाँ? तृष्ण ग्रामोद्योग संस्थान के नाम से पापड उत्पादन का नया व्यवसाय शुरू किया। खाद्य पदार्थों के विपणन व्यवसायी शक्तिभोग के अधिष्ठाता श्री कुमार ने पापड उत्पाद के लिए बालमुकुन्द जी की सेवाएं ली। बालमुकुन्द दीक्षित के एकमात्र पुत्र विअतुल दीक्षित भी पिता के साथ लग गए। समय ने इमतहान लिया और विलक्षण जिजीविषा वाला यह महामानव समय व विधि के लिखे अनुसार पराजित हो गया जब दुर्विपाक से कर्मठ व होनहार अतुल दीक्षित वर्ष 2002 में एक दुःखद दुर्घटना के चलते

दुनिया छोड़ गए।

कानपुर, बारादेवी के प्रतिष्ठ व्यवसायी पं राजाराम वाजपेयी की आत्मजा श्रीमती सुमन से विवाहित बालमुकुन्द दीक्षित की दो बेटियां श्रीमती मीना वाजपेयी व श्रीमती बीना मित्रा अपना सफल पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रही हैं। 'पुरुषार्थ पर अधिकार है, भाग्य पर नहीं' उक्त अनुसार श्रद्धेय दीक्षित जी ने विकट दैवीय आपदा के बालजूद मुखिया का दायित्व सम्पाला और आज इनकी पुत्रवधु श्रीमती रश्मि दीक्षित सफल शिक्षिका हैं। पौत्र चिंगारी अविकांत तथा चिंगारी हेमन्त से विवाहित पौत्री श्रीमती आस्था भी अपना सफल पारिवारिक जीवन निर्वहन कर रही हैं। कानपुर निवासित उप्र सिंचाई विभाग से सेवानिवृत्त कार्यालय अधीक्षक पं राजेश-आभा अवस्थी की पुत्री दीपाली से विवाहित पौत्र चिंगारी एचडीएफपी बैंक, मुम्बई में प्रबन्धक हैं। प्रपौत्री अविका अपने परबाबा के स्वस्थ व सक्रिय शतपुरुष की कामना संजोये शिशुजीवन का लौकिक आनंद उठाने को आतुर है।

97 वर्षों के उत्तर-चढ़ाव, हानि-लाभ, सुख-दुख एवं जीवन के तमाम झंझावातों का अनुभव रखने वाले इस महामानव की सक्रियता देखते बनती है। उनमें बच्चों के साथ बच्चा बन जाने की कला है, उनके साथ सखा-सम्बन्ध बना लेने की क्षमता है, सम्वेदना की पकड़ है, दिल में पैठ जाने का हुनर है। इनके पास बैठना अनुभव-शास्त्र के उस समुद्र तट पर बैठना होता है, जहां लहरें स्वयं चल-मचल कर आती हैं और आनन्द में स्नान कर जाती हैं। साधनानिष्ठ और जीवन-मूल्यों में पूर्णतः उदार रचयिता से समाज और परिवार को अभी ढेर सारी अपेक्षाएं हैं। □

एक कविता

देश का काला धन लाने में वक्त तो लगता है।
नये नटवरों को पहचानने में वक्त तो लगता है॥
भारत की बात नहीं थी, विदेशी बैंकों तक जाना था।
गुप फाइलों को तलाशने में वक्त तो लगता है॥
सुराग जरा मिल जाए.. तो नेता हो या व्यापारी।
लाख करें कोशिश.. खुलने में वक्त तो लगता है॥
हमने इलाज-ए-लूटेरे जनों को ढंग लिया लेकिन।
नामी आकाओं को अंदर लाने में वक्त तो लगता है।
अच्छे दिन आने की आशाओं में जीना पड़ता है।
15 लाख मिल जाने में वक्त तो लगता है।
देश का काला धन लाने में वक्त तो लगता है...। □ - रचना अरुण दीक्षित

9415409797



समाजसेवी पं कृष्णकुमार वाजपेयी

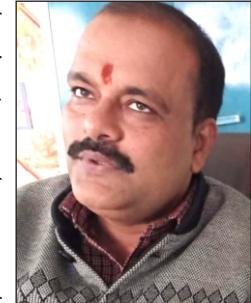
अर्जित ज्ञान, विद्या, अनुभव व भोगे हुए यथार्थ को श्रोताओं तक बोधगम्य ढंग से पहुँचाने की कला में प्रवीण बहुआयामी व्यक्तित्व के ऊर्जावान पं कृष्णकुमार वाजपेयी वक्तव्य देने में पाणिनीय शिक्षा के प्रत्यक्ष दृष्टिंत महानुभाव हैं।

कानपुर नगर की घाटमपुर तहसील के गांव कोटरा मकरंदपुर के कीर्तिशेष पं कंकहैयालाल वाजपेयी (आत्मजः स्व रामबिहारी वाजपेयी) की वैद्यकी में खासी प्रतिष्ठा थी। कल्घूमल महाविद्यालय, चावलमण्डी, कानपुर से प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर काशी से शास्त्री एवं आयुर्वेदाचार्य की योग्यता हासिल कर पहले कानपुर शहर में और पश्चात पैतृक गांव में अपेक्षितों की स्वास्थ्य-परिचर्या को जीवन का ध्येय बनाया। आसपास के गांव ही नहीं, दूर-दरस्थ जनपदों के भी रोगी अपनी लाइजाज बीमारियों में उनकी शरण लेते रहे हैं। तीन पुत्रों- पं चन्द्रभूषण जी राजकीय बेसिक शिक्षा विद्यालय के प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हो पिता द्वारा स्थापित कलानिधि औषधालाय में अपनी सेवाएं दे रहे हैं। दूसरे पुत्र पं मनोज कुमार उप्र सिंचाई विभाग में कार्यरत हैं, जबकि कनिष्ठ पुत्र पं कृष्णकुमार जी कानपुर नॉबस्ता के अर्रा (बिनगांव) में शिक्षण-संस्थाओं का संचालन करते हैं।

कानपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी व संस्कृत में परास्तातक 49 वर्षीय पं कृष्णकुमार वाजपेयी ने वर्ष 1992-93 में बनारस से बी एड (शिक्षाशास्त्री, आचार्य) की डिग्री हासिल की और वर्ष 1994 उत्तराव (मोतीनगर) के विवेकानन्द इंटर कॉलेज में प्राचार्य हो गए। कॉलेज के संस्थापक-प्रबन्धक पं गोकर्णनाथ भारतीय (तिवारी) के विशेष कृपापात्र रहे कृष्णकुमार वाजपेयी अपने व्यक्तित्व-निर्माण में उनके स्नेह के कृतज्ञभाव से अभिपूरित रहते हैं। बुढ़वा, फतेहपुर के पं राम अवतार पाण्डेय की आत्मजा श्रीमती शशिकान्ति से विवाहित वाजपेयी जी ने वर्ष 1999 में नॉबस्ता में कविता शिक्षा संस्थान की स्थापना की। हिन्दी व संस्कृत में परास्तातक तथा बी एड शिक्षाप्राप्त पत्नी ने कविता पब्लिक स्कूल के दायित्व का भार अपने ऊपर ले लिया। वर्ष 2008 में प्राचार्य पद से त्यागपत्र देकर कृष्णकुमार जी ने पिता पं कन्हैयालाल व माता श्रीमती कृष्णादेवी की स्मृति में केडीएल शास्त्री इंटर कॉलेज खोला। जिसे वर्ष 2011 में राजकीय मान्यता प्राप्त हो गयी है। आज दोनों शिक्षण संस्थान विद्यार्थियों की शिक्षा व चरित्र-निर्माण की दिशा में सतत संलग्न हैं।

पं कृष्णकुमार-शशिकान्ति वाजपेयी दम्पत्ति को चार सन्तानों में तीन पुत्रियों अविधा, लक्षणा व व्यञ्जना तथा एकमात्र पुत्र चंगे गणेश शंकर के लालन-पालन का सुयोग मिला। पर विधि कान्यकुञ्ज मंच

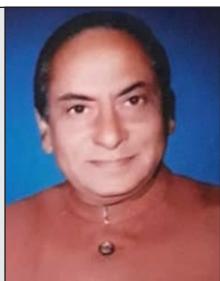
की लेखी, न जाने कौन सा प्रबल प्रारब्ध इनके पुण्य पर भारी पड़ गया, 31 अक्टूबर, 2019 को एक बहाना बनाकर आई बीमारी में 15 वर्षीय एकलाते पुत्र गणेश शंकर ने दुनिया को अलविदा कह दिया। यश-सम्पदा, धन-वैभव, सामाजिक सम्मान सबकुछ होते हुए भी पुत्र-वियोग का दंश असहनीय होता है। ईश्वर के प्रति आस्थावान वाजपेयी दम्पति भाग्याधीन हो इस आत्मिक पीड़ा को सहन करने के लिए अभिशप्त है।



अहेतुक स्नेह और सौजन्यता वाजपेयी दम्पति के व्यक्तित्व की विशेषता है। सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में आपको सुयश प्राप्त है। साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले वाजपेयी जी सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक मंचों, सभा-गोष्ठियों में अपनी ओजपूर्ण कविताओं और वक्तव्य के लिए जाने जाते हैं। इनका उच्चारण शुद्धतम, सम्मोहक और झंकृतिपूर्ण होता है। परिष्कृत दृष्टिकोण का आत्मवादी चिंतन मनुष्य को स्वार्थी और संकीर्ण नहीं रहने देता। युवावार्ग की स्वतः स्फूर्त ऊर्जा को समाजहित में लगाने हेतु सदैव उद्यत रहने वाले सही अर्थों में आचार्य हैं। समाज को वाजपेयी जी से अनेक अपेक्षाएं हैं। □

नहीं रहे डॉ सूर्य प्रसाद दीक्षित

बैसवारा क्षेत्र उत्तराव के ग्राम दुंदपुर रुम्हेई मूल निवासी डॉ सूर्यप्रसाद शुक्ल का 6 जनवरी 2021 को दर्शनपुरावा, कानपुर में 85 वर्ष की अवस्था में तिरोभाव हो गया। कवि/समालोचक शुक्ल जी का जीवन साहित्य और जनसेवा के प्रति समर्पित था।



शुक्ल जी की लेखनी द्रुत गति से चलती थी। कोई भी पुस्तक प्राप्त हो, अपनी सम्मति लिखते। कान्यकुञ्ज मंच के पाठकों को भी उनकी लेखनी का प्रसाद सुलभ था। ठीक एक माह पूर्व 6 दिसम्बर को 'विकासिका' द्वारा सम्मानित किए गए थे। सभा-गोष्ठियों में अपने गम्भीर चिंतन, चुनिंदा, किन्तु विशिष्टा लिए साहित्य सृजन तथा सहज, सरल, निश्चल व्यक्तित्व की छाप वर्णों स्मृति-पटल पर बरकरार रहेगी। विनम्र श्रद्धांजलि। □

सहृदय पं ब्रह्मप्रकाश अवस्थी

गौ, गंगा और गायत्री के प्रति असीम आस्था रखने वाले पं ब्रह्मप्रकाश अवस्थी शैव-वैष्णव और शाकू उपासना पद्धति की मिश्रित परम्परा के अनुगामी हैं। उत्त्राव-हरदोई मार्ग पर उत्त्राव शहर से 10 किमी गांव रुक्करना के उपमन्यु गोत्रीय स्मृतिशेष पं जगदीश प्रसाद अवस्थी जूनियर हाईस्कूल में अध्यापन कार्य करने के साथ ही तात्प्र शिक्षक की भूमिका का निर्वहन करते रहे। उनके चार योग्य पुत्रों में सबसे बड़े पं वेदप्रकाश अवस्थी विक्रीकर विभाग के उपायुक्त पद से सेवानिवृत हो परिवार सहित विकास नगर कानपुर में निवसित हैं। दूसरे पुत्र पं विष्णु प्रकाश अवस्थी मिश्रा कॉलेजी, उत्त्राव में सपरिवार अपना जीवनयापन कर रहे हैं। सबसे छोटे पुत्र पं धर्मप्रकाश राज्य शिक्षा विभाग में शिक्षाचार्य हैं। तीसरे पुत्र पं ब्रह्मप्रकाश अवस्थी है, जो वर्ष 1984 में एमएससी (भौतिकशास्त्र) से करने के बाद ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स में नियुक्त हुए और इस समय उत्त्राव सिटी बांच में प्रबन्धक पद का दायित्व निभा रहे हैं।

सत्यनिष्ठ, करुणाशील और भक्ति-परायण पं ब्रह्मप्रकाश जी की दैनिकर्चय बैंक कार्य के अतिरिक्त पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन और ईश-चरणों में ही बोतती है। उत्त्राव के ही गांव अटवां छूलामऊ (पुरवा-मौरांवा रोड) के स्मृतिशेष पं गोकर्णनाथ मिश्र की आत्मजा से विवाहित अवस्थी जी की पत्नी श्रीमती आराधना संस्कृत विषय से परामात्क धर्मनिष्ठ विदुषी महिला हैं। भजन-संगीत में विशेष रुचि के चलते हारमोनियम-तबला-ढोलक-मंजीरा आराधना जी के हाथों का सर्पश पा झ़कूत हो उठते हैं। कंठ से निकले देवी गीत, भजन, आरती अंतर्मन को मुआध कर देती है। लेकिन उनकी ये प्रतिभा पूर्णतयः पारिवार के मध्य या एकांत में ईश को समर्पित है। उनके हाथों बने भोजन का रसायन उन्हें कुशल गृहणी की श्रेणी में लाता है।

दो होनहार पुत्रों चि. अम्बरीष व चि नमाशीष में उच्च शिक्षा के साथ ब्रात्मण-संस्कारों व मानवोचित गुणों से सम्पूर्ण बनाने में इस दम्पति ने सजगता बरती है। प्रतिस्पर्धात्मक पढ़ाई के मध्य गायत्री माला, सुंदरकांड का पाठ, रुद्राष्टक नियमित दिनचर्या का अंग है। एनआईटी इलाहाबाद से बीटेक व आईआईएम से एमबीए चि. अमरीश एक स्टार्टअप में उच्च पद पर हैं चि. नमाशीष एनआईटी जालन्थर से कंथूटर साइंस में बीटेक अध्ययनरत है। श्रीमती रोली (आत्मजा: आशुतोष-विमला पाण्डेय) से विवाहित चि. अमरीश के आत्मज तीन वर्षीय चि. ओजास का शिशुजीवन चल रहा है। श्रीमती रोली अवस्थी बीटेक कर गुरुग्राम की मल्टीनेशनल कंपनी में प्रबन्धक हैं।

आध्यात्मिक आस्था और साधना के

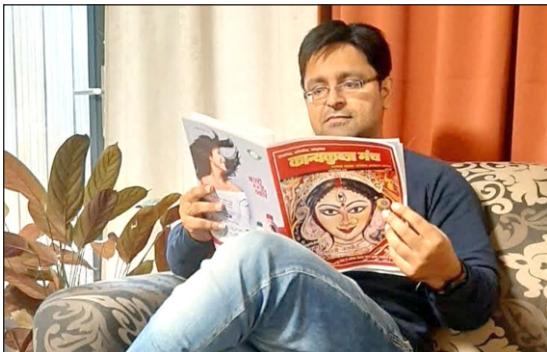


सत्पुरुष पं ब्रह्म प्रकाश अवस्थी की जीवन यात्रा सदाचरण पर समाप्ति नीति एवं नैतिकता से धार्मिकता की ओर और फिर धार्मिकता से आध्यात्मिकता की ओर की है। स्वभाव से अतिविनम्र अवस्थी जी में सरलता है, सहजता है, निश्चलता है। आहार शुद्धता के प्रति सजग आपका मानना है कि 'यथार्थ में सात्त्विक भोजन का हमारे जीवन के साथ असंत धनिष्ठ संबंध है और यह तो निर्विवाद सिद्ध है कि उसका प्रभाव हमारे हृदय और मस्तिष्क पर निश्चित रूप से पड़ता है। 'आहार शुद्धौ सत्त्वशुद्धिः' के अनुसार सबल, उदात्त और निर्मल मन का विकास आहार के प्रकार पर ही अवलम्बित है।' अवस्थी परिवार के आचरण-व्यवहार में कान्यकुञ्जियत की स्पष्ट झलक है। □

कान्यकुञ्ज मंच पत्रिका के संस्थापक सम्पादक आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय की 97 वीं जयंती (9 अक्टूबर' 20) को जानकीपुरम लखनऊ में वयोवृद्ध 97 वर्षीय पं बालमुकुंद दीक्षित को पुष्पहार, शाल, रजत मुद्रा व अभिनन्दन पत्र देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत करते हुए सांकृत प्रताप शुक्ल ने कहा कि साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर कीर्ति शेष आचार्य बालकृष्ण पाण्डेय की साहित्य यात्रा उनके तप और साथना का फल है। कार्यक्रम में डॉ पी के त्रिपाठी, महेश नारायण तिवारी, श्री प्रताप शुक्ल, श्री राम बाबू तिवारी व श्री सर्वेश वाजपेई ने भी अपने विचार रखे। पत्रिका के प्रबन्ध सम्पादक विष्णु पाण्डेय ने सभी उपस्थित जनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।



एक पाठक की प्रतिक्रिया



नौ दोवियों के आशीर्वाद से कान्यकुब्ज मंच पत्रिका के अक्टूबर - दिसंबर अंक का डिजिटल संस्करण प्राप्त हुआ। प्रथम 2 पृष्ठ ही पढ़े थे कि मन नहीं माना और डिजिटल को त्वरित ही पुस्तक प्रति में मुद्रित करके एक ही बैठक में पूर्णतः सोपान किया। सम्पादकीय में 'देत लेत मन संक न धर्इ' से प्रारम्भ होते हुए, अपनी बात में 'नन्हा दीपक' के प्रकाश ने मुझे अनवरत पढ़ने के लिए प्रेरित किया। अब कि जब चहुँ ओर कोरोना की चर्चा हो रही हो तो सन्दर्भ में 'महामारी' लेख, इस वैश्विक आपदा के प्रभाव को पुरातन भारतीय संस्कृति एवं दिनचर्या के अनुपालन से कैसे संकीर्ण किया जा सकता है, समझाने का एक सफल प्रयास है। 'हम धरती पर कुछ वर्ष बिताने आये हैं' पर्कि ने इस धरा के प्रति हमारे क्या दायित्व हैं, इसका आभास कराया। एक सामान्य दिवस में हम इस धरा के लिए कितना सोच पाते हैं? सत्यता तो यह है कि कुछ भी नहीं। अंततः हम सबको इस धरा में ही मिल जाना है तो क्यों न कुछ ऐसा प्रयत्न करें कि जब यह देह धरा से मिले तो धरा स्वच्छ ही हो।

'बी कैन-बी बिल' से प्रेरित होकर एक संकल्प लिया कि इस अंक को पढ़ने के बाद मैं अपना अनुभव लिखूँगा। परिवार ही प्रथम पाठशाला होती है यह तो ज्ञात था परन्तु परिवार स्वयं में एक लोकतंत्र है, यह दृष्टिकोण लेख पढ़ कर ही पनपा।

'महामारियां' पुरानी दुनिया और भविष्य कि दुनिया के बीच का प्रवेश द्वारा हैं और शायद हम सब अभी तक भाग्यशाली रहे हैं जो इस द्वार की डेहरी पर खड़े हैं। बस इस बार नए द्वार में प्रवेश से पहले हाथों के साथ साथ मन मणिक को 'सेनेटाइज' करने की आवश्कता है।

समय एक चक्र हैं और मनुष्य उस चक्र की परिधि से अपना जीवन प्रारम्भ करके शानैः शानैः केंद्र की ओर अग्रसर रहता है। एक समय

पश्चात् उस चक्र के केंद्र में पहुंचते ही मनुष्य की गति को अनंत कालीन विग्रह प्राप्त हो जाता है। फिर बस स्मृतियाँ ही शेष रह जाती हैं। पत्रिका के इस भाग में आकर मन उदास हुआ, कुछ स्मृतियाँ एक सिहरन सी पैदा करती हुई निकल गयीं।

यह पत्रिका हमारे उस स्वर्णिम भूतकाल एवं पुरातन संस्कृति से हमारा परिचय कराती है जो की इस आपाधापी में हमसे अनायास ही विस्मृत हो गयी है।

जिस प्रकार मंदिर का पुजारी एक बार घंटी बजाकर पूजा समाप्त नहीं कर देता बल्कि बारम्बार शंखनाद करके अपने इष्टदेव की स्तुति करता है, ठीक उसी प्रकार मैं इस पत्रिका रूपी मंच के सम्मुख बार बार आऊंगा और पत्रिका के लेखों द्वारा अपने मूढ मणिक्ष को ज्ञानवान बनाने की चेष्टा करता रहूँगा। नए अंक का अधीरता से प्रतीक्षारत.. □

- गौरव त्रिपाठी, रॉटर्डम, द निदेरलैंडस

गंगासागर सेवा शिविर-2021

कलकत्ता कान्यकुब्ज सभा एवं शाकुन्तल महिला कान्यकुब्ज समिति के सहतत्वावधान में मकरसंक्रांति के अवसर पर एक सप्ताह के गंगासागर सेवा शिविर का यह 3 5वां वर्ष है। पं लक्ष्मीकांत तिवारी, पं दीपक मिश्र, पं तारकनाथ त्रिवेदी, डॉ प्रेमशंकर त्रिपाठी, पं विश्वेश्वर प्रसाद दीक्षित, पं गणेश शंकर तिवारी, पं अश्विनी अवस्थी, पं कुलदीप दीक्षित, पं वीरेंद्र त्रिवेदी, पं संगम पाण्डेय, पं अजय तिवारी, पं अमित वाजपेयी, पं सुधीर मिश्र, पं अशोक शुक्ल, पं रामलाल तिवारी, पं आशुतोष वाजपेयी एवं महिला समिति में श्रीमती शकुन्तला तिवारी, श्रीमती प्रभा वाजपेयी, श्रीमती पदमा वाजपेयी, श्रीमती किरण तिवारी आदि की समर्पित टीम हर वर्ष गंगासागर तीर्थयात्रियों के भोजन, आवास, मेडिकल व यात्रा सुविधाओं के लिए तन-मन-धन से जुटी रहती है। रोड न. 3, सागरद्वीप (सागर अस्पताल के सामने) लगने वाले शिविर में सेवादारों द्वारा निःशुल्क आवास, चाय, भोजन, बच्चों के लिए दूध, दवाइयां आदि सभी आवश्यक सामग्री की उपलब्धता बनी रहती है। गंगासागर सेवा शिविर का उक्त शिविर कलकत्ता कान्यकुब्ज सभा व शाकुन्तल कान्यकुब्ज महिला समिति का तीर्थयात्रियों की सुगमता-सुलभता के लिए सराहा जाता है। वर्ष 1988 के शिविर के उद्घाटन का सुयोग कान्यकुब्ज मंच पत्रिका के संस्थापक सम्पादक कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय एवं स्मृतिशेष श्रीमती वासन्ती पाण्डेय मिला था। □

- अशोक शुक्ल



मांगलिक

निगोहा (लखनऊ) निवासी व तिवारी ब्रदर्स समूह के संस्थापक कश्यप गोत्रीय कीर्तिशेष पं बनवारीलाल-चन्द्रकला तिवारी की सुपौत्री आयु अंकिता (आत्मजा- पं रविकान्त-अनुराधा तिवारी) का पाणिग्रहण संस्कार आनन्द महल, बाबुलनाथ रोड, मुम्बई के पं रमेशचंद्र-अलका मिश्रा के आत्मज चि हर्षवर्धन (प्रपौत्र- पं रामस्वरूप-गोमतीदेवी मिश्रा) के साथ 9-10 दिसम्बर, 2020 को उदयपुर (राजस्थान) के लीला पैलेस होटल में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न। निगोहा, कोलकाता, कानपुर, दिल्ली, मुम्बई, बंगलौर, हैदराबाद, वाराणसी से उपस्थित सगे-संबंधियों के बीच तिवारी परिवार के अग्रज धर्मिनष्ट पं लक्ष्मीकांत तिवारी के संरक्षण में आयोजित विवाह समारोह में कान्यकुञ्ज संस्कृति, परम्पराओं व लोकाचारों को अभिव्यक्ति मिली, वहाँ ऐश्वर्य व सुख सुविधा के सभी साधन उपलब्ध थे। मण्डपच्छादन, मातृ पूजन, धान धरेती, ढोलक पूजन, कलश घोटाई, देवीगीत, गौरिहारिन, सोहागिन, एननबारी कोरथ, द्वारचार, दुर्गा जनेऊ, आरती, जयमाल, पाणिग्रहण, कन्यादान, भाँवरें, कोहबर, खम्ब, आशीर्वाद, कुंवर कलेवा, शिष्ठाचार, समधौर, बड़ी बड़हर, विवाह भात, खोरबा, विदाई आदि समस्त लोकाचार सुनियोजित व मर्यादित सम्पन्न हुए।



समारोह में उपस्थित सगे-सम्बन्धियों को देश-विदेश के भोजन व्यंजन, ऐश्वर्यपूर्ण आवास, नृत्य-मनोरंजन के साथ उपहारस्वरूप रलजड़ित विघ्नहर्ता गणेशजी की मूर्ति, श्रीनाथद्वारा की पैटिंग व प्रसाद, काशीविश्वनाथ जी की पैटिंग व प्रसाद, तिरुमाला तिरुपति दर्शनम टीम के सौजन्य से लॉर्ड गोविंदा का अंगवस्त्रम प्रसाद, तिवारी ब्रदर्स के कोलकाता मित्र परिवार इमामी गृप के सौजन्य से इमामी उत्पादों का उपहार पैक, कन्नौज की सुगंध बिखेरता इत्रदान, मेहंदी रश्म में मां काली की नगरी कलकत्ता का आलता-सिंदूर, मेघदूत ग्रामोद्योग के सौजन्य से इम्फुनिटी उपहार पैक आदि भैंस्वरूप प्राप्त हुए। परम्परा और आधुनिकता के समन्वय के साथ आयोजित अंकिता-हर्षवर्धन का पाणिग्रहण संस्कार अविसरणीय रहेगा। नवदर्पणि को कोटिशः आशीष एवं तिवारी-मिश्र परिवार को शुभकामनाएं। □



कानपुर निवसित स्मृतिशेष पं छन्नीलाल-रामादेवी शुक्ला की सुपौत्री आयु कोमल (आत्मजा: श्री प्रदीप-मीना शुक्ला) का शुभविवाह 6 दिसम्बर 2020 को यशोदानगर, कानपुर निवसित पं जगन्नाथ दीक्षित के सुपौत्र चि श्रेय (आत्मज: श्री राजेन्द्र कुमार-रमा दीक्षित) के साथ कानपुर कैंट के बैल्यू होटल में गरिमापूर्ण वातावरण के साथ सम्पन्न। समारोह में उपस्थित सगे-सम्बन्धियों के बीच कानपुर के सांसद पं सत्यदेव पचौरी, पूर्व विधायक अजय कपूर आदि ने नवदर्पणि को सुखमय जीवन व उज्ज्वल भविष्य के आशीर्वाद दिए। ॐ स्वस्ति। □

इन्दौर के स्वामान्यधन्य व्यवसायी व कान्यकुञ्ज विद्याप्रचारिणी सभा के संरक्षक-अध्यक्ष पं विष्णुप्रसाद शुक्ल 'बड़े भया' एव स्मृतिशेष श्रीमती कृष्णा देवी के सुपौत्र चि आकाश (आत्मज- पं संजय शुक्ल 'विधायक' तथा अंगलि शुक्ला) का शुभविवाह मुम्बई के पं देवीप्रसाद-सरोज शुक्ला की सुपौत्री आयु शिल्पा (आत्मजा- पं विशालजी-रीना शुक्ला) के साथ 9 दिसम्बर 2020 को गरिमामय ढंग से सम्पन्न। 7 दिसम्बर को ओ-एस्टर ग्रीनमाउन्ट सिटी, इन्दौर में आयोजित संगीत व सहभाजे कार्यक्रम में तथा 9 दिसम्बर को सी- 21 पार्क, इन्दौर के विशाल प्रांगण में आयोजित विवाह समारोह में मप्र के मुख्यमंत्री शिवराज चौहान, पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ, सांसद ज्योतिरादित्य सिंधिया सहित प्रदेश के गणमान्य राजनेताओं, प्रशासकों, उद्यमीयों, व्यवसायीयों, समाजसेवियों आदि ने नवदर्पणि को अपना आशीर्वाद दिया। □





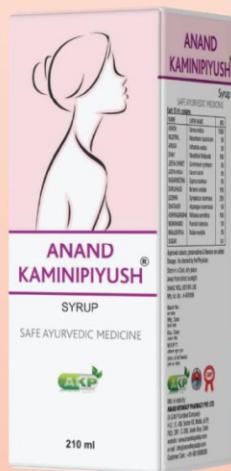
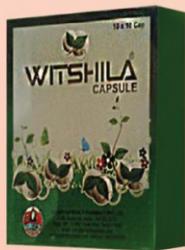
आयुर्वेद को अपनाएं, शरीर को स्वस्थ बनाएं।

यह बलवर्धक है
तथा कमज़ोरी,
चिड़चिड़ापन,
घबराहट होना,
प्रतिरोधक क्षमता कम
होना, जोड़ों का दर्द,
मानसिक व शारीरिक
थकान होना।

जोड़ों का दर्द,
कंधों का दर्द,
गठिया,
कमर का दर्द,
सूजन, जलना,
कट जाना आदि
में लाभदायक।

झड़ते बाल,
कमज़ोर बाल,
रुसी, दो मूँह
बाल, रुखे
एंव बेजान बाल
आदि सभी में
लाभदायक।

एंटी-एजिंग,
मर्दानगी में
बढ़ातरी,
दूध के साथ पीने
से स्पर्म बढ़ाने
में सहायक, अनिद्रा
की समस्या
होगी खत्म।



कोई स्वबंधू (पार्ट टाइम या फुल टाइम जॉब) के लिए संपर्क कर सकते हैं।



Anand Kayakalp Pharmacy Pvt. Ltd.

(Serving healthcare with dedication since 1968)

C - 88, Sector - 63, Noida -201301 (U.P.)

Regd. Off.: C - 260, Vivek Vihar, Delhi -110095

www.anandkayakalp.com, Helpline no. 9013771144



वैवाहिक विवरण

युवा वर्ग



| S.No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|-----------|-----------|----------|----------|--------|----------------|----------------|------------|-----------------|------------|------------|
| 1 | Abhay | Katyayan | | 07.07.89 | 5'1" | B Tech | Working | | Atul Mishra | Kanpur | 9415734174 |
| 2 | Abhijeet | Upmanyu | | 34 Yrs. | 5'9" | M.B.A(IIM) | MNC | Mumbai | Y.K.Bajpai | Kanpur | 9616423242 |
| 3 | Abhijeet | Bhardwaj | Divorcee | 14.08.79 | 5'10" | B.Com, MBA | Working | New Delhi | Vijay Trivedi | Lucknow | 9026844909 |
| 4 | Abhinav | Kashyap | Aadi | 15.08.81 | 5'9" | B.Com,M.B.A. | Working | Lucknow | J N Mishra | Lucknow | 9453005857 |
| 5 | Abhinav | Kashyap | | 03.03.92 | 6'1" | B Tech | Sofft. Engg. | Noida | M Tiwari | Kanpur | 8840387856 |
| 6 | Abhishek | Upmanyu | | 16.02.93 | | B Tech MBA | Business | | Mr Awasthi | Kolkata | 9830082587 |
| 7 | Abhishek | Upmanyu | Antya | 29.09.90 | 5'10" | MBA LLB | Working | Kanpur | A N Dwivedi | Kanpur | 9450146099 |
| 8 | Abhishek | Kashyap | | 12.11.89 | 5'6" | B Tech | Working | | S N Tiwari | Bareli | 9759574811 |
| 9 | Abhishek | Upmanyu | Madhya | 02.11.87 | 5'9" | B Tech | IBM | Banglore | K G Bajpai | Banda | 8115892903 |
| 10 | Adarsh | Upmanyu | Antya | 05.08.92 | 5'6" | B Tech | MNC | Noida | S Dubey | Orai | 9455784846 |
| 11 | Aditya | | | 24.07.93 | 5'9" | LLB | Advocate | Delhi | A Tiwari | New Delhi | 9711158848 |
| 12 | Aditya | Bharadwaj | Antya | 21.10.92 | 5'7" | B Tech | Sofft. Engg. | Pune | A Shukla | Fatehpur | 7985450956 |
| 13 | Aishvarya | Kashyap | Antya | 06.11.88 | 5'5" | MA,BED. | Working | Delhi | Rajesh Tripathi | Kanpur | 9415569546 |
| 14 | Ajay | Kashyap | Antya | 12.06.88 | 5'9" | B Tech NIT | Tab Steel | Tata Nagar | M Mishra | Kanpur | 9532377914 |
| 15 | Akanksh | Upmanyu | Antya | 29.09.90 | 5'5" | MBBS,MS(Ortho) | Doctor | Hyderabad | R. Dubey | Hyderabad | 9676331222 |
| 16 | Akhil | Upmanyu | Madhya | 28.06.93 | 5'8" | M.TECH(MNIT) | Cisco | Chennai | M.K Bajpai | Gwalior | 9926518418 |
| 17 | Akhilesh | Bhardwaj | Manglik | 17.12.87 | 6' | B.TECH | TCS | Kolkata | Pawan Shukla | Kolkata | 9836067192 |
| 18 | Akshat | Upmanyu | Aadi | 23.05.85 | 5'11" | M Com | Asst. Manager | | G P Bajpai | Sadar | 9422807561 |
| 19 | Akshay | Katyayan | Aadi | 18.11.88 | 5'8" | BBA, CCNA | MNC | Gurugram | U.N.Mishra | Lucknow | 9897452185 |
| 20 | Aman | Bharadwaj | Antya | 08.10.91 | 6" | BE | Manager | Ambicapur | G Trivedi | Kanpur | 8085783341 |
| 21 | Amit | Upmanyu | Antya | 07.09.91 | 5'9" | BBA,LL.B | Manager | Noida | B.P Dwivedi | Kanpur | 8604700313 |
| 22 | Amit | Kashyap | Madhya | 03.02.88 | 5'7" | B.E | Quality | Udaipur | G Tiwari | Udaipur | 9414238854 |
| 23 | Amit | Shandilya | | 15.08.84 | 5'8" | MCA,BED. | Teacher | Orai | A.K.Mishra | Orai | 9889225623 |
| 24 | Amit | Kashyap | | 29.03.84 | 5' | B.Tech | CCI | H P | Uma Dixit | Lucknow | 9455508989 |
| 25 | Amul | Shandilya | | 22.04.92 | 5'11" | B Tech M Tech | Civil Engg. | | Mishra | Kanpur | 9453041636 |
| 26 | Anand | Garg | | 15.05.85 | 6'2" | B E | Service | Gujrat | Pratibha Shukla | Raipur | 9329955405 |
| 27 | Anant | Katayan | | 19.04.89 | 5'9" | LLM (DU) | OWN Biz. | New Delhi | A Mishra | Agra | 9411922924 |
| 28 | Anirudh | Kashyap | Antya | 30.04.87 | 5'4" | M.SC | Working | Himachal | B Tiwari | Himachal | 8800422667 |
| 29 | Ankan | Shandilya | Antya | 16.09.92 | 6'1" | B.Tech | Infosys | Mysore | R.K. Dixit | Kanpur | 7376692193 |
| 30 | Ankesh | Bhardwaj | Madhya | 29.07.85 | 5'8" | B.Tech.,MBA | MNC | Banglore | A.K.Pandey | Bhopal | 9425682050 |
| 31 | Ankit | Bhardwaj | | 11.03.87 | 6' | B Tech | Service | Banglore | R Trivedi | Kanpur | 9450125732 |
| 32 | Ankit | Bhardwaj | | 14.05.85 | 5'7" | M Com, MBA | Working | Noida | K K Pandey | Kanpur | 9336998383 |
| 33 | Ankit | Bhardwaj | | 24.04.91 | 5'9" | B Tech | Sofft. Engg. | Pune | S K Shukla | Kanpur | 9839303507 |
| 34 | Ankit | Shandilya | | 08.05.90 | 6" | B Tech | Sofft. Engg. | Pune | A K Mishra | Orai | 9889225623 |
| 35 | Ankur | Kashyap | Madhya | 29.06.88 | 6'1" | B.Tech | Soft Engg | Pune | R S tiwari | Bilaspur | 7000649784 |
| 36 | Ankur | Bhardwaj | | 22.08.85 | 5'8" | MBBS | Doctor | Lucknow | Vinod Shukla | Lucknow | 9005716002 |
| 37 | Ankur | Bharadwaj | | 13.12.83 | 5'3" | | Officer | | S K Pandey | | 9557049492 |
| 38 | Ankur | Bharadwaj | Madhya | 25.09.90 | 6" | MCA | Sofft. Engg. | Banglore | A K Shukla | Kanpur | 9415169529 |
| 39 | Ankush | Bhardwaj | | 16.11.92 | 5'11" | Graduate | Sofft. Engg. | USA | AK Pandey | Delhi | 9899784632 |
| 41 | Bharat | Bharadwaj | Madhya | 27.12.93 | 5'9" | M Tech IIT | Engineer | Chennai | D M Shukla | Lucknow | 9415472155 |
| 41 | Anshuman | Kashyap | Aadi | 25.01.88 | 5'8" | M COM | Manager | Etawah | A Tripathi | Etawah | 9411993442 |
| 42 | Antariksh | Katyayan | Aadi | 23.11.89 | 5.7' | B-Tech, | MNC | Gurugram | K.K. Mishra | Kanpur | 9415431600 |
| 43 | Anu | Kashyap | | 13.06.89 | 5'9" | MBBS | Metro Hospital | Delhi | S.G Dixit | Farukhabad | 7974621202 |
| 44 | Anuj | Upmanyu | Antya | 15.08.74 | 5'5" | BA | Service | Mumbai | AK Dwivedi | Jalaun UP | 9322141455 |
| 45 | Anupam | Bharadwaj | | 29.06.84 | 5'5" | B Tech | Sofft. Engg. | Banglore | A Shukla | Kanpur | 9450496109 |

| S No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV | LOCN. | PARENT NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|-----------------|-----------|--------|----------|--------|-------------------|----------------|-------------|---------------|-------------|------------|------------|
| 46 | Anupam | Bharadwaj | Aadi | 29.06.84 | 5'5" | B Tech C DAC | Softt. Engg. | Banglore | A Shukla | Kanpur | 9450496109 | |
| 47 | Anupam | Kashyap | Antya | 15.07.88 | 5'5" | M.Com,MBA | Moody's | Gurgaon | N.S Tripathi | Lucknow | 8299654731 | |
| 48 | Anuraag | Bhardwaj | | 27.05.87 | 5'9" | B.Tech | SAIL | West Bangal | Anil Pandey | Sitapur | 9839717959 | |
| 49 | Anuraag | Kashyap | | 04.11.88 | 5'5" | B Tech | Softt. Engg. | Canada | R K Tiwari | Kanpur | 9862487293 | |
| 50 | Aryan | Shandilya | | 18.06.89 | 5'10" | B Tech | Business | | S M Tripathi | | 9810295454 | |
| 51 | Arihant | Bhardwaj | | 01.08.88 | 6'2" | MBA | MNC | Hyderabad | A Shukla | Hyderabad | 9704916421 | |
| 52 | Ashish | Upmanyu | Aadi | 01.06.86 | 5'8" | BE | TCS | USA | R.S Dubey | Muzaffarpur | 9430933254 | |
| 53 | Ashish | Upmanyu | | 09.09.88 | 5'9" | B.A. | Business | Lucknow | R.N.Trivedi | Lucknow | 9454242424 | |
| 54 | Ashish | Bhardwaj | Madhya | 21.11.87 | 5'7" | B Tech | MNC | Pune | S K Shukla | Kanpur | 9450336902 | |
| 55 | Ashish | Katyayan | Madhya | 27.07.85 | 5'10" | MBA | IBM | Banglore | A Mishra | Kanpur | 9450635424 | |
| 56 | Ashish | Bhardwaj | Antya | 25.09.89 | 5'7" | BE,MTech | Service | Kuwait City | Y.S Shukla | Unnao | 8369492792 | |
| 57 | Ashish | Bhardwaj | | 33 Yrs. | 5'6" | High school | Business | Kanpur | S K Shukla | Kanpur | 7752944773 | |
| 58 | Ashish | Bhardwaj | Antya | 11.04.88 | 5'8" | BE Engg. | Service | Bhopal | A K Trivedi | Bhopal | 9425600600 | |
| 59 | Ashish | Bharadwaj | Aadi | 17.11.89 | 5'9" | B.Tech | Working | Singrauli | U Shukla | Gaya | 8544310205 | |
| 60 | Ashish | Bharadwaj | | 29.07.89 | 5'8" | B.Tech CS MBA | Asst. Manager | Mumbai | B K Shukla | Kanpur | 9450130799 | |
| 61 | Ashish | Upmanyu | Madhya | 26.10.88 | 5'8" | B Tech | Wipro | Noida | R Awasthi | Kanpur | 9839188266 | |
| 62 | Ashu | Sandilya | | 24.12.88 | 5'2" | MCA | Working | Patna | S K Dixit | Delhi | 9811235591 | |
| 63 | Ashutosh | Katyayan | | 04.03.92 | 5'10" | B.com M.com | Working | Dehradun | A K Mishra | Rishikesh | 9837089868 | |
| 64 | Ashutosh | Upmanyu | | 27.02.89 | 6" | Working | LIC | | A Dwivedi | Kanpur | 9451427339 | |
| 65 | Ashwani | Bhardwaj | | 31.07.83 | 5'6" | BA | Business | Kanpur | S Shukla | Kanpur | 9657666327 | |
| 66 | | | | | | | | | | | | |
| 67 | Arun | Bharadwaj | Aadi | 02.04.84 | 5'4" | Graduate | Railways | Ahemdabad | S K Shukla | Kanpur | 9810564979 | |
| 68 | Aryan | Shandilya | | 18.06.86 | 5'10" | B Tech | Business | Delhi | S M Tripathi | Delhi | 9810295454 | |
| 69 | Avinash | Shandilya | | 1995 | 5'7" | B Tech | Web Designer | Lucknow | K R Mishra | Lucknow | 9453890107 | |
| 70 | Bhasker | Katyayan | Aadi | 11.01.87 | 5'10" | M.com LLB | Practice Court | Kanpur | G D Mishra | Kanpur | 9452496423 | |
| 71 | Brahmendra | Kashyap | Madhya | 19.02.80 | 5'7" | BCom | Photographer | Jabalpur | B. Tiwari | Jabalpur | 9907286364 | |
| 72 | Chakrapadi | Katyayan | | 01.12.89 | 5'9" | B Tech(NITN) | PCS Officer | Utrakhand | R J Mishra | Lucknow | 9415752075 | |
| 73 | Chandra Prakash | Kashyap | Antya | 31.01.84 | 5.6' | M.Com | Business | Kanpur | B.S. Tripathi | Kanpur | 9044512978 | |
| 74 | Chandrasekhar | Bhardwaj | Madhya | 09.01.87 | 5'6" | MAC, BAD | Teacher | Jhabua | Azad Sharma | Jhabua | 9714709819 | |
| 75 | Chinmay | Kashyap | | 19.01.89 | 6" | MA | Working | Indore | S Dixit | Indore | 9425400847 | |
| 76 | Deepak | Bhardwaj | | 16.09.85 | 5'11" | IIT M.Tech | Bank Manager | Mumbai | Manju Trivedi | Kanpur | 9415727581 | |
| 77 | Deepankar | Upmanyu | Antya | 03.06.88 | 5'8" | B Tech | Softt. Engg. | Pune | D Dwivedi | Kanpur | 9415479269 | |
| 78 | Devas | Bhardwaj | | 08.02.87 | 5'9" | BE | Working | Delhi | D K Shukla | Kota | 9414189670 | |
| 79 | Devesh | Bhardwaj | | 27.07.81 | 5'9" | B.Sc, MBA | Officer PSU | Gandhinagar | S.C. Shukla | Gandhinagar | 9737877705 | |
| 80 | Divyanshu | Katyayan | Madhya | 13.12.87 | 5'9" | MBA | Asst Mngr | Delhi | A.K. Mishra | Lucknow | 9838792102 | |
| 81 | Dr Dharmes | Kashyap | Aadi | 13.11.83 | 5'9" | B.D.S | Practice | Dubai | Mrs P Tewari | Lucknow | 9554477880 | |
| 82 | Gajendra | Kashyap | | 31.08.89 | 5'8" | B.com | Business | Jabalpur | K P Tiwari | Jabalpur | 9907286364 | |
| 83 | Ganesh | Upmanyu | | 33 YRS. | 5'8" | IIT,ISB | Service | Gurugram | O.P.Awasthi | Kanpur | 9935317848 | |
| 84 | Gaurav | Upmanyu | Madhya | 27.04.88 | 5'10" | B.TECH, MBA | Regional Mngr | Lucknow | S.C Bajpai | Lucknow | 9452735770 | |
| 85 | Gaurav | Katyayan | | 24.10.90 | 5'7" | BE | Project Engg | Pune | S.K Mishra | Lucknow | 8840284768 | |
| 86 | Gaurav | Bhardwaj | Madhya | 23.10.88 | 6" | B TECH | DELL | Noida | D.K Pandey | Kanpur | 7599101722 | |
| 87 | Gaurav | Shandilya | Aadi | 02.12.87 | 5'11" | B Tech(NIT), PGDM | ICICI Bank | NCR | O.S.Mishra | Kanpur | 9935616625 | |
| 88 | Gaurav | Shandilya | Aadi | 16.01.84 | 6" | B.Tech | TATA Power | Orissa | S.Mishra | Lucknow | 9415794058 | |
| 89 | Gaurav | Kashyap | Antya | 12.06.85 | 5'5" | B.TECH, MBA | Business | Orai | S.R Dwivedi | Jalaun | 8382947554 | |
| 90 | Gaurav | Upmanyu | | 27.04.88 | 5'9" | B Tech MBA | Working | Lucknow | S C Bajpai | Lucknow | 9452735770 | |
| 91 | Hariom | Bhardwaj | Madhya | 07.03.88 | 188cm | B Tech NIT | MNC | Delhi | R Shukla | Bhopal | 9849158318 | |
| 92 | Haritabh | Sankrit | | 30.09.86 | 5'7" | M B A | Self Employed | Kanpur | Ajay Shukla | Kanpur | 9415050280 | |
| 93 | Harsh | Bhardwaj | | 29.01.88 | 5'11" | B.Tech | MNC | Banglore | Jayant Shukla | Kanpur | 9919333014 | |
| 94 | Harshal | Kashyap | Aadi | 19.12.88 | 5'9" | BA MSHW | Business | Maharastra | R.S Tiwari | Risod | 9921260143 | |
| 95 | Hemant | Bhardwaj | Aadi | 30 yrs | 5'5" | LLB | Advocate | Lucknow | S N Pandey | Lucknow | 9044421708 | |

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ क्वाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

| S No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV | LOCN. | PARENT NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|------------|-----------|--------|----------|--------|-----------------|-------------------|------------|----------------|-------------|------------|------------|
| 96 | Himanshu | Katyayan | Antya | 08.11.86 | 5'8" | B.Tech, MBA | Mercedez | Bengaluru | P.K. Mishra | Varanasi | 9451938889 | |
| 97 | Himanshu | Shandilya | | 22.09.88 | 5'7" | B.Tech | TCS | Pune | A.N. Dixit | Gorakhpur | 8588071087 | |
| 98 | Himanshu | Bhardwaj | Aadi | 06.02.88 | 5'5" | BBA,MBA | CITI | Mumbai | S.C.Shukla | Lucknow | 9839014905 | |
| 99 | Himanshu | Katyayan | | 05.06.90 | 5'7" | B Sc B Tech | Civil Engg. | Ranchi | R N Mishra | Kanpur | 9415727238 | |
| 100 | Ishan | Upmanyu | Antya | 16.6.89 | 5'7" | B.Sc | Indian Army Capt. | J&K | Mahesh Dixit | Bhopal | 7587598015 | |
| 101 | Jayant | Upmanyu | | 10.09.87 | 5'7" | B.Tech.,MBA | MNC | Gurugram | P.K.Agnihotri | Kanpur | 9936150917 | |
| 102 | Jayprakash | Shandilya | Madhya | 22.08.84 | 5'7" | com. hard .eng. | Engineer | aurangabad | Vijay Mishra | Aurangabad | 8482824522 | |
| 103 | Kanhaiya | Upmanyu | Aadi | 19.11.90 | 5'6" | B. Com, | Working | Andheri | K Dubey | Jhansi | 8007256328 | |
| 104 | Kartik | Upmanyu | | 02.01.90 | 6" | BE M tech | Working | Gurgaon | G Awasthi | Ghaziabad | 9924292224 | |
| 105 | Kartik | Upmanyu | | 02.01.90 | 6" | M Tech | Engineer | Gurgaon | K Awasthi | Gujrat | 9824233659 | |
| 106 | Kartikeya | Katyayan | Madhya | 25.11.88 | 6' | B.Com LL.B CS | Practicing | Noida | Suman Mishra | Delhi | 9818678011 | |
| 107 | Kshitij | Upmanyu | Madhya | 05.06.88 | 5'10" | B.Tech | MNC | Noida | V.K.Agnihotri | Gahziabad | 8130743430 | |
| 108 | Kshitij | Kashyap | | 24.03.91 | 5'10" | BE (BITS) | Working | Mumbai | P Tripathi | Unnao | 9804242502 | |
| 109 | Kshitij | Kashyap | Antya | 01.03.93 | 5'8" | B Tech it | ONGC | Chennai | B Tripathi | Jabalpur | 9415000201 | |
| 110 | Kunal | Shandilya | Antya | 03.06.85 | 5'8" | B.Tech., | S.W Engg | Mumbai | R.K.Mishra | Lucknow | 9918383464 | |
| 111 | Madhvedra | Katyayan | | 21.06.91 | 5'11" | B Tech | Service | Banglore | R K Mishra | Lucknow | 9450672302 | |
| 112 | Mahesh | Sankrit | Antya | 14.12.89 | 5'9" | MBA | Bank | Jagdalpur | R K Pandey | Reewa | 9109711683 | |
| 113 | Maj. Ram | Upmanyu | | 27.03.89 | 5'8" | B.Tech | Indian Army | | R.K. Dubey | Jabalpur | 9424357435 | |
| 114 | Malay | Kashyap | Aadi | 19.09.90 | 5'8" | B.TECH | Bajaj | Lakhimpur | P.N Tiwari | Kanpur | 9452364432 | |
| 115 | Manish | Kashyap | Madhya | 27.09.78 | 5'6" | M.Com, MBA, LLB | Advocate | Bhopal | G.M.Tripathi | Kanpur | 9753416001 | |
| 116 | Manish | Upmanyu | | 10.08.82 | 5'10" | M Tech | L&T | Vadodara | Y N Bajpai | Kanpur | 9336123644 | |
| 117 | Manish | Kashyap | | 07.10.86 | 5'8" | MCA | Softt. Engg. | | R Tiwari | Fatehpur | 9871806482 | |
| 118 | Manu | Katyayan | Aadi | 06.07.84 | 5'8" | MCA MS | Working | Cikago | A.K.Mishra | Bareili | 9410431399 | |
| 119 | Manu | Upmanyu | Antya | 24.06.87 | 6' | B.Tech., | P.O.Bank | | R K Awasthi | Lucknow | 9936213811 | |
| 120 | Mayank | Bhardwaj | Aadi | 22.12.83 | 5'10" | B.Tech., | R Jio | Kanpur | P.Shukla | Kanpur | 9807147903 | |
| 121 | Mayank | Upmanyu | Antya | 30.06.87 | 5'6" | BBA MBA | Working | Gurgaon | A K Awasthi | Kanpur | 9532098695 | |
| 122 | Mayank | Bhardwaj | | 19.08.87 | 6'1" | Engineering | Merchant Navy | | Y Shukla | Kanpur | 9935968533 | |
| 123 | Mayank | Upmanyu | | 30.06.87 | 5'6" | MBA | Working | Gurgaon | A K Awasthi | Kanpur | 9532098695 | |
| 124 | Mohit | Bhardwaj | | 09.10.89 | 5'6" | B.COM, BED | Business | Kanpur | O.P Shukla | Kanpur | 9839104819 | |
| 125 | Mohit | Bhardwaj | Aadi | 19.08.92 | 5'9" | B Tech | L & T | Varodra | A Shukla | Agra | 9528324823 | |
| 126 | Mohit | Shandilya | Aadi | 04.07.88 | 5'11" | B Tech MBA | TCS | Mumbai | P Mishra | Kanpur | 8317093609 | |
| 127 | Mohit | Kashyap | Aadi | 29 yrs. | 5'7" | M Tech | Persuing PHD | | R K Tiwari | Kanpur | 9910906133 | |
| 128 | Mohit | katyayan | | 16.12.86 | 6'2" | B Tech IT | Service | | S R Mishra | Noida | 9310157413 | |
| 129 | Mridul | Kashyap | | 15.08.88 | 5'6" | B.Tech | Ericsson | Delhi | A.K.Tripathi | Jhansi | 9453622253 | |
| 130 | Mukul | Upmanyu | Madhya | 08.06.88 | 5'8" | BSc, MCA | Govt. Job | Lucknow | U.C. Bajpai | Lucknow | 9889719019 | |
| 131 | Mukund | Kashyap | Antya | 30.12.89 | 5'11" | B Tech MBA | Asst. Manager | | M S Tripathi | Unnao | 9235796103 | |
| 132 | Narendra | Katyayan | | 06.11.78 | 5'6" | B.A. | OWN Biz. | Kanpur | P.K.Mishra | Kanpur | 7355717632 | |
| 133 | Narendra | Shandilya | Madhya | 07.12.86 | 5'11" | B.A., PGDCA | Self Employed | Indore | S.D Dixit | Indore | 9424012517 | |
| 134 | Nikhar | Kashyap | | 22.05.91 | 5'11" | B SC MBA | Senior Analyst | Gurugram | N Tripathi | Kanpur | 8299726705 | |
| 135 | Nikhil | upmanyu | | 31.05.88 | 5'10" | B Arch | Business | Indore | C P Dubey | Indore | 9926061402 | |
| 136 | Nishit | Katyayan | Antya | 03.09.88 | 5'8" | B.Tech., | TCS | Lucknow | Vinodmishra | Lucknow | 9415904841 | |
| 137 | Nitin | Shandilya | Madhya | 23.01.87 | 6'2" | MCA | Lecturer | Bhopal | Indresh Dixit | Bhopal | 7000201357 | |
| 138 | Nitish | Bhardwaj | Madhya | 08.03.90 | 6'2" | B com MBA | Manager | Pune | VK Shukla | Pune | 8806992260 | |
| 139 | Nitish | Kashyap | | 28.11.90 | 5'9" | B Tech | Infosys | Hyderabad | S Dubey | Hyderabad | 9440848560 | |
| 140 | Nitish | Shandilya | Madhya | 16.04.91 | 5'7" | B Tech | Working | Banglore | N Dixit | Kanpur | 8840176657 | |
| 141 | Pawan | Bharadwaj | | 16.11.93 | 5'8" | B Tech | Softt. Engg. | Gurgaon | A K Pandey | Kanpur | 9651657471 | |
| 142 | Pourush | Upmanyu | Aadi | 19.09.88 | 5'11" | BE, M.Tech | SBI | Durg | Arvind Awasthi | Bhilai | 7409175092 | |
| 143 | Prakhar | Bharadwaj | | 01.11.92 | 5'9" | B Tech (ME) | Ex. Engg. | Mumbai | Pandey | Lucknow | 7905340376 | |
| 144 | Pranshu | Shandilya | Madhya | 14.03.90 | 6" | B Com | Working | Gurgaon | A Mishra | Delhi | 9311601401 | |
| 145 | Pranjali | Kashyap | Antya | 25.04.88 | 5'7" | B.Tech | HP | Bengaluru | Prakash Tiwari | Unnao | 9450020858 | |

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुञ्ज मंच' कानपुर

| S.No. | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|-------|-------------|-----------|---------|----------|--------|-------------------|-------------------|----------------|-----------------------|----------------|-----------------------|
| 146 | Prashant | Upmanyu | Antya | 05.01.88 | 5'9" | M.Sc.(BITS Pilani | Oracle Service | Banglore Delhi | S.K.Awasthi A Awasthi | Kanpur Lucknow | 8720053266 9450652296 |
| 147 | Prashant | Upmanyu | Madhyaa | 27.09.89 | 5'9" | B Com, MBA | Company | Haryana | H S Bajpai | Haryana | 8882362115 |
| 148 | Prashant | Upmanyu | Madhyaa | 01.07.90 | 5'11" | M Com M sc | Deffence | Haryana | Dev Raj | Haryana | 9740179801 |
| 149 | Prateek | Bharadwaj | | 31.01.95 | 5'6" | BE | Deffence | Haryana | Dev Raj | Haryana | 9740179801 |
| 150 | Prince | Bharadwaj | | 02.08.90 | 5'10" | BE | Softt. Engg. | Pune | R Pandey | Indore | 9826048929 |
| 151 | Pritesh | Sankrit | Aadi | 24.12.90 | 5'6" | B Tech | Company | Delhi | A Shukla | Kanpur | 9454087264 |
| 152 | Puneet | Katyayan | Antya | 17.11.90 | 6" | B Tech | MNC | | S C Mishra | Lucknow | 8707809137 |
| 153 | Puneet | Bharadwaj | | 11.05.92 | 5'9" | M COM MBA | Business | Jaipur | D Shukla | Jaipur | 9414075174 |
| 154 | Puneet | Shandilya | Aadi | 18.10.90 | 5'7" | Post Graduate | Employe | | S K Dixit | Chandigarh | 8837733436 |
| 155 | Pushpendr | Kashyap | | 02.07.91 | 5'11" | B Tech | Govt.itnruction | Kanpur | Rajesh Tripathi | Kanpur | 7510086965 |
| 156 | Rahul | Kaushik | Antya | 06.01.86 | 5'11" | B.COM, MBA | Self Employed | Sagar | S.G Dubey | Sagar | 8889022999 |
| 157 | Rahul | Katyayan | Aadi | 16.07.85 | 5'4" | | KESCO | Kanpur | B P Mishra | Kanpur | 9473693278 |
| 159 | Rajat | Kashyap | Aadi | 13.11.90 | 5'6" | B Tech | Officer | Mumbai | M Tripathi | Unnao | 9969253892 |
| 160 | Raj Kishore | Katyayan | Aadi | 04.05.70 | 5'9 | M.Com LL.B | Advocate | Hyderabad | G Mishra | Hyderabad | 9848560876 |
| 161 | Rajan | Bhardwaj | Antya | 12.01.90 | 5'9" | BE | Soft. Engg. | Pune | C Chaturvedi | BHOPAL | 9406903868 |
| 162 | Rajiv | Katyayan | | 19.06.90 | 5'10" | B Tech | MNC | Gurugram | N K Mishra | Kanpur | 7275990253 |
| 163 | Ram | Sankrit | | 08.03.77 | 5'10" | B.Com | INVEST. ADVO. | Kanpur | G.S.Shukla | Kanpur | 9889526808 |
| 164 | Ranaveer | Severn | | 28.08.85 | 5'10" | B.Tech., | Oracle | Banglore | J.N.Tiwari | Kanpur | 9415133084 |
| 165 | Raval Sagar | Bharadwaj | Aadi | 10.11.89 | 5'3" | 10th, ITI | Business | Dist. Su.Nagar | Prabhasankar | Gujarat | 8200989584 |
| 166 | Ravi | Bhardwaj | | 27.11.86 | 5'6" | B.Tech., | HCL | Noida | A.K.Pandey | Lucknow | 9451002606 |
| 167 | Rishee | Bhardwaj | | 07.11.88 | 5'11" | B.Tech | MNC | Banglore | Y.K.Pandey | Jaipur | 9929115628 |
| 168 | Ritam | Bhardwaj | Madhya | 07.06.92 | 5'8" | B Tech | Amazon.com | Seattle | Pranav Shukla | Kanpur | 9839212801 |
| 169 | Robin | Katyayan | Madhya | 24.08.86 | 5'9" | B.Tech | Asst. Manager | Mumbai | S.C.Agnihotri | Lucknow | 9451063051 |
| 170 | Rohit | Bhardwaj | | 16.06.92 | 5'6" | B COM | Business | Kanpur | O P Shukla | Kanpur | 7860419999 |
| 171 | Rohit | Upmanyu | Antya | 01.05.87 | 5'8" | BE, MS | Working | California | D.M Dubey | Solapur | 9370422380 |
| 172 | Rohitash | | | 09.05.85 | 5'8" | B.Sc,MBA | Working | Ghaziabad | S N Mishra | Barabanki | 9451529439 |
| 173 | Sarthak | Sankrit | Aadi | 20.04.91 | 5'9" | | MNC | Gurgaon | G Shukla | | 9899187815 |
| 174 | Shakul | Kashyap | Aadi | 26.08.91 | 5'6" | B Tech | Softt. Engg. | Banglore | V Dubey | Oraiya | 9058889841 |
| 175 | Sarvesh | Bharadwaj | | 02.07.87 | 5'8" | BE MBA | ICICI Bank | Hyderabad | H N Dixit | Gwalior | 6376315180 |
| 176 | Saurabh | Upmanyu | Aadi | 16.09.89 | 6' | B Sc | Central Govt | New Delhi | A Dwivedi | Jhansi | 9236923675 |
| 177 | Saurabh | Katyayan | Antya | 24.04.88 | 5'6" | MBA | Working | Lucknow | Arvind Mishra | Lucknow | 9120110396 |
| 178 | Saurabh | Bhardwaj | Madhya | 07.12.82 | 6' | M.Com . | Govt Service | Kota | R.K.Shukla | Kota | 9414938823 |
| 179 | Saurabh | Bhardwaj | Aadi | 01.06.84 | 5'6" | Diploma | VOLTAS | Kanpur | A.P.Shukla | Kanpur | 9335121850 |
| 180 | Saurabh | Bhardwaj | Antya | 19.12.91 | 5'9" | B Com PGDCA | Civil | | D Shukla | Raipur | 9425205383 |
| 181 | SAURABH | Gargeya | Antya | 16.06.91 | 5'10" | B.Tech, MBA | Colgate Palmolive | Chennai | L.K Pandey | Allahbad | 9424120637 |
| 182 | Saurabh | Upmanyu | Aadi | 27.08.88 | 5'7" | B.Tech, MBA | Asst. Manager | Lucknow | T.N Dwivedi | Lucknow | 9936101701 |
| 183 | Saurabh | Kashyap | | 18.12.93 | 6'3" | CA | Service | Kolkata | R K Tiwari | Kolkata | 9391158015 |
| 184 | Shailendra | Shandilya | Madhya | 23.07.83 | 6' | MBBS | Pursuing MD | | R.C.Dixit | Unnao | 9793261855 |
| 185 | Sharad | Kashyap | | 26.10.85 | | Inter SC | Sales Officer | Kanpur | S P Tiwari | Kanpur | 9628835452 |
| 186 | Shashank | Bharadwaj | | 04.03.91 | 5'6" | B Tech | Infosys | Pune | S Pandey | Kanpur | 9450135061 |
| 187 | Sheel | Kashyap | Antya | 28.12.78 | 5'8" | M.Sc, MBA | Lecturer | Lucknow | G.H.Awasthi | Lucknow | 9415794589 |
| 188 | Shikhar | Kashyap | Madhya | 11.08.89 | | MBA | Own Biz. | Raipur | S Tiwari | Pune | 7250011947 |
| 189 | Shishir | Bharadwaj | Antya | 20.08.88 | 5'8" | B Tech | Softt. Engg. | Banglore | A Trivedi | Kanpur | 9451548120 |
| 190 | Shivam | Garg | Aadi | 10.02.92 | 5'8" | MBA | Business | Raipur | A Shukla | Raipur | 9644699000 |
| 191 | Shivankur | Sankrit | | 15.01.91 | 6'1" | LLM | Supereme Court | New Delhi | A Shukla | Kanpur | 9044001828 |
| 192 | Shobhit | Sankrit | | 04.03.93 | 5'8" | B Tech | Automobile Engg | Banglore | V.P Mishra | Lucknow | 9454835232 |
| 193 | Shobhit | Kashyap | Manglik | 09.07.93 | 5'8" | B Tech | Job | Gurgaon | H Tripathi | Kanpur | 9653076145 |
| 194 | Shreesh | upmanyu | Antya | 15.08.90 | 5'11" | MA | Working | Kanpur | A Bajpai | Kanpur | 9794837727 |
| 195 | Shrey | Sankrit | Madhya | 23.12.82 | 5'9" | B Tech | TCS | Lucknow | S N Shukla | Lucknow | 7846786559 |

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ क्वाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

| S.No. | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|-------|------------|-----------|---------|----------|--------|------------------|-----------------|-------------|----------------|--------------|------------|
| 196 | Shreyansh | Kashyap | | 18.05.95 | 6" | B Tech MS | Soft. Engg. | R K Tiwari | Kanpur | 9044019998 | |
| 197 | Shubham | Vats | Madhya | 13.02.88 | 5'10" | B.Tech | MNC | Ahmedabad | Anil Tiwari | Etawah | 9415409967 |
| 198 | Shubham | Bharadwaj | Antya | 12.12.90 | 5'6" | | HSBC | Pune | Shukla | Lakhimpur | 9452513422 |
| 199 | Shubham | Katayan | | 07.09.92 | 5'9" | B Tech | Working | MS Jermamy | A K Mishra | Lucknow | 9113694742 |
| 200 | Shubhendru | Upmanyu | | 09.11.86 | 6' | MS, PHD(USA) | Research Astt | Chicago | M.L.Trivedi | Pune | 9096257755 |
| 201 | Shubhang | Upmanyu | Antya | 17.06.91 | 5'9" | B Tech (IT) | Manager | Delhi | R Dwivedi | Kanpur | 9450936845 |
| 202 | Shubrat | Kashyap | Aadi | 17.06.83 | 5'8" | M.Com,MBA | Genpact | Gurugram | Ravi Tripathi | Kanpur | 7275508227 |
| 203 | Sidharth | Bhardwaj | Madhya | 17.07.88 | 5'7" | B Tech | Working | Pune | R K Pandey | Kanpur | 9415210728 |
| 204 | Sonu | Bhardwaj | Aditya | 11.11.85 | 5'7" | M Tech | Working | Noida | S K Pandey | Gwalior | 9407015945 |
| 205 | Sonu | Bhardwaj | Aadi | 24.11.85 | 5'9" | M Tech | MNC | noida | S K Pandey | Gwalior | 9407465886 |
| 206 | Shousya | Bharadwaj | Aadi | 03.07.91 | 5'7" | B Tech | Working | Banglore | U D Shukla | Lucknow | 8787015430 |
| 207 | Suchit | Sankrit | | 10.09.92 | 5'8" | B Tech | MNC | Mumbai | S C Shukla | Lucknow | 9838073011 |
| 208 | Suchitan | Upmanyu | Madhya | 29.11.86 | 5'11" | MBA | Lecturer | Kanpur | S.N.Trivedi | Kanpur | 9839300303 |
| 209 | Sunil | Bhardwaj | Aadi | 09.09.84 | 5'7" | MCA | Selt Occupied | Banglore | A Dubey | Kanpur | 9739060321 |
| 210 | Suryansh | Katayan | Madhya | 26.12.91 | | B Tech | TCS | Mumbai | A K Mishra | Lucknow | 9838792102 |
| 211 | Sushant | | | 26.11.85 | 6'1" | B.Sc.MBA | Working | Delhi | H.D.Chaubey | Rajgarh | 9939484830 |
| 212 | Suyash | Upmanyu | Antya | 20.01.88 | 5'11" | B.Com. | Mktg. Executive | Rajnandgaon | Sunil Bajpai | Kanpur | 9301737555 |
| 213 | Tarun | Bharadwaj | Madhya | 08.07.90 | 5'9" | B Tech | Soft. Engg. | Banglore | V S Pandey | Kanpur | 9455359080 |
| 214 | Umang | Bharadwaj | | 07.06.88 | 6" | MS MBA | Working | USA | G Dwivedi | Indore | 7024342778 |
| 215 | Udayan | Shandilya | Madhya | 22.11.86 | 5'5" | M.Sc MBA | Govt. Ltd | Gwalior | Y D Mishra | Gwalior | 9826297917 |
| 216 | Utkarsh | Shandilya | | 22.02.88 | 5'11" | M.Tech.(BITS) | MNC | Banglore | P.K.Mishra | Kanpur | 7275743955 |
| 217 | Utkarsh | Katayan | Antya | 05.06.86 | 5'9" | MBA | Medical Biz | Lakhimpur | D.C.Misra | Lakhimpur | 9451687980 |
| 218 | Utkarsh | Dhananjya | | 01.03.89 | 5'9" | B Tech | E.Commerce co. | Lucknow | P N Tiwari | Bareli | 9839317538 |
| 219 | Vardan | | | 19.09.95 | 5'11" | B Tech | | | A Dixit | Firozabad | 9410445064 |
| 220 | Varun raj | Kashyap | | 10.01.93 | 5'10" | B Tech | Bank Manager | UP | A Tripathi | Unnao | 8318639985 |
| 221 | Vaibhav | Garg | Madhya | 16.06.91 | 6'1" | B.TECH | Bank(PO) | Merath | H.K Chaturvedi | Kanpur | 9792877087 |
| 222 | Vaibhav | Bhardwaj | | 22.08.87 | 5'6" | B.Tech., | Ericsson | Gurugram | K.K.Shukla | Kanpur | 9958281964 |
| 223 | Vaibhav | Shandilya | Antya | 04.06.90 | 5'6" | B.Com, MBA | AXIS Bank | New Delhi | V K Mishra | Pilibhit | 9410626492 |
| 224 | Vaibhav | Upmanyu | Antya | 30.07.90 | 5'9" | B.Tech | Power Plant | M.P | S.K. Bajpai | Merath | 9358350093 |
| 225 | Vaibhav | Shandilya | Manglik | 29.05.94 | 6" | B Com | Business | Lucknow | S K Mishra | Lucknow | 7007709259 |
| 226 | Ved Vikas | Shandilya | Antya | 05.03.91 | 5'8" | M.SC. B.ED | Teacher | Ahmedabad | A.K Dixit | Unnao | 9913200388 |
| 227 | Vibhor | Bhardwaj | | 27.11.92 | | B Tech | Asst. Engg. | | Shukla | Lucknow | 9794883336 |
| 228 | Vividn | Shandilya | Antya | 28.03.83 | 5'8" | M Tech | Softt. Engg. | Banglore | A K Mishra | Etawah | 9411867391 |
| 229 | Vijay | Kashyap | Madhyaa | 01.01.91 | 5'4" | BSc (Maths), ITI | Self Employed | Bhopal | Ajju Tiwari | | 7000069991 |
| 230 | Vikaas | Bhardwaj | Antya | 26.10.82 | 5'4" | MCA | S.W Engg | Noida | K.K.Bhardwaj | Kanpur | 9793821021 |
| 231 | Vikash | Upmanyu | | 10.10.82 | 5'10" | M COM | Private | Kanpur | V K Awasthi | Kanpur | 6393239247 |
| 232 | Vikrant | Vats | Antya | 15.12.92 | 5'8" | B Tech MBA | Working | Banglore | Y Dubey | Kanpur | 9450349526 |
| 233 | Vimal | Kashyap | Aadi | 10.01.88 | 5'7" | B.Tech. | Service | Pune | K Tiwari | Kanpur | 9561478019 |
| 234 | Vimal | upmanyu | Antya | 15.09.89 | 5'4" | Under Gradutae | Pvt Job | Gurgaon | R Awasthi | Kanpur Dehat | 9311718232 |
| 235 | Vinay | Upmanyu | | 02.12.76 | 5'8" | MA. LLB | Govt Service | Burhanpur | Mrs Awasthi | Burhanpur | 9165311846 |
| 236 | Vinay | Upmanyu | | 08.11.89 | 5'8" | B Tech | Infosys | Hyderabad | K L Awasthi | Lucknow | 9450458064 |
| 237 | Vinod | - | - | 15.02.82 | 5'9" | - | Business | Kanpur | S N Diwedi | Kanpur | 7398163285 |
| 238 | Vishaal | Garg | | 27.12.87 | 5'10" | BCA MBA | MNC | Delhi | R.K.Shukla | Lucknow | 9936977763 |
| 239 | Vishal | Upmanyu | | 29.02.92 | 5'11" | B.SC | Indian Airforce | Hyderabad | G Bajpai | Kanpur | 9889315397 |
| 240 | Vishal | Sandley | Antya | 10.11.92 | 5.9" | M A | R Jio | Lucknow | S Mishra | Lucknow | 9935832287 |
| 242 | Vivek | Bhardwaj | Aadi | 07.11.84 | 5'10" | B.Tech., | S.W Engg | Delhi | R.C.Pandey | Kanpur | 9450327506 |
| 243 | Vivek | Kashyap | | 22.03.76 | 5'8" | B.Com | Service | Lucknow | S.K.Sharma | Lucknow | 9450112576 |
| 244 | Vivek | Kashyap | | 10.07.73 | 5'6" | Double MA | Service | Kanpur | H.S.Tiwari | Kanpur | 9455753557 |
| 245 | Vivek | Upmanyu | | 04.12.90 | 5'11" | MCA | Softt. Engg. | Gurgaon | R S Tiwari | Kanpur | 9839475032 |

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुञ्ज मंच' कानपुर

| S.No. | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|-------|----------|-----------|---------|----------|--------|----------------|----------|------------|-------------|----------|------------|
| 246 | Yash | Bhardwaj | | 23.03.85 | 5'8" | B.Tech | Working | Delhi | P.Trivedi | Delhi | 9868941052 |
| 247 | Yash | Shandilya | Madhyaa | 12.01.89 | 5'8 | Graduate | Sales | Delhi | A Mishra | Delhi | 9718166678 |
| 248 | Yatindra | Bharadwaj | | 13.03.85 | 5'6" | Graduate | Sales | | Y Shukla | Indore | 9977547030 |
| 249 | Yogendra | Bhardwaj | Antya | 31.10.78 | 5'4" | B.A, L.L.B. | Office | Kanpur | Y.K.Pandey | Kanpur | 9455373843 |
| 250 | Yogesh | Kashyap | Aadi | 26.12.89 | 5'3" | M.Com, MA, LLB | Advocate | Philibhit | Mrs Pathak | Bithra | 9759718916 |

यह वो जानकारी है जो हमें नाते-रिश्तेदारों, सगे-सम्बंधियों से व्यक्तिगत भेंट तथा पारिवारिक एवं मांगलिक समारोहों में स्वतः हो जाया करती थी। उन्हीं जानकारियों को हम अपने पाठकों से साझा कर रहे हैं। विस्तृत जानकारी स्वयम् प्राप्त करें, पत्रिका को उत्तरदायी न बनायें।

ई-मेल/ फ़ाइल अप करें या पत्र लिखें। kkmanch@gmail.com / 9310111069

शनि की साढ़े साती और उसका विचार

| राशि | पहले ढाई | दूसरे ढाई वर्ष | अंतिम ढाई वर्ष |
|---------|-----------------------|---|-----------------------------------|
| मेष | सामान्य | घन स्वास्थ्य हानि-दुख उपद्रव | सुखदायी |
| वृष | कष्ट कारक, संघर्षमय | घर में क्लेश | सुखदायी |
| मिथुन | अच्छे व्यतीत होंगे | जैसे-तैसे अच्छे व्यतीत हों | क्लेश, द्रव्य हानि |
| कर्क | साधारणतया | नौकरी या व्यापारों में अशुभ | अर्थ हानि, रोगभय |
| सिंह | चिता-व्यर्थ की अशांति | कष्टप्रद | उत्कर्ष यश कारक |
| कन्या | अतिकष्टकारी | सामान्य | सुखकारक द्रव्य प्राप्ति |
| तुला | अच्छे व्यतीत होंगे | दुख-सुख मिश्रित | काफी कष्ट शरीर पीड़ा, द्रव्य हानि |
| वृश्चिक | खुशी द्रव्य लाभ | शरीरकष्ट, ऋण चिंता स्त्री संतान पक्ष से चिंता | भाग्योदय व्यापार से लाभ |
| धन | कष्टप्रद | अच्छा | बिगड़ा जीवन सुधरता है शनैः शनैः |
| मकर | साधारण | अच्छा फल | अच्छा प्रगति चंचलता अस्वस्थता भौ |
| कुम्भ | कौटुम्बिक क्लेश | अच्छा सब काम बनते हैं | साधारण व्यर्थ का भय |
| मीन | अच्छे व्यतीत होते हैं | साधारण कभी दुख कभी सुख | अधिक कष्ट अपयश, शरीरिक पीड़ा |

उपचार- शनिवार का उपवास रखना, प्रत्येक शनिवार को उड़द की दाल खाना, शनिवार को हनुमान चालीसा या राम रक्षा स्त्रोत का पाठ करना, नौल मणि की अँगूठी पहनना अविवा लौह धातु या काले घोड़े के नाल की अँगूठी या पंचधातु की अँगूठी मध्यमा में धारण करना, शनि का दान 50 ग्राम तिल, तेल, 200 ग्राम उड़द की दाल, सिंटूर, काला कपड़ा, लोहा, फल, अगरबत्ती आदि शनि के मन्दिर में रखे या ब्राह्मण को दान दें। (केवल एक बार)



वैवाहिक विवरण

युवती वर्ग



| S.No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|-----------|-----------|--------|----------|----------|---------------|-----------------|------------|----------------|------------|------------|
| 1 | Amita | | | 10.02.88 | 5'5" | | | | R K Tiwari | Gwalior | 9425824412 |
| 2 | Anchal | Upmanyu | | 10.08.96 | 5'6" | B Tech It | L&T | Mumbai | S Awashti | Kanpur | 7985963062 |
| 3 | Aarti | Katyan | Antya | 22.10.86 | 5'2" | B.A | Working | New Delhi | S Mishra | New Delhi | 9891444569 |
| 4 | Aayusha | Upmanyu | Antya | 01.02.91 | 5'3" | Bcom MBA | | | A Awasthi | Lucknow | 8423771880 |
| 5 | Aditi | Katyan | | 10.07.90 | 5'6" | B E | MNC | Delhi | Mr. Mishra | Gurugram | 9425808631 |
| 6 | Aditi | Kaushik | Aadi | 30.09.87 | 5'3" | B Tech M Tech | MNC | Pune | R K Chaturvedi | | 9406902511 |
| 7 | Aditi | Bharadwaj | Antya | 17.06.92 | 5'4" | B.Tech | MNC | Pune | S Pandey | Chandrapur | 9822701972 |
| 8 | Akanksha | Kashyap | Madhya | 29.10.83 | 5'4" | M. A | Service | Near Delhi | A Tripathi | Sitapur | 9919114107 |
| 9 | Akanksha | Bhardwaj | Antya | 06.09.89 | 5' | M.COM ,B Ed | | | Rajesh Shukla | Yamuna N. | 9729537603 |
| 10 | Akanksha | Upmanyu | | 02.11.93 | 5'4" | Designing | Pursuing | Mumbai | A.P.Agnihotri | Jaipur | 9829068476 |
| 11 | Akanksha | Bhargava | Antya | 26.10.92 | 5'5" | B.E.(IT), | IBM | Pune | Manish Vyas | Nrsinhgarh | 9039387942 |
| 12 | Akanksha | Upmanu | Aadi | 08.08.92 | 5'4" | M Pharma | Manager, | Jaipur | S Agnihotri | Rajasthan | 8239811234 |
| 13 | Akanksha | Katyayan | | 30.06.90 | 5'2" | PHD Math | | | R P Mishra | Kanpur | 9935600160 |
| 14 | Akankshi | Bharadwaj | Aadi | 09.11.88 | 5'1" | MA, B.ED | | | S.C Shukla | Unnao | 9415919896 |
| 15 | Alpika | Bhardwaj | Antya | 35 YRS. | 5'3" | M SC, M Ed | Teacher | Lucknow | P S Shukla | Lucknow | 9451247895 |
| 16 | Amrita | Upmanyu | Aadi | 15.06.86 | 5'3" | M.SC.B.ED. | Teacher | Hardoi | S.D.Awasthi | Hardoi | 9415175655 |
| 17 | Amrita | Kashyap | Aadi | 26.06.86 | 5'4" | MBA | INT. Designer | Delhi | H.K.Tripathi | Kanpur | 9415740855 |
| 18 | Anamika | Bhardwaj | | 16.01.89 | 5'2" | BCA | Pursuing LLB | | H.N. Pandey | Delhi | 9312000133 |
| 19 | Anamika | Upmanyu | Madhy | 12.09.90 | 5'4" | MBA | ICICI Bank | | V N Bajpai | | 8931029856 |
| 20 | Anjali | Upmanyu | Aadi | 01.02.78 | 5'3" | MA, B ED | Teacher | Kanpur | Geeta Bajpai | Kanpur | 9450337411 |
| 21 | Anjusha | Kashyap | | 26.11.76 | 5'6" | MA , B Ed | Teacher | Lucknow | G N Awasthi | Lucknow | 9415794589 |
| 22 | Ankita | Katyan | Madhy | 18.08.88 | 5'4" | B.A.(GOLD) | Army Captain | Rajori | K.K.Mishra | Lucknow | 9454523684 |
| 23 | Ankita | Bhardwaj | Madhy | 17.05.85 | 5'2" | M A , NTT | | | P S Shukla | Lucknow | 9451247895 |
| 24 | Ankita | Upmanyu | Madhy | 28.05.90 | 5'2" | B.Tech | Working | Lucknow | Rakesh Bajpai | Lucknow | 9451533833 |
| 25 | Ankita | Gautam | Antya | 20.04.88 | 5'8&5.5" | M Tech | G I S developer | Hyderabad | S Mishra | Allahabad | 9335932948 |
| 26 | Ankita | | | 01.05.86 | 5'5" | MA, MED | | | S S Tripathi | Kanpur | 9450329077 |
| 27 | Anshita | Kashyap | | 23.05.93 | 5'2" | BE | Teacher | | P Joshi | | 9893570774 |
| 28 | Anubhuti | Upmanyu | | 28.03.90 | 5'6" | B.TECH, LLB | | | Mr Agnihotri | Lucknow | 9454382089 |
| 29 | Anupama | Kashyap | | 02.03.94 | 5'4" | Graduate | | | S K Pandey | New Delhi | 9810793525 |
| 30 | Anurag | Kashyap | | 03.10.79 | 6'2" | Graduate | Manager, | Delhi | Y M Tiwari | Jabalpur | 9810633055 |
| 31 | Anushka | Shandilya | | 02.10.88 | 5'5" | MBA BBA | Business | Delhi | S M Tripathi | Delhi | 9810295454 |
| 32 | Aparajita | Bhardwaj | Aadi | 24.12.88 | 5'2" | B Tech | S/W Engg | Pune | R K Pandey | Bhopal | 9691999321 |
| 33 | Apoorva | Bharadwaj | Aadi | 13.12.91 | 5'5" | B.Tech | No | No | C.K.Shukla | DURG | 9827113544 |
| 34 | Aradhika | Shandilya | | 05.01.85 | 5'3" | BA | SBI(P.O) | | Shahjahanpur | P.D Dixit | 9807477078 |
| 35 | Arpita | Bharadwaj | Aadi | 23.09.91 | 5'4" | BCA,M Tech | Wipro | Banglore | R K Shukla | Kanpur | 9450455278 |
| 36 | Arti | Sabaran | Madhy | 11.12.87 | 5'5" | M Ed PhD | Proff. | Indore | J Pandey | Indore | 9303536152 |
| 37 | Astha | Shandilya | - | 13.11.89 | 5.1' | B.Tech | PSU Bank | - | B.R. Mishra | Lakhimpur | 8090688028 |
| 38 | Ashta | Bharadwaj | | 01.10.91 | 4'11' | Ilm | M egraision | Celifornia | A K Pandey | Kanpur | 9415733447 |
| 39 | Barkha | Kashyap | Antya | 17.09.84 | 5'5" | BA | Working | Delhi | Mohit Tiwari | Delhi | 9211232373 |
| 40 | Bhavna | Katyan | | 13.04.88 | 5'4" | BBA,MBA | Working | Pune | P Mishra | Pune | 9823281661 |
| 42 | Bhumica | Katayan | Madhy | 15.01.91 | 5'3" | B Tech | Softt. Engg. | | S K Mishra | Kanpur | 9648816293 |
| 43 | Charitra | Katyan | Aadi | 02.08.89 | 5'2" | MA B.Ed. | Teaching | Hardoi | S Mishra | Hardoi | 8081357385 |
| 44 | Deepika | Upmanyu | | 24.10.86 | 5'3" | M.SC.PHD | Post Doctorate | USA | S.C.Awasthi | Kanpur | 9451425376 |
| 45 | Deepika | Bharadwaj | | 18.07.84 | 5'1" | PGDCA MCA | Asst. Computer | Indore | R Pandey | Indore | 9826048929 |

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ क्वाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

| S No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|------------|-----------|----------|----------|--------|-----------------|------------------|------------|---------------|--------------|------------|
| 46 | Devahuti | Shandilya | | 09.05.82 | 5'3" | B.A.,Journalism | | | D.D.Mishra | Kanpur | 9621488942 |
| 47 | Diksha | Kashyap | | 07.10.90 | 5'7" | M Tech | Consultant | New Delhi | C K Tiwari | Lucknow | 9839016961 |
| 48 | Divya | Kashyap | Antya | 23.02.86 | 5'2" | B.TECH. | Working | Canada | R.P.Tiwari | Kanpur | 9451287700 |
| 49 | Divya | Bharadwaj | Aadi | 12.02.95 | 5'2" | B.Sc , ITI | LMRC | Lucknow | Rajesh Tiwari | Jhansi | 9451131195 |
| 50 | Divya | Sandilya | | 12.01.94 | 5'3" | BTC , B Ed | | Etawah | G Dixit | Etawah | 9627549800 |
| 51 | Divyanshi | | | 25.07.90 | | BHMS | | | S Tiwari | Raibareli | 9450572655 |
| 52 | Dr Jyoti | Bhardwaj | Aadi | 21.11.85 | 5'1" | MSc PhD | Research Officer | Patna | P Mishra | Patna | 9934296441 |
| 53 | Garima | Shandilya | | 10.09.89 | 5'3" | M.COM, MBA | | | R.S Mishra | Kanpur | 9918475086 |
| 54 | Garima | Bhardwaj | | 01.10.83 | 5'4" | MBA | Working | Lucknow | K.K.Pandey | Kanpur | 9336998383 |
| 55 | Garima | Katyan | | 15.01.85 | 5'2" | B E | SAP | Pune | C S Mishra | Khandwa M.P. | 9425928788 |
| 56 | Garima | Kashyap | | 08.11.79 | 5'3" | MA, Bed | | | S.K. Tripathi | Bareilly | 9897049336 |
| 57 | Garima | Upmanyu | Antya | 12.12.88 | 5'5" | MBA | MNC | Gurugram | A.K Dixit | Lucknow | 9451975400 |
| 58 | Geetanjali | Katyan | | 15.07.75 | 5'2" | MA | | | S.K Mishra | Lucknow | 9415003476 |
| 59 | Hemalata | Katyan | Aadi | 23.07.79 | 5" | M.sc Mba. | Working | Banglore | R Mishra | Unnav | 9848759749 |
| 60 | Hemapriya | Shandilya | Madhy | 05.05.89 | 5'3" | BA,LLM | Central govt. | | G.K.Mishra | Lucknow | 9412554697 |
| 61 | Harshita | Bharadwaj | | 16.09.94 | 5'5" | MSC PRI. | Bank | Bihar | S Shukla | Kanpur | 9005095193 |
| 62 | Indu | Katyan | Madhy | 20.04.88 | 5'3" | PG | Asstt Manager | Lucknow | L.M.Mishra | Lucknow | 9335915813 |
| 63 | Ira | Kashyap | Madhy | 25.09.89 | 5'5" | BTECH, MS | Engineer | California | Dr. M Tiwari | Kanpur | 8130144400 |
| 64 | Itisha | Kashyap | Antya | 17.01.83 | 5'2" | Diploma | Jwel Design | | R.N.Tripathi | Lucknow | 9453437464 |
| 65 | Jaahnavee | Katyan | | 18.03.93 | 5' | B.SC. | | | Ai Mishra | Kanpur | 9451013644 |
| 66 | Jaya | Katyan | Antya | 24.07.89 | 5'3" | M Tech | MNC | Bangalore | A Mishra | Kanpur | 9450635424 |
| 67 | Kanak | Upmanyu | Divorcee | 08.06.87 | | MA | Teaching | Bahraich | A Awasthi | Bahraich | 9140487985 |
| 68 | Kanchan | Bharadwaj | Antya | 29.07.82 | 5'5" | BA | | | C.P Shukla | Lucknow | 9793027166 |
| 69 | Kanchan | Upmanyu | | 28.05.92 | 5'1" | MA | Teacher | Bahraich | A Awasthi | Bahraich | 9140487985 |
| 70 | Kanchan | Kilawat | | 14.11.92 | 5'2" | MCA | Service | | V Vaishnav | Bhopal | 9165903000 |
| 71 | Kanchan | Shandilya | Antya | 02.05.90 | 5'4" | MCA | | | S Dixit | Pune | 7300636411 |
| 72 | Kavita | Upmanyu | | 24.06.87 | 5'6" | M.C.A MNIT | Soft. Engg. | Delhi | R.K.Awashti | Kanpur | 9936213811 |
| 73 | Keerti | Bhardwaj | | 18.11.89 | 5'6" | M.SC.PHD. | Fellowship | Australia | K.N.Pandey | New Delhi | 9971530438 |
| 74 | Kritika | Upmanyu | Aadi | 03.05.91 | 5'2" | M Tech Phd IIT | Asst. | Dhanbad | J K Awasthi | Lucknow | 9415547363 |
| 75 | Kritika | Kashyap | | 27.07.92 | 5'6" | M.Tech | | | Arun Tiwari | Banda | 9453283648 |
| 76 | Krtika | Bhardwaj | | 28.01.88 | 5'4" | MA(ENGLISH) | Journalist | New Delhi | K.N.Pandey | New Delhi | 9971530438 |
| 77 | Krtika | Shandilya | Aadi | 09.09.87 | 5'5" | B.SC.MBA | SBI | Kanpur | M Mishra | Kanpur | 9695666443 |
| 78 | Madhu | Upmanyu | Madhy | 02.09.89 | 5'2" | BE | S/W Engg. | Bangalore | R B Pathak | Ballia | 9774009524 |
| 79 | Madhulika | Kashyap | | 03.08.80 | 5'1" | MA, B Ed , TET | | | Mrs Dixit | Lucknow | 9455508981 |
| 80 | Malini | Upmanyu | | 01.04.77 | 5'2" | M.SC.,MED,PHD. | Teacher | | C.P.Awasthi | Lucknow | 9452133470 |
| 81 | Mandvi | Katyayan | | 13.12.95 | 5'1" | B Com, MBA | Pursuing | Kanpur | G S Mishra | Kanpur | 9839206130 |
| 82 | Mani | Bharadwaj | | 14.09.89 | 5'3" | MA, B.ED | | | R.K Pandey | Allahabad | 9415612663 |
| 83 | Meenu | Katyan | Antya | 14.08.82 | 5'3" | M.SC.B.ED. | | | A.K.Mishra | Jhansi | 9452919509 |
| 84 | Meenakshi | Shandilya | Madhy | 01.08.92 | 5" | Post Graduate | Softt. Engg. | | S K Dixit | Chandigarh | 8837733436 |
| 85 | Megha | Upmanyu | | 01.07.94 | 5'3" | MA | Teaching | Kanpur | R Awasthi | Kanpur | 9311718232 |
| 86 | Monika | Kashyap | Madhy | 15.08.85 | 5'3" | B. Tech | Fash. Design | Delhi | G Tiwari | Udaipur | 9414238854 |
| 87 | Mridulika | Katyayan | | 05.10.90 | 5'2" | B COM | Press | Lucknow | N Mishra | Lucknow | 9838070923 |
| 88 | Naina | Bharadwaj | | 29.04.90 | 5'3" | B.TECH, MBA | Yes Bank | Mumbai | R.S Pandey | Lucknow | 9044326357 |
| 89 | Namita | Bhardwaj | | 16.06.80 | 5'3" | M.A.(ENGLISH) | INT. Designer | | S.P.Shukla | Lucknow | 9415424508 |
| 90 | Namrta | Upmanyu | Aadi | 11.01.81 | 5'6" | M.A.,Music | | | P Dubey | Kanpur | 9839443316 |
| 91 | Natasha | Bhardwaj | | 28.07.84 | 5'4" | BE | MNC | Pune | D K Shukla | Kota | 9414189670 |
| 92 | Neha | Upmanyu | | 01.12.90 | 5'4" | B COM | | | V Pathak | Kanpur | 9962003310 |
| 93 | Neha | Bharadwaj | | 05.05.87 | 5'2" | B ED | | | L Pandey | Unnao | 7376707203 |
| 94 | Nidhi | Upmanyu | | 15.11.83 | 5'4" | M.A.(MUSIC) | Teacher | | V.D.Awasthi | Lucknow | 9415172212 |
| 95 | Nidhi | Shandilya | Antya | 19.02.79 | 5'2" | MA NIT | | | A Mishra | Allahabad | 8318600210 |

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुञ्ज मंच' कानपुर

| S No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|------------|-----------|--------|----------|--------|------------------|-----------------|------------|------------------|-------------|------------|
| 96 | Nidhi | Katayan | Antya | 02.09.86 | 5'3" | Bizz.Eng. USA | Manager, | Hyderabad | R Mishra | Hyderabad | 9000933436 |
| 97 | Niharika | Upmanyu | Aadi | 26.07.95 | 5'4" | Bcom, MA | | Harda | Meena Dubey | | 9893228150 |
| 98 | Nikita | Kashyap | | 21.10.90 | 5'3" | BBE,MBA | IBM | Gurugram | S.S. Tiwari | Delhi | 9899723609 |
| 99 | Nikita | Shandilya | Antya | 25.04.94 | 5'5" | B.Tech | Saft.Eng. | Bangalore | P Mishra | Lucknow | 6394743035 |
| 100 | Nikita | Shandilya | | 28.11.91 | 5'2" | MBA (IILM) | Bank | Noida | R C Mishra | Lucknow | 9208831728 |
| 101 | Nilakshi | Katyan | Antya | 16.05.90 | 5'1" | B.COM, | CS(Pursuing) | | N.C.Mishra | Lucknow | 9415543919 |
| 102 | Nitya | Upmanyu | | 27.08.90 | | B.ED MBA | Asst. Professor | | J L Bajpai | | 9454217864 |
| 103 | Palak | Kashyap | Madhya | 01.06.82 | 5" | MBA | | Nairobi | Mrs Tiwari | Ahmedabad | 7733803200 |
| 104 | Pallav | Sankrit | Aadi | 21.01.87 | 5" | M Tech. PhD | Service | New Delhi | S Shukla | Delhi | 9811484078 |
| 105 | Pallavee | Kashyap | | 08.03.85 | 5'3" | BSC, B.ED | Govt. Teacher | Lucknow | Prashant Mishra | Lucknow | 9415466226 |
| 106 | Pallavee | Sankrit | | 21.01.87 | 5' | M.TECH.(IIT)PHD. | | | S Shukla | Delhi | 9811483078 |
| 107 | Pavitra | Bharadwaj | Aadi | 18.01.92 | 6'1" | | | | G K Shukla | Kanpur | 9415041945 |
| 108 | Pooja | | Katyan | 20.09.93 | 5'1" | MCA | Sofft. Engg. | Pune | Ram Mishra | Kanpur | 9454771886 |
| 109 | Poornima | Upmanyu | Antya | 12.08.80 | 5'5" | B.SC.MCA | S.F ENGG. | Bengaluru | S Awashti | Kanpur | 9450125877 |
| 110 | Prachi | Shandilya | Aadi | 20.05.88 | 5'3" | MCA | | | A Mishra | Delhi | 9311601401 |
| 111 | Prachi | Kashyap | | 01.06.85 | 5'5" | B.TECH.(IIT) | SBI(P.O) | Lucknow | Deepti Dixit | Lucknow | 9838610666 |
| 112 | Pragati | Upmanyu | | 07.01.87 | 5'4" | MBA | MNC | Noida | D.S.Bajpai | Lucknow | 9454644228 |
| 113 | Pragati | Shandilya | - | 24.06.92 | 5.3' | M Tech | - | - | Dr. V.P. Dixit | Allahabad | 9415283021 |
| 114 | Pragna | Kashyap | | 30.07.90 | 5'6" | BSc, MA, Bed | Teacher | Urai | R.K. Dixit | Urai | 9453554259 |
| 115 | Pramita | Katyan | | 29.06.81 | 5'1" | M.A,PHD,MPHIL | Working | Delhi | P.N.Mishra | Delhi | 9013201099 |
| 116 | Pratiti | Upmanyu | Antya | 10.12.91 | 5'4" | B Tech | Accenture | Noida | Suniti trivedi | Lucknow | 9415546277 |
| 117 | Preeti | Kashyap | Aadi | 22.12.90 | 5'5" | MBA | Working | Mumbai | Avinash Tripathi | Mumbai | 9320981363 |
| 118 | Preeti | Shandilya | Madhya | 15.08.94 | 5'3" | MSc Bed. | | | D N Dixit | Kanpur | 8932007700 |
| 119 | Preeti | Shandilya | | 21.03.93 | 5'7" | B Tech | | | O Dixit | Fatehpur | 7011596828 |
| 120 | Priya | Bhardwaj | Aadi | 26.08.91 | 5'5" | B.Com, S.W | | | P N Trivedi | Unnao | 9415987702 |
| 121 | Priya | Bharadwaj | Madhya | 02.02.89 | 5' 7" | | Vetnry Surgeon | Gwalior | Rajeev Shukla | Gwalior | 9926292469 |
| 122 | Priyam | Upmanyu | | 20.07.88 | 5'3" | MBA | MNC | Pune | A.K.Awasthi | Kanpur | 8604956305 |
| 123 | Priyanka | Bharadwaj | Madhy | 17.11.94 | 5'5" | B.COM,BTC | | | D.D Shukla | Unnao | 9451149985 |
| 124 | Priyanka | Bhardwaj | | 16.08.88 | 5'2" | BDS | Pursuing MBS | | A.K.Pandey | Jaipur | 9829094797 |
| 125 | Priyanka | Bhardwaj | | 27.09.87 | 5'4" | B.TECH.MBA | TCS | Mumbai | A. Shukla | Kanpur | 9935590475 |
| 126 | Priyanka | Upmanyu | Aadi | 15.10.82 | 5'4" | B.COM.MBA | Working | Noida | J.N.Bajpai | Kanpur | 8978480521 |
| 127 | Priyanka | | | 29.08.84 | 5'4" | B.SC,MBA | | | Shri.Pandey | | 9838959360 |
| 128 | Priyanka | Kashyap | | 05.11.81 | 5'8" | BDS | Working | Kanpur | Rajesh Tiwari | Kanpur | 9839163346 |
| 129 | Priyanka | Upmanyu | Antya | 22.03.88 | 5'4" | MCA | S.W ENGG. | Noida | M Agnihotri | Kanpur | 8052408397 |
| 130 | Priyanka | Vats | Antya | 02.01.89 | 5'5" | BE, MBA | MNC | Mumbai | Ravi Tiwari | Raipur | 9425207900 |
| 131 | Priyanka | Bharadwaj | Madhy | 20.11.85 | 5'8" | MA CSJMU | Teacher | Unnao | Manju Trivedi | Unnao | 9807314054 |
| 132 | Priyuttama | Katyan | Madhy | 12.05.88 | 5'4" | MA.B.ED.PHD. | | | K Mishra | Lakhimpur | 9452040268 |
| 133 | Pushpanjal | Bharadwaj | Aadi | 12.05.92 | 5'2" | B.Tech, BTC | BTC Training | jhansi | Rajesh Tiwari | Jhansi | 9451131195 |
| 134 | Pushpika | Katyan | Aadi | 20.09.90 | 5'1" | MCA | Wipro | Pune | R P Mishra | Kanpur | 7703091096 |
| 135 | Raashi | Shandilya | Madhy | 10.09.79 | 5'3" | M.SC.(Mass Com) | Asstt Prof. | Lucknow | Asha Mishra | Lucknow | 9412554697 |
| 136 | Rachana | | | 15.01.81 | 5' | MBA | JP CEMENT | Noida | R.S.Mishra | Kanpur | 9935349163 |
| 137 | Ragini | Bhardwaj | Antya | 10.02.88 | 5'4" | BHMS | P.G. | Pune | Girish Shukla | Kanpur | 9839105203 |
| 139 | Rajni | Upmanyu | Antya | 14.07.92 | 5" | M Tech | Not working | No | Mrs D Pathak | Farrukhabad | 9999667148 |
| 140 | Rajni | Upmanyu | | 15.07.92 | 5' | M Tech | Pursuing | Delhi | A Pathak | Delhi | 9811131680 |
| 141 | Rashmi | Vats | Madhy | 12.08.87 | 5'1" | CS, LLB | Practice | Noida | Rajesh Tiwari | Delhi | 9910507601 |
| 142 | Rashmi | Upmanyu | Antya | 12.06.90 | 5'4" | B.COM, MBA | MNC | Lucknow | R.K.Awashti | Lucknow | 9457203523 |
| 143 | Rashmi | Upmanyu | Madhya | 25.09.76 | 5'2 | BSC, PGDCA | | | T R Pathak | Jabalpur | 9754346532 |
| 144 | Rashmi | Sankrit | | 30.07.86 | 5'4" | B Sc MBA | MNC | Noida | Mrs Mishra | Kanpur | 7752946783 |
| 145 | Rashmi | Bhardwaj | Madhya | 14.08.86 | 5'2" | BA | Teaching | Saharanpur | M Shukla | Saharanpur | 9456272806 |

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ क्वाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

| S No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|------------|-----------|--------|----------|--------|-------------------|-----------------|------------|----------------|-------------|------------|
| 146 | Ratna | Bharadwaj | Madhy | 15.01.86 | 5'6" | MBA | HDFC Bank | Bangalore | R.K.Dixit | Durg | 7987456198 |
| 147 | Ratna | Kashyap | Aadi | 06.08.87 | 5.5' | BSC (BIO) | - | - | R.K.Mishra | Lucknow | 9450672302 |
| 148 | Reema | Upmanyu | | 30.11.94 | 5'3" | B.Com | Pursuing MBA | | Mrs.Awasthi | Hyderabad | 7093757018 |
| 149 | Reena | Upmanyu | | 01.07.83 | 5'6" | MA NTT | Teaching | Jhansi | R.Bajpai | | 7275586913 |
| 150 | Renu | Bhardwaj | Aadi | 10.08.81 | 5'6" | B.A.NTT | Teacher | Jhansi | Aruna Shukla | Jhansi | 9450978618 |
| 151 | Renu | Sankrit | Aadi | 05.02.87 | 5'3" | MA | Working | Delhi | M.K.Mishra | Delhi | 9971356179 |
| 152 | Richa | Shandilya | Madhy | 30.09.91 | 5'3" | B.COM,MBA | | | K.S.Mishra | Lucknow | 9415469103 |
| 153 | Richa | Katyan | | 15.03.84 | 5'4" | M.TECH.MBA | Asst Prof. | Kanpur | Sunil Mishra | Kanpur | 9453045754 |
| 154 | Richa | Bhardwaj | Madhy | 20.12.84 | 5'2" | B.Sc, B.Ed, TET | | | Mrs.Shukla | Hardoi | 9026399895 |
| 155 | Richa | Upmanyu | Madhy | 06.04.85 | 5'7" | B.Com, M.Com, MBA | | | R.L.Dwivedi | Lucknow | 9919127170 |
| 156 | Richa | Kashyap | Madhya | 03.07.85 | 5'3" | M.Sc (BHU) | HSBC | Sydney | S.K.Tripathi | Unnao | 8299676613 |
| 157 | Ritika | Bhardwaj | | 14.01.91 | 5'5" | B.Tech | Sofft. Engg. | Delhi | V.K.Chaturvedi | Kanpur | 7905040001 |
| 158 | Ritu | Sankrit | | 02.02.92 | 5'3" | MA | | | J.Shukla | | 8120039083 |
| 159 | Ritambhar | Bhardwaj | Aadi | 28.03.90 | 5'3" | MBBS | MD | Kanpur | D.S.Shukla | Kanpur | 9358352758 |
| 160 | Ruby | Shandilya | Antya | 20.03.84 | 5'5" | B.TECH. | Working | Noida | R.C.Dixit | Kanpur | 9369019377 |
| 161 | Ruchi | kashyap | | 01.10.96 | 5'3" | BA MA | Pursuing | | M.Tiwari | New Delhi | 9711473367 |
| 162 | Ruchi | Sankrit | Aadi | 27.09.86 | 5'5" | B.Com M.A | Private | Kanpur | H.Shukla | Kanpur | 9839955748 |
| 163 | Ruchita | Upmanyu | | 28.07.88 | 5'3" | M.Tech | Asst. Manager | Meerut | H.Bajpai | | 9140821670 |
| 164 | Sachi | Bhardwaj | Antya | 12.02.91 | 5'4" | B.Com, CA | CA Final Yr. | Lucknow | Naveen Shukla | Bareilly | 9415966739 |
| 165 | Sakshi | Shandilya | Madhy | 27.03.89 | 5'2" | MCA | Govt Job | Lucknow | S.N.Dixit | Lucknow | 8765677207 |
| 166 | Samvedan | Upmanyu | Aadi | 17.03.87 | 5'8" | B.Tech, MBA | Working | Chicago | R.N.Agnihotri | Jaipur | 7355619597 |
| 167 | Sarika | | Antya | 03.08.82 | 5'4" | MBBS DGO DNB | Doctor | | V.B.Pandey | Manpuri | 9411936187 |
| 168 | Saroj | Upmanyu | Madhy | 20.10.89 | 5'9" | MA | Reacher | Ghatkopar | Indira Trivedi | Raebareilly | 9167644809 |
| 169 | Sashi | Katyayan | Madhya | 30.12.84 | 5'3" | B.Sc PGDCA, | Hospital | Nasik | A.Mishra | Sitapur | 7972186431 |
| 170 | Saumya | Bharadwaj | Aadi | 22.05.87 | 5'3" | MBA | PSU Bank(PO) | Lucknow | M.Shukla | Lucknow | 9161099365 |
| 171 | Saumya | Katyan | Aadi | 07.01.91 | 5'4" | BSC | | | K.K.Mishra | Lucknow | 7905134117 |
| 172 | Saumya | Upmanyu | | 20.04.95 | 5" | B.COM | Working | Noida | R.Bajpai | New Delhi | 9312832371 |
| 173 | Savita | Upmanyu | Antya | 22.08.86 | 5' | BSC, ADCA | Teacher | Telibagh | Pankaj Dwivedi | Lucknow | 9455871884 |
| 174 | Seema | Upmanyu | Antya | 21.10.83 | 5'3" | B.ED | Private teacher | Lucknow | Ashok awasthi | Lucknow | 8318401171 |
| 175 | Shailesh | Katyan | Madhy | 27.09.80 | 5'1" | M.SC.PHD. | Asstt Prof. | | S.S.Mishra | Kanpur | 9450120999 |
| 176 | Shailja | Upmanyu | | 29.03.86 | 5'2" | MA, Bed | | | R.P.Dubey | Kanpur | 9415134056 |
| 177 | Shalini | Shandilya | | 01.09.82 | 5'4" | Ph.D.(HISTORY) | Working | Lucknow | Mishra | Lucknow | 9415562096 |
| 178 | Shakshi | Bharadwaj | | 14.12.96 | 5'4" | B.E | Employee | | S.Dwivedi | Indore | 9826646571 |
| 179 | Sheenu | Bharadwaj | Madhya | 09.07.84 | 5'2" | MBA | | | V.K.Shukla | Kanpur | 7275904560 |
| 180 | Shikha | Bharadwaj | Madhy | 05.02.92 | 5'8" | Bcom MBA | Working | Pune | R.Tiwari | Amravati | 9766219316 |
| 181 | Shikha | Garg | | 27.09.87 | 5'4" | MA | UP Govt. | Lucknow | R.Sharma | Lucknow | 9651210977 |
| 182 | Shilpi | | | 29.09.93 | 5'5" | B.COM | Working | | A.Dubey | Delhi | 9350102245 |
| 183 | Shipra | Upmanyu | | 27.07.88 | 5'5" | BPT | Fortis Hospital | New Delhi | H.Awasthi | Kanpur | 8896151617 |
| 184 | Shivangi | Katyayan | Antya | 26.01.90 | 5'2" | B.A., M.A | Civil | NO | B.Mishra | Farukhbad | 9452261234 |
| 185 | Shivani | Bharadwaj | Madhy | 26.09.91 | 5'4" | MBA | Sr HR Executive | Gurgaon | R.N.Pandey | Lucknow | 9452841545 |
| 186 | Shivsankar | Sankrit | | 15.01.91 | 6'1" | BBA LLB | | | A.Shukla | Kanpur | 9044001828 |
| 187 | Shradhha | Upmanyu | Aadi | 13.05.86 | 5'5" | B.Tech | MNC | Coimbatore | S.Trivedi | Telangana | 8121717563 |
| 188 | Shreyasi | Shandilya | Madhy | 26.10.94 | 5'6" | B.Tech | Engineer | Mumbai | R.K.Dixit | Kanpur | 7376692193 |
| 189 | Shrushti | | | 08.10.85 | | BA MBA | Asst. Professor | Kanpur | V.Bajpai | Kanpur | 8187923891 |
| 190 | Shruti | Upmanyu | Aadi | 10.06.88 | 5'7" | B.SC.MBA | Working | Hyderabad | S.K.Trivedi | Hyderabad | 8121717563 |
| 191 | Shruti | Katyan | | 09.12.78 | 5'3" | B.COM,CA. | Working | Mumbai | A.K.Mishra | Lucknow | 9336506078 |
| 192 | Shruti | Upmanyu | Aadi | 30.06.90 | 5'4" | B.Tech, M.Tech | Asst. Professor | Delhi | Dr.M.Awasthi | Etawah | 9810323466 |
| 193 | Shruti | | | 03.10.86 | 5'3" | | | | S.Dwivedi | Kanpur | 9236819199 |
| 194 | Shubhee | Kashyap | | 23.06.86 | 5'3" | DIP. ELEC.COM. | Working | Delhi | D.K.Dubey | Delhi | 9582628003 |
| 195 | Shubha | Katyayan | | 27.10.91 | 5'3" | B.Tech | HCL | Lucknow | R.K.Mishra | Lucknow | 9450672302 |

यह तो वह जानकारी है, जो हम अपने परिचितों व रिश्तेदारों को देते रहे हैं। आज हम समाज को भी दे रहे हैं। आप स्वयं भी समझें-बूझें। पत्रिका को ही जिम्मेदार न बनायें। 'कान्यकुञ्ज मंच' कानपुर

| S No | Name | Gotra | Naadi | DOB | HEIGHT | EDUCATION | PROF. | SERV_LOCN. | PARENT_NAME | HOMETOWN | MOBILE NO. |
|------|-----------|-----------|--------|----------|--------|--------------|---------------|----------------|-----------------|--------------|------------|
| 196 | Shveksha | Sankrit | | 25.01.86 | 5'4" | BTC | Teacher | Etawa | D.K.Dixit | Etawah | 9410487189 |
| 197 | Shweta | Upmanu | Antya | 30.11.86 | 5'3" | B.SC. | Web Designer | | B.N.Bajpai | Kanpur | 9450325085 |
| 198 | Shweta | Upmanu | Antya | 25.08.84 | 5' | B H M S | Doctor | Kanpur | A K Awasthi | Kanpur | 9532098695 |
| 199 | Shweta | Bharadwaj | | 03.04.89 | 5'3" | MBA | Working | Etah | S Pandey | Mainpuri | 7520323248 |
| 200 | Shweta | Kashyap | | 12.05.87 | 5'5" | MS(USA) | Biz Analyst | USA | S Tiwari | Hyderabad | 9293765791 |
| 201 | Shweta | Vashisht | | 06.04.88 | 5'3" | B.COM, MBA | Teacher | Kanpur | O.K. Sharma | Kanpur | 9889736208 |
| 202 | Shweta | Bharadwaj | Madhya | 09.05.86 | 5'1" | B Sc, B Ed | | | Geeta Dixit | Gwalior | 9406581038 |
| 203 | Smriti | Upmanu | Antya | 30.06.91 | 5'4" | MBBS | Working | Lucknow | B.D Bajpai | Lucknow | 9532276081 |
| 204 | Sonam | Bharadwaj | | 30.08.88 | 5'6" | M CA | Softt. Engg. | Banglore | L Shukla | Kanpur | 9621781155 |
| 205 | Sonal | Gautam | | 10.12.81 | 5'5" | M.A.MBA. | | | B.D.Malwi | Kanpur | 9451845631 |
| 206 | Sonal | Upmanu | | 04.05.90 | 5'3" | B Tech | Accenture | Bangalore | R K Bajpai | Kanpur | 9415477656 |
| 207 | Sonal | Upmanu | Madhya | 04.04.90 | 5'2" | B Tech | | | Usha Dubey | Lucknow | 9936573750 |
| 208 | Sonali | Bhardwaj | Aadi | 04.02.86 | 5'5" | B.TECH. | S.W ENGG. | Hyderabad | A.N.Pandey | Kanpur | 9415483587 |
| 209 | Soumya | Katyan | Madhya | 24.06.90 | 5'4" | BCA MS | MNC | Hyderabad | G D Mishra | Kanpur | 9452496423 |
| 210 | Soumya | Katyan | | 24.07.90 | 5'2" | M A | | | R K Mishra | Lucknow | 7905134117 |
| 211 | Soumya | Shandilya | | 26.03.88 | 5'2" | B sc Mca | Softt. Engg. | Banglore | S K Mishra | Bhopal | 9415166113 |
| 212 | Sreshtha | Shandilya | | 27.01.89 | 5'6" | M Com Bed | Working | Banglore | S K Tiwari | Kolkata | 9088937393 |
| 213 | Srishti | Upmanu | Madhya | 11.04.92 | 5'6" | B. Arch | Manager | Mumbai | Vijay Bajpai | Nagpur | 9422140541 |
| 214 | Stuti | Kashyap | Antya | 19.11.89 | 5' | B.Tech | Bank of India | Lucknow | Amal Dixit | Lucknow | 7052969469 |
| 215 | Stuti | Garg | Madhya | 15.06.91 | 5'4" | MBA | Oyo | Gurgaon | A K Chaturvedi | Kanpur | 9415478711 |
| 216 | Stuti | Bhardwaj | | 11.09.90 | 5" | M Sc | | | P Dixit | Kanpur | 9389195060 |
| 217 | Suchi | Bhardwaj | Aadi | 24.02.82 | 5'3" | M Sc, B ED | Govt Teacher | Unnao | R N Trivedi | Unnao | 9452347648 |
| 218 | Suchita | Bhardwaj | | 02.05.91 | 5'5" | B Tech MBA | MNC | Bangalore | S C Shukla | Kanpur | 9868590585 |
| 219 | Sukriti | Sankrit | | 07.01.91 | 5'1" | BA MA | TATA | Mumbai | S C Shukla | Lucknow | 9838073011 |
| 220 | Suman | Kashyap | Aadi | 03.05.91 | 5'6" | M.COM, BED | | | Akhilesh Tiwari | Kolkata | 6294217393 |
| 221 | Sunaina | Upmanu | Aadi | 22.11.93 | 5'1" | M. Sc | Pursuing BEd | | A.K Agnihotri | Shahjahanpur | 9458323288 |
| 222 | Surbhi | Kaushik | Madhy | 31.07.89 | 5'2" | B. Pharma | Pharma | Amravati | S Kauskiya | Amravati | 8411837994 |
| 223 | Surbhi | Kashyap | Aadi | 29.08.90 | 5'4" | BDS, MPH | Associate | Puducherry | Sudha Dixit | Ujjain | 9826816266 |
| 224 | Swapna | Shandilya | Madhy | 02.12.89 | 5'2" | MBA | | | P.D.Dixit | Indore | 9425152103 |
| 225 | Swarnim | Upmanu | Madhya | 27.07.92 | 5'6" | B.B.A, MBA | Working | All over India | P Bajpai | Kanpur | 9889613890 |
| 226 | Swati | Bhardwaj | | 20.06.89 | 5'6" | MA.M.PHIL | Studying | | A.C.Shukla | Kanpur | 9415428625 |
| 227 | Swati | Shandilya | Antya | 1.1.86 | 5'4" | B.SC.MBA | MNC | Bengaluru | B.L.Mishra | Bhopal | 9826277688 |
| 228 | Swati | Vashisht | | 28.03.91 | 5'2" | B Tech | Asst. Manager | Noida | Sharma | Noida | 9873714437 |
| 229 | Urvashi | Upmanu | Antya | 05.10.91 | 5'4" | M.Com | Govt Serv | | D K Dubey | Gwalior | 9826258558 |
| 230 | Vaishnavi | Upmanu | Aadi | 25.11.91 | 5'6" | B Tech MBA | Job | Banglore | V K Trivedi | Kanpur | 9935393499 |
| 231 | Vandana | | Aadi | 03.11.83 | 5'3" | MA, Bed | Principal | Ghaziabad | D Mishra | Delhi | 9268332289 |
| 232 | Vartika | Upmanu | Antya | 13.12.90 | 5'2" | BCA, MBA | Working | Lucknow | S Dubey | Lucknow | 9335907020 |
| 233 | Vasundhar | Bhardwaj | | 10.10.91 | 5'7" | MBA | HR Manager | Delhi | B P Shukla | Delhi | 7869114109 |
| 234 | Vasvi | | | 13.10.93 | 5'1" | BSC | Working | Raipur | V K Mishra | Jabalpur | 8269671144 |
| 235 | Vidya | Katyan | Antya | 04.01.85 | 5'2" | M.A.B.ED.TET | | | K.K.Mishra | Kanpur | 9792180122 |
| 236 | Yamini | Bhardwaj | - | 01.11.95 | 5' | MBA | HR Mgr | Kanpur | S K Pandey | Kanpur | 9451283887 |

आप भी अपने पुत्र/ पुत्री की जानकारी इस स्तम्भ के माध्यम से देना चाहते हैं, तो हमें निर्दिष्ट प्रारूप के साथ ई-मेल/ क्वाट्सअप करें या पत्र लिखें। ई-मेल kkmanch@gmail.com/ 9310111069

भारतीय लोककथा के आधार पर नारी प्रकृति की पुत्री है और इसी कारण सुन्दरता तथा कोमलता प्रथम उपहार के रूप में प्रकृति की ओर से प्राप्त उसकी चिर संचित निधि है। लोककथा के अनुसार नारी की आकृति इस प्रकार बताई गई है। “मुख चन्दमा के समान गोल, पुष्पों की नवोदित कलिका के समान कोमल, हिरन के समान सुन्दर नेत्र, सूर्य की प्रखर किरणों के समान तेजस्विनी, मधु मक्खियों के समान गुंजन से परिपूरित, कोकिल कंठी, वायु के समान चंचल, हिम के समान शीतल तथा तिरस्कृत होने पर शिला के समान कठोर, आदि आदि।”

21 नवम्बर। इन्दौर के शालीमार पालम्स में कान्यकुञ्ज मंच द्वारा आयोजित गोष्ठी के मुख्य अतिथि कान्यकुञ्ज विद्याप्रचारिणी सभा के स्वमान्यदन्य अध्यक्ष पं विष्णुप्रसाद शुक्ल 'बड़े भड़ा' ने समाज को सही दिशा में उत्प्रेरित करने में पत्रिका के योगदान की सराहना की। बड़े भड़ा ने कहा कि ब्राह्मणों ने समाज को जितना दिया है उसके एवज में कभी अपेक्षा नहीं की। श्री शुक्ल को उनकी संगठनक्षमता, उदारता, निस्फृह समाजसेवा तथा जातीयप्रेम के लिए 'कान्यकुञ्ज-गौरव' सम्मान से अलंकृत किया गया।

दूरदर्शन से सेवानिवृत्त निदेशक डॉ मुकेश दुबे ने कहा कि सभी को साथ लेकर न चलने के कारण ब्राह्मणर्व समाज में उपेक्षित होता जा रहा है। बड़े-बड़े समारोहों-सम्मेलनों और आयोजनों के साथ छोटी-छोटी विचार-गोष्ठियों की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। कान्यकुञ्ज ब्राह्मणों के उद्घाटन, उसकी शाखाओं की जानकारियां नई पीढ़ी तक पहुँचनी चाहिए। उदारवाद की आंधी में कान्यकुञ्जियत बरकरार रखना एक चुनौती बनता जा रहा है। कान्यकुञ्ज मंच पत्रिका प्रकाशन के साथ विचार-गोष्ठियों की श्रंखला को भी जारी रखे। एक केंद्रीय नेतृत्व न होने की वजह से संगठन का वास्तविक रूप नहीं बन पा रहा है। एक ही जिले में कई-कई संगठनों का होना ठीक नहीं है। कान्यकुञ्ज समाज के हर व्यक्ति, हर वर्ग को यह ध्यान हो कि सुख-दुख में हमारे पीछे हमारा समाज खड़ा है। इस दिशा में बड़े भड़ा के नेतृत्व में इन्दौर के कान्यकुञ्ज समाज एक उदाहरण है।

राजकीय पॉलिटेक्निक के प्रवक्ता डॉ नीरज दीक्षित का कहना है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कान्यकुञ्ज युवाओं की रुचि या तो कम होती जा रही है या ऊँचे पैकेज के लोभ में वे प्राइवेट नॉकरियों की तरफ आकर्षित हो रहे हैं। प्रशासनिक क्षेत्र की तरफ उनको प्रोत्साहित करने की जरूरत है। डॉ दीक्षित ने ब्राह्मण युवाओं के आत्मकेंद्रित होते जाने पर भी चिंता व्यक्त की। शैक्षिक, व्यवसायिक व अर्थिक क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने के साथ हमें अपनी जड़ों से जुड़कर रहना होगा।

श्री आर के शुक्ल ने कान्यकुञ्ज परिवारों के आपसी जुड़ाव को संगठन के लिए उपयोगी बताते हुए शिखा-सूत्र-तिलक की पहचान को बरकरार रखने पर जोर दिया। पं गायत्री प्रसाद शुक्ल ने



विष्णु भड़ा द्वारा इन्दौर के कान्यकुञ्ज संगठन को ऊचाइयों तक पहुँचाने में उनकी सबको साथ लेकर चलने वाली कार्यशैली का खाका प्रस्तुत किया। पं शुक्ल द्वारा भगवान परशुराम पर सुनाई कविता-

'ब्रह्मशक्ति बन्धुओं समय को लीजै जान,
मुझ्ये तन के बांधिए तज के निज अभिमान।
विप्रजन सब एक हैं ऋषियों की संतान,
कोऊ ऊंच न नीच है सब हैं एक समान।'

जय जय जय परशुराम....'

वरिष्ठ साहित्यकार पं हरेराम वाजपेयी ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्रीरामचरितमानस के प्रसंगों को उद्घाट करते हुए सामाजिक-पारिवारिक-सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना में ब्राह्मणों तथा ब्राह्मण संगठनों को आगे आने का आव्हान किया। श्री वाजपेयी ने कहा कि देश को दुनिया के साथ चलना चाहिए लेकिन अपनी पहचान बरकरार रखते हुए।

गोष्ठी में कवि अशोक द्विवेदी के काव्य-पाठ ने चिंतन-मनन की राह बताई। पत्रिका के सम्पादक आशुतोष पाण्डेय ने देश में एक केंद्रीयकृत संगठन होने की बात कही। कान्यकुञ्ज विद्याप्रचारिणी सभा के उपाध्यक्ष अनूप वाजपेयी, अजय दीक्षित, अक्षत पाण्डेय ने भी चर्चा में भाग लिया। ब्राह्मण संसार के प्रदेश अध्यक्ष पं रामचन्द्र दुबे ने उपस्थित महानुभावों के प्रति आभार प्रदर्शित किया। □



माध्यम से संस्था लक्ष्योन्मुख है। इन्दौर, देवास, शाजापुर, उज्जै, ग्वालियर, खरगोन, खण्डवा आदि शहरों में ब्राह्मण-संसार की शाखाएं कार्यरत हैं। □

ब्राह्मण-संसार की मप्र इकाई

ब्राह्मण-संसार मध्यप्रदेश इकाई के अध्यक्ष पं रामचन्द्र दुबे एवं महामंत्री बृजेश शुक्ल के सत्रयासों से संस्था का निरंतर संगठनात्मक विस्तार होता जा रहा है। ब्राह्मणों के विभिन्न वर्गों-उपवर्गों में समन्वय स्थापित करने, ब्राह्मणों की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनर्स्थापित करने, परस्पर सहयोग व सद्बद्धावना विकसित करने, वर-बधू खोज में सहायता करने, युवाओं को संस्कारित करने तथा रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने आदि सदुदेश्यों के साथ राज्य, जिला, शहर, ग्राम-पंचायत स्तर तक ब्राह्मण-जागरण की अलगत जगाने में प्रदेश अध्यक्ष पं रामचन्द्र दुबे प्राणपण से जुटे हुए हैं। युवा एवं महिला प्रकोष्ठों के

कोरोना संक्रमणकाल में मेघदूत ग्रामोद्योग के राहत कार्य

कोविड 19 के आपदाकाल में आयुर्वेदिक दवाइयों के उत्पादक मेघदूत ग्रामोद्योग सेवा संस्थान द्वारा अपेक्षितों की सहायता में किये गए राहतकार्यों को भुलाया नहीं जा सकता। लखनऊ व उपर के अन्य जिलों में फेस मास्कों व सेनिटाइजर्स का भारी मात्रा में निःशुल्क वितरण, जनजागरण अधियान के साथ 5 लाख रुपये की धनराशि मुख्यमंत्री राहत सहायता कोष में एवं 5 लाख रुपये की धनराशि प्रधानमंत्री राष्ट्रीय राहत कोष के लिए दी। मेघदूत संस्थान के प्रबन्धनिदेशक श्री विमल शुक्ल ने बताया कि कोविड 19 एक अप्रत्याशित वैश्विक आपदा के रूप में आया है। इस आपदाकाल में हर नागरिक को अपनी सामर्थ्य अनुसार अपेक्षित वर्ग की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए कम दाम में मिलने वाला मेघदूत संस्थान का इम्युनिटी पैक लोगों का रक्षकवच बना हुआ है। चित्र में उपर के महामहिम राज्यपाल आनन्दीबाई पटेल को चेक सौपते हुए श्री विमल शुक्ल।



अनूप शुक्ल को 'गुण-गौरव' सम्मान

पिछले दो दशक से कानपुर के इतिहास को संजोने-सँवारने में संलग्न, कानपुर इतिहास समिति के सचिव, साहित्यकार पं अनूप शुक्ल 'गुण-गौरव' सम्मान से समादृत किये गये। 23 नवम्बर, 2020 को कानपुर की साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्था 'विकासिका' द्वारा आयोजित 'गुण-गौरव सम्मान समारोह' की अवध्यक्षता करते हुए ई. कृष्णाकान्त अवस्थी ने बताया कि पं अनूप शुक्ल वैदिक काल से लेकर मध्यकाल, मुगलकाल व ब्रिटिश काल में कानपुर की शासन व्यवस्था, साहित्यिक-सांस्कृतिक व सामाजिक घटनाक्रमों, लोक-संस्कृति, पुरातत्व-अवशेषों, औद्योगिक विकासक्रम आदि के शोध-अन्वेषण में सतत प्रयासरत हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके लेखों एवं सोशल मीडिया से प्राप्त अद्भुत जानकारियों से पाठक हतप्रभ व लाभान्वित होते हैं। कानपुर देहत के ग्राम मैथा में जन्मे अनूप पिछले कई वर्षों से 'मातृ स्थान' पत्रिका का सम्पादन भी कर रहे हैं। कानपुर से जुड़े विलक्षण और अनछुप परिदृश्यों की जानकारियां इतिहास की थाती बनती जा रही हैं।



कान्यकुञ्ज मंच

'विकासिका' के संयोजक डॉ विनोद त्रिपाठी द्वारा ऐसी शख्शियतों को सम्मानित करने की योजना प्रणाली व सराहनीय है। समारोह में सुप्रसिद्ध गजल गायक प्रदीप श्रीवास्तव तथा शिल्पकार गोपाल खन्ना को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ कमलेश द्विवेदी ने किया।

देवारा समाज में 'अटल-जयंती'

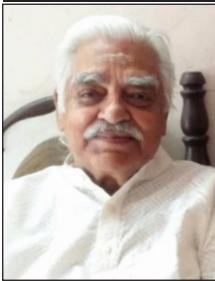
श्री कान्यकुञ्ज ब्राह्मण समाज देवास द्वारा दिनांक 25-12-2020 शुक्रवार को पं. अटल बिहारी जी बाजपेयी जी का जन्मदिन



गीता भवन के सामने श्री चन्द्रकान्त दीक्षितजी सरंक्षक के निवास पर मनाया गया। मुख्यअतिथि के रूप में कान्यकुञ्ज मंच पत्रिका के सम्पादक आशुतोष पाण्डेय जी का अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम में कान्यकुञ्ज समाज के अध्यक्ष पं. धर्मेन्द्र मिश्र ने 34 वर्षों से नियमित प्रकाशित कान्यकुञ्ज मंच पत्रिका को ब्राह्मण समाज व संगठन के लिए एक उपयोगी बताते हुए कहा कि ब्राह्मण संस्कृति, गौरवशाली अतीत, सामाजिक-परिवारिक व सांस्कृतिक मूल्यों की पक्षधर मंच ब्राह्मण समाज की प्रतिनिधि पत्रिका के रूप में स्थापित है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. रूपनारायण तिवारी ने किया तथा आभार प्रदर्शन पं. धर्मेन्द्र मिश्र द्वारा किया गया।

स्मृतिशेष

राहुदय पं रजनीकांत पाण्डेय



हमारे श्वसुर पं रजनीकांत पाण्डेय गोलोकवासी हो गए। 83 वर्ष की उम्र में 11 सितम्बर 2020 को प्रातः 4.30 पर उन्होंने कानपुर में स्वरूपनगर स्थित अपने निवास पर अंतिम सांस ली।

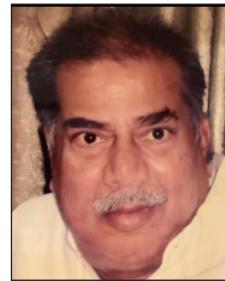
कन्नौज जनपद (पड़ियाना) के स्व अयोध्याप्रसाद पाण्डेय (आत्मज पं लाडलोप्रसाद पाण्डेय) का कानपुर में

पेट्रोलपंप, सिनेमाहॉल, मोरिस कार की एजेंसी आदि खासा व्यवसाय था। पत्नी की बीमारी के चलते सारा व्यापार ठप्प हो चला। स्व अयोध्याप्रसाद के चार पुत्रों रजनीकांत, नलिनीकांत, मोहनीकांत, उमाकांत व पुत्री मीरा (पत्नी- पं ब्रजेश कुमार मिश्र) में रजनीकांत जी सबसे बड़े थे। रजनीकांत को पितामह स्व लाडले प्रसाद पाण्डेय की चित्रकारी कला प्रतिभास्वरूप प्राप्त हुई। भारत सरकार रक्षामंत्रालय के उपक्रम सीआईजीएस में सेवा करते हुए उमा ब्रदर्स के नाम से फर्म स्थापित की। प्राणिविज्ञान व जंतुविज्ञान के छात्रों, शोधकर्ताओं में उनके बनाये दुर्लभ प्रोट्रेट्स की मांग रहती। उनके लगान और परिश्रम ने शून्य से शिखर तक की यात्रा की। वह नीति मान थे। संकल्प की एकाग्रता, शांतचित्तता, व्यवहार की शुद्धता और गंभीरता इन सब मानवोचित गुणों का उनमें सम्बन्ध था। सम्बन्धों की ऊषा के महत्व को जानने वाले शवसुर जी ने पारिवारिक दायित्वों का कुशलता से निर्वहन किया। खजुहां के सांकृत गोत्रीय कीर्तिशेष पं श्रीराम सुकुल की आत्मजा श्रीमती प्रभा पाण्डेय से विवाहित इस दम्पति ने अपनी संतानों को उच्च शिक्षा के साथ ब्राह्मण संस्कारों की भरपूर खुराक दी। पुत्र डॉ आलोक पाण्डेय कानपुर डीएवी कॉलेज में जंतुविज्ञान के प्रोफेसर हैं। इलाहाबाद हाईकोर्ट के नामी बकील पं महेशचन्द्र द्विवेदी की आत्मजा श्रीमती शुभा से विवाहित आलोक के सुपुत्र चि शाश्वत दुर्बृद्ध में इंजीनियर हैं। पुत्री आस्था कैलिफोर्निया की एक लॉ फर्म में सेवारत हैं। बड़ी पुत्री श्रीमती अलका दीक्षित (पत्नी श्री हरीश दीक्षित, सेवानिवृत्- वनविभाग) तथा छोटी श्रीमती अर्चना मिश्र (पत्नी- श्री श्याम मिश्र) इंदौर में अपने पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। पितामह शवसुर जी का यूं चले जाना हमारे परिवार के लिए विशेष का कारण बना। वे हमारे बृहत परिवार के संरक्षक-सलाहकार थे। पांडित्य की दृष्टि से वह उस परंपरा के गौरव संतं थे, जिन्होंने पुरखों की थाती को सजों कर रखा था।

‘वह जवां न रही वो जहन न रहा,
वह बयां न रहा वह सखुन न रहा।’ □

- श्याम मिश्र, इंदौर

उदारमना काशीनाथ पाण्डेय



प्रतिष्ठ व्यवसायी, सनातन धर्म और संस्कृति के ध्वजारोहक उदारमना पं काशीनाथ पाण्डेय मर्त्य लोक की सीमाओं के ऊपर उठकर ज्योतिर्मय शून्य में अंतर्लीन हो गये। ईश्वर के प्रति आस्थावान 70 वर्षीय इस महामानव ने 27 दिसम्बर, 2020 को 29 डॉ आशुतोष शास्त्री लेन,

कोलकाता के निज निवास में अंतिम सांस ली। बड़ीगाँव, रायबरेली के भरद्वाज गोत्रीय काशीनाथ जी के पुरुषार्थ का प्रतीक कोलकाता व देश के अन्य प्रांतों में व्यवसाय का खासा साम्राज्य है। उनका मानना था, ‘भौतिक दृष्टि से संपत्र और मानसिक-आध्यात्मिक दृष्टि से रिक्त अकिञ्चन मनुष्य संभवतः मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं हो सकता।’ उनके असंभावित देहावसान ने असंख्य लोगों के हृदयों पर शोक की एक गंभीर यवनिका डाल दी। कलकत्ता कान्यकुञ्ज समाज के ट्रस्टी व उत्तरप्रदेशीय देशबारी समाज के संरक्षक रहते हुए उन्होंने समाज के उपेक्षित वर्ग की भरपूर सेवा-सहायता की। कितनी ही निराश्रित विधवाओं को लागत से भी कम मूल्य पर आवास-व्यवस्था उपलब्ध करवाई। प्रतिदिन प्रातः काल वह नियमित रूप से निष्ठापूर्वक संध्या वंदन तथा गायत्री का जाप किया करते थे। पिछले 20 वर्षों से अनवरत माघ मास में प्रयाग के संगम तट पर साधु-सन्नायियों व जरूरतमंदों को भोजन-वस्त्र उपलब्ध कराने में उन्हें आत्मसंतोष मिलता। सम्बन्धों व रिश्तों की गरिमा जानने वाले पाण्डेय जी अपनी अतिव्यस्तता के बावजूद सर्वसुलभ थे। गंगासागर सेवा शिविर हो, प्राकृतिक आपदा हो, सहायता शिविर हो सामाजिक कार्यों में इनकी उदारता देखते बनती। कोरोनकाल में भी इनकी अंतिम यात्रा में कोलकाता के प्रबुद्धजनों की भारी उपस्थिति पाण्डेय जी की सर्वप्रियता सिद्ध करती है। ‘सबके प्रिय-सबके हितकारी’ कीर्तिशेष पाण्डेय जी के जीवनकाल की अनुगामिनी रहीं धर्मनिष्ठ पत्नी श्रीमती निर्मला, पुत्र नवनीत व अक्षत, पुत्रवधु श्रीमती रुचि व श्रीमती शिल्पी तथा पौत्र रघव व तक्षय, पौत्रियाँ आकृति व विधिश्री को ही नहीं पाण्डेयजी के वियोग की त्रासदी झेलनी पड़ेगी, बल्कि उनके नाते-रिश्तेदारों-सम्बन्धियों-मित्रों, समाज में उनके व्यक्तित्व की छाया का अभाव वर्षों तक सालता रहेगा। इस शून्यता की भरपाई निकट सम्भव नहीं। विधि के आगे नतमस्तक होना हमारी विवशता है। श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धांजलि। □

-अवधेश अवस्थी, कानपुर

धर्मनिष्ठ श्रीमती शंकरकला तिवारी



ग्राम निगोहा जनपद लखनऊ की धर्मनिष्ठ वृद्धा श्रीमती शंकरकला (पल्ली स्मृतिशेष सुदामा प्रसाद तिवारी) का घटाकाश महाकाश में बिलीन हो गया। 14 दिसम्बर, 2020 (मार्गशीष कृष्ण अमावस्या) को प्रातः 4 बजे वे बैकुंठथाम को सिधार गईं।

ग्राम दखना के उपमन्यु गोत्रीय स्व बलभद्र दुबे की आत्मजाद्वय श्रीमती चंद्रकला और श्रीमती शंकरकला निगोहा के स्वामान्यथन्य कीर्तिशेष पं सत्यनारायण तिवारी के आत्मजाद्वय स्मृतिशेष पं बनवारीलाल व स्मृतिशेष पं सुदामा प्रसाद के घर जेठानी-देवरानी बनकर आईं थीं। उनके विवाह की कुँवर-कलेवा की स्मृति आज भी बरकरार है। संयोग कहिए आज से 15 वर्ष पूर्व 2005 की मार्गशीर्ष पूर्णिमा को बड़ी भौजाई श्रीमती

चन्द्रकला का गोलोकवास हुआ था और मार्गशीर्ष अमावस्या को उनकी छोटी बहन-देवरानी श्रीमती शंकरकला का। तिवारी परिवार की मर्यादा को बनाने-सँवारने, संस्कारित करने में दोनों भौजाई ने कोई कोर-कसर नहीं रखी। चौके-चूले की शुद्धता, बड़ों का यथोचित सम्मान, अतिथ्य-सत्कार परिवार की विशेषता है। स्मृतिशेष छोटी भौजाई श्रीमती शंकरकला को अपने गांव व अपने ठाकुर जी से असीम लगाव रहा। उनको सर्दी लगती तो पहले ठाकुर जी गर्म कपड़े पहनते, गर्मी के दिनों में घण्टों पंखा झलती रहती। क्षय रोग से पीड़ित छोटी भौजाई का उपचार करने का सौभाग्य मेरे पिता व लखनऊ के प्रतिष्ठ सर्जन रहे स्मृतिशेष डॉ कालीशंकर तिवारी को मिला। अपने भतीजों-भतीजियों व पोते-पोतियों पर स्नेह-ममता लुटाने वाली छोटी भौजाई का 'बच्चा-बच्चा' सम्बोधन वात्सल्य से सराबोर होता। जीवन के नॉ दशक बिताने वाली छोटी भौजाई की सेवा-सुश्रुषा करने कुछ समय पूर्व उनके भ्रातृज लक्ष्मीकान्त तिवारी अपने साथ कोलकाता ले आये थे। वही भरेपूर परिवार की उस पीढ़ी की अंतिम मुखिया चल बसीं। निश्चय ही उनके आशीष तिवारी परिवार का सतत सम्बल बने रहेंगे, परमपिता से प्रार्थना है। विनप्र श्रद्धांजलि। □

- कर्नल धर्मदेव तिवारी

'कान्यकुञ्ज मंच' पत्रिका के मंच से स्वर व संगीत दिया था डॉ कुसुम पाण्डेय व उनके शिष्यों ने। सांसद सत्यदेव पचौरी, डॉ आई एन वाजपेयी, उपकुलपति विनय पाठक की समुपरिस्थिति में उनको सार्वजनिक रूप से समादृत किया गया था। 'कान्यकुञ्ज मंच' के अगले कार्यक्रम में लोकसंगीत की प्रस्तुति देने के लिए शुक्लजी ने अपनी वचनबद्धता जाहिर की थी। कोविड 19 के चलते ऐसा सम्भव नहीं हो सका। हमारी साध और उनकी वचनबद्धता उनके जाने के साथ ही धरी रह गयी। बीमारी किसी की उम्र नहीं देखती। उनके यूँ चले जाने का दुख है। उनके परिवार को इस विषम परिस्थिति में धैर्य और साहस बनाये रखने की परमपिता से विनती है। भावपूर्ण श्रद्धांजलि। □

लोकसंगीतज्ञ पं लक्ष्मी शंकर शुक्ल



4 नवम्बर, 2020। सांकृत गोत्रीय खजुहा निवासी संगीत साधक पं लक्ष्मी शंकर शुक्ल दिवंगत हुए। भजन, गजल, गीत और खासकर लोकगीतों के गायन में सिद्ध इस कलाकार को इसी वर्ष 'संगीत-रत्न' के राजकीय सम्मान से नवाजा गया था। एक वर्ष भी नहीं हुआ 24 नवम्बर 2019 को कीर्तिशेष बालकृष्ण पाण्डेय स्मृति सम्मान समारोह, कानपुर में उनके लोकगीत को

भाई विमलप्रकाश त्रिपाठी



6 अक्टूबर, 2020। भाई विमलप्रकाश त्रिपाठी नहीं रहे। कीर्तिशेष पं गोरेलाल त्रिपाठी के मझले पुत्र थे। हमारे परिवार का उनके परिवार से न सिर्फ पारिवारिक सबन्ध था बल्कि भाई विमल हमारे सहपाठी भी रहे हैं। 1973-75 ज्ञानभारती एम एस इंटर कॉलेज में इंटरमीडिएट में दैनिक जागरण व दैनिक

ट्रिब्यून के सम्पादक रहे वरिष्ठ पत्रकार स्मृतिशेष सन्तोष तिवारी, आयुर्वेदाचार्य कीर्तिशेष बद्रीविशाल त्रिपाठी के पौत्र व स्मृतिशेष रमेशचन्द्र त्रिपाठी के आत्मज ज्ञानप्रकाश त्रिपाठी आदि की मित्रमण्डली कॉलेज में चर्चित थीं। भाई विमल पिछले कुछ वर्षों से अस्वस्थ चल रहे थे। उनके बड़े भाई डॉ विजय प्रकाश त्रिपाठी (सम्पादक- जयतु हिन्दू विश्व) से उनकी अस्वस्था की जानकारी मिलती रहती थी। छोटे भाई वरिष्ठ पत्रकार विष्णु प्रकाश त्रिपाठी दैनिक

कान्यकुञ्ज मंच

जागरण (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) के सम्पादक हैं। देवनगर, कानपुर के इस त्रिपाठी परिवार की प्रतिष्ठा है। भाई विमल का यों चले जाना अच्छा नहीं लगा। विधि के आगे न तमस्तक हूँ। ताउम्र सादगी, उद्देश्यपूर्ण व समर्पित जीवन रहा उनका। □

डॉ मोहनलाल त्रिपाठी भी नहीं रहे



12 नवम्बर, 2020। कानपुर के लोकप्रतिष्ठ चिकित्सक रहे डॉ मोहनलाल त्रिपाठी नहीं रहे। हम लोगों का शिशु व बाल जीवन उनकी चिकित्सकीय देखेरेख में गुजरा। मेरे अग्रज विष्णु पाण्डेय के शिशुकाल में गम्भीर अस्वस्थता पर अम्मा-चाचा (पिताजी) रिक्शे में कोपरांज स्थित चाचा नेहरू बाल चिकित्सालय में उनकी अनुशंसा में लेकर ही गए थे। 1960 के दशक में डॉ एम एल त्रिपाठी, डॉ रमेश निगम, डॉ दत्ता किंदवर्ज नगर के मुख्य चिकित्सक हुआ करते थे। गौर वर्ण, लम्बा कद, एकहण बदन, स्वभाव से अति मधुर, मीठी बोली आज भी स्मृतिपटल पर है। सम्भवतः 90 वर्ष के रहे होंगे। स्मृति को श्रद्धा नमन। □

- आशुतोष

हमारे नये सहयोगी

संरक्षक

- पं. ब्रह्म प्रकाश अवस्थी, सिविल लाइंस, उन्नाव
 - स्वाति त्रिपाठी, कैलिफोर्निया यूएसए
 - शर्मिष्ठा - गौरव त्रिपाठी, रॉटर्डैम, द निदेरलैंडस
- ## विशिष्ट
- पं कृष्ण कुमार वाजपेयी, नौबस्ता, कानपुर
 - पं नीरज मिश्र, प्रमोद रसायनशाला, गांधीनगर, कानपुर
 - पं हरेराम वाजपेयी, हिन्दी परिवार, इन्दौर
 - डॉ मुकेश दुबे, रेडियो कॉलोनी, इन्दौर
 - पं सुभाष तिवारी, उपाध्यक्ष, ब्राह्मण समाज ऑफ इंडिया

आजीवन

- पं रामचन्द्र दुबे, सुखलिया, इन्दौर
- डॉ नीरज दीक्षित, चिदावद, इन्दौर
- डॉ योगेन्द्र नाथ शुक्ल, सुदामा नगर, इन्दौर
- पं दुर्गा नारायण तिवारी, बिजासन रोड, इन्दौर
- पं गायत्री प्रसाद शुक्ल, सांवरे रोड, इन्दौर
- पं चन्द्र प्रकाश दुबे, विजय नगर, इन्दौर

इस सूची में आपका नाम भी जुड़ने की प्रतीक्षा है।

पत्रिका हेतु सहयोग राशि 'संपादक-कान्यकुञ्ज मंच' के पक्ष में बैंक ऑफ बड़ोदा की सीबीएस शाखा में IFSC:BARB0KIDKAN में जाकर हमारे खाता संख्या 19640100008057 में जमा कर इसकी सूचना पूरा नाम पता व पिन कोड सहित मोबाइल 09450332385 पर एसएमएस द्वारा या पत्रिका के ईमेल पर दें।

संरक्षक: ₹11000 ● विशिष्ट: ₹5100 ● आजीवन: ₹2100
\$200 \$100 \$40

पत्रिका प्राप्ति स्थान

कानपुर - गुप्ता मैगजीन सेंटर, एलआईसी बिल्डिंग के सामने, फूल बाग चौराहा, कानपुर। मो.-8896229786
- पाण्डेय बुक सेलर, के-व्लॉक, निकट आरबीआई कॉलोनी, किदवर्ड नगर, कानपुर। मो.-9336121757
- कृष्णा फार्म सेंटर, निकट साकेत गेस्ट हाउस, विकास नगर, कानपुर। मो.-9336029994

लखनऊ - शुक्ल मैगजीन सेंटर, हनुमान के निकट, हजरतगंज, लखनऊ। मो.-9473897006
- 1/208, विकास नगर, लखनऊ। मो.-9554096508
- 3/19 सेक्टर-जे, जानकी पुरम, लखनऊ। मो.-9450362385

नोएडा - शुक्ला मैगजीन सैंटर, ब्रह्मपुत्र कॉम्प्लेक्स, सेक्टर 29, नोएडा। मो.-9210135448
दिल्ली - तिवारी ब्रादर्स, 73, एमएम मार्केट, कनॉट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन-011 23413313-23411764
भोपाल - श्री के.एन. मिश्र, 58, सागर स्टेट कॉलोनी, अयोध्या नगर, भोपाल-462041, मो.-7224882166
इंदौर - श्री दुर्गानारायण तिवारी, 33, बिजासन रोड, इंदौर-452005, मो.-9827791616
इंदौर - श्री रामचन्द्र दुबे, सी/एम, 112 आई, दीनदयाल उपाध्याय नगर, सुकिलया, इंदौर-452010, मो.-9098902326
फरीदाबाद - 264, सेक्टर-3, फरीदाबाद 121004, मो. 8800377066

NA

प्रकाश-दिवस की लख-लख बधाईयां



NIRMANIE ASSOCIATES

We are engaged in Business of machinery manufacturing, designing & work simplification Projects.

we believe in Teamwork, through which we have completed various projects within the stipulated time frame.

Ours is a Faridabad, INDIA based Registered Company having well qualified Staff & dedicated work force.

We have multi skilled work force dealing in all sorts of Tool room jobs, Import Substitution, fabrication Work, modification of Machines etc.

Our Most Valuable Customer-

1. M/s Goodyear India Ltd., Ballabgarh, India
2. M/s Whirlpool of India, Faridabad, India
3. M/s Escorts Rly Equipment Division, Faridabad, India
4. M/s South Asia tyres India Pvt. Ltd. Aurangabad, Maharashtra, India
5. M/s Tulip India Pvt. Ltd., U.P., India
6. M/s Balkrishana Industries Ltd., Mumbai (all three plants), India
7. M/s JK Tyre Ltd., Kankroli, Rajasthan, India
8. M/s Ceat Tyre, Bhandup & Nashik, India
9. M/s Birla Tyre Ltd., Orrissa, India
10. M/s JK Tyre Ltd., Banmore, M.P., India
11. M/s Goodyear Thailand Plant, Bangkok, Thailand (OVERSEAS CUSTOMER)
12. M/s Continental Tires, Meerut Plant, UP, India
13. M/s JK Tyre Ltd., Laksar, Haridaar, Uttarakhand, India

J.S. Kabli (Proprietor)

**Works : Plot No. 30, Division No. 6,
Wear Well Cycle Industrial Area,
N.I.T. Faridabad -121001**

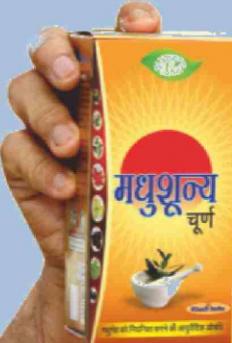
**Phone: (O) 0129-4023980, Mob: 9810073980
Email: jasbirskabli@gmail.com, jasbirskabli@airtelmail.com**

जनवरी-मार्च 2021

RNI: 46226/87



डायबिटीज
की अब
फिक्र नहीं!



डायबिटीज कब्ज़ोल करने की
आयुर्वेदिक औषधि



मेघदूत मधुशून्य चूर्ण व टेबलेट

यह औषधि मधुमेह को नियंत्रित करने के साथ ही अनियमित रक्तचाप और हृदय दुर्बलता को नियंत्रित कर शरीर में स्फूर्ति प्रदान करता है।

तुलसी, गुडमार, सिलाजीत, अश्वगन्धा, नीम, जामुन, करेला आदि शुद्ध जड़ी-बूटियों से निर्मित।

मेघदूत के सभी उत्पाद समस्त गांधी आश्रम, खादी भंडार एवं मेघदूत स्वदेशी ग्रामोद्योग भंडार व उत्तर प्रदेश के समस्त डाकघरों में उपलब्ध है।
मेघदूत स्वदेशी ग्रामोद्योग भंडार खोलने के लिए सम्पर्क करें—9005455777

✉ www.meghdootherbal.com | Helpline : +91- 9235623142

AVAILABLE ON: